

स्व. श्रीमती सूरज देवी डागा
(धर्मपत्नी स्व. श्री चम्पालाल जी डागा)

किस रूप तुम्हें पायें मातुश्री, तुम लोक आलौकिक में राजे,
जो कुछ है यहाँ सब कृपाधन का, जो विकीर्ण है सुगन ताजे ॥

-जयचंदलाल डागा
एवं समस्त डागा परिवार

प्रकाशकीय

भक्ति गीत आन्तरिक श्रद्धा भक्ति की अभिव्यक्ति का सबल साधन है। जहॉ जीवन मे पवित्रता, माधुर्यता एव समता भावो का अवतरण करना भक्ति गीतो का मुख्य उद्देश्य होता है, वहॉ आत्मानन्द एव आत्म शान्ति की प्राप्ति का माध्यम भी ये भक्ति गीत होते है।

इस विश्व मे हर व्यक्ति का अपना कोई आराध्य होता है, जहॉ उसकी समग्र आस्था उन्हे प्रणाम करती है। आराध्य उपासना ही उनके जीवन के सुखद क्षण होते हैं।

निसर्ग में ही संतोष की श्वास लेने वाला मेरा मन वात्सल्य विभूति निर्मल यशस्विनी महाश्रमणी रत्ना पूज्या श्री इन्द्रकवर जी म.सा जिनके अनुशासन, अन्तर वात्सल्यता, शासननिष्ठा, हुक्म संघ की यश कीर्ति प्रसारण मे दक्षता आदि दिव्य सद्‌गुणो से प्रभावित बना अनवरत सान्निध्य पाता रहा और उनसे यथाप्रसग अपने अनन्याराध्य हुक्म सघ के नवोदित साधना सूर्य, प्रशातमना आचार दृढता सयम एव सादगी के प्रतीक नानेश पट्टधर आचार्य श्री रामेश, जिन्हे प्रारंभ मे कोई समझ नही पाया कि ''ये महापुरुष किस अक्षय साधना से अपनी आत्मा को साधित कर रहे है ? उस दीपक मे किस प्रकार अमूल्य शिक्षामृत रूपी स्नेह (तेल) जा रहा है जिससे वह दीप अपनी सेवा विनय एवं समर्पण की वर्त्तिका से आचार्य श्री नानेश की अन्तर्मुखी साधना मे समा गया।'' तत्सबंधित यशस्वी जीवन-वृत्तो को सुन-सुनकर मेरे भीतर आचार्य

भगवन् श्री रामेश के प्रति पूर्व से ही जो गहरी श्रद्धा का आलोक जगमगा रहा था, वह और अधिक श्रद्धा से दीप्त हो उठा। वस्तुत इस दीप को प्रज्वलित होते ही अनवरत संघर्षो का सामना करना पडा। जैसे सोना आग मे तपकर कुंदन होता है, वैसे ही मनस्वी संघर्षो मे स्थितप्रज्ञ बन जन-जन के आस्था केन्द्र प्रतिपल वंदनीय अर्चनीय बनते हैं। सागर सी गहराई लिए हुए, भारंड पक्षी वत् अप्रमत्त, यश लिप्सा से अति दूर निष्पृह, निर्लिप्त, निराभिमानी जिनज्ञा मे सर्वस्व समर्पित अपने अनन्याराध्य को शासन-नायक के रूप में पाकर चतुर्विध संघ आज धन्यता की अनुभूति कर रहा है। अन्तर्मन शुभकामना करता है, हमारे आराध्य आचार्य प्रवर रामेश अपना यशस्वी वर्चस्व संघ को प्रदान करते हुए युगों-युगों तक गंध हस्ती की तरह हुक्म शासन का चहुँमुखी विस्तार करें।

मेरे परम पुण्य का उदय महाश्रमणी रत्ना जी म.सा. की अनुग्रह दृष्टि मुझ पर रही है। उसी अनुग्रह का सुप्रतिफल मेरी एवं मेरे परिवार की हुक्म शासन के प्रति गहराती आस्था को सामूहिक अभिव्यक्ति मे लाने हेतु प्रभु भक्ति, गुरु भक्ति, तपस्या के गीतों के साथ विविध भक्तिपरक भक्ति-गीतों को संग्रहित करके श्रद्धालु भक्तजनों के कर-कमलों में वितरित करने की भावना से प्रस्तुत कर रहा हूँ–''श्रद्धा एवं भक्ति की गुंजारव लिए–''भक्ति गीत गुंजार''।

श्रद्धालु भक्तजन जरूर-जरूर लाभान्वित बने, यही शुभकामना है।

–जयचंदलाल डागा

परिचय

श्रद्धानिष्ठ दिलेर व्यक्तित्व सुश्रावक रत्न श्रीमान जयचदलाल जी सा डागा हुक्म संघ के प्रति दृढ श्रद्धानिष्ठ बीकानेर निवासी शासन निष्ठ स्वनाम धन्य श्रेष्ठिवर्य स्वर्गीय श्रीमान चम्पालाल जी सा डागा, स्वर्गीया दृढ श्रद्धाशील सुश्राविकारत्न सूरज बाई डागा (खादी वाला) के अगजात दिलेर व्यक्तित्व, मानवीय सद्गुणो से सम्पन्न सात्त्विक विचार वाले शासन-समर्पित गुरुश्रद्धा से ओत-प्रोत उदारमना है।

सौभाग्यवती सुश्राविकारत्न सौ. राजदेवी सरलमना एक आदर्श गृहिणी होने के साथ-साथ उदारदिल श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका रत्न है। ज्ञान-अभिवृद्धि की ललक आपकी प्रशंसनीय है। वर्तमान मे आप बीकानेर महिला मंडल की उपाध्यक्षा है।

आप चार भाइयो का परिवार है। सबसे बडे भ्राता–स्व सुश्रावक श्रीमान् रामलाल जी सा , दूसरे नम्बर स्व. सुश्रावक श्रीमान सम्पतलाल जी सा , तीसरे नम्बर वर्तमान मे बीकानेर श्री सघ के अध्यक्ष सुश्रावक रत्न श्रीमान सुन्दरलाल जी सा. और आप सबसे छोटे भ्राता है। सभी भाईयो का सघ समाज मे अच्छा वर्चस्व था एव है। आपके 2 सुपुत्र, 1 सुपुत्री नीलम सेठिया-गौतम जी सेठिया एव 2 पुत्रवधूएँ है–युवारत्न बसन्त कुमार जी-सौ प्रीति डागा, युवारत्न विनयकुमार जी-सौ निधि डागा एव 3 बहने है–सौ पेपादेवी नाहटा-श्री भँवरलाल जी नाहटा, स्व सम्पत देवी बैद-स्व रतनलाल जी बैद और सौ

पुष्पादेवी-स्व जतनलाल जी बोथरा। सिद्धार्थ कुमार आपका पौत्र है। सृष्टि, रिद्धम, हर्षा ये तीन पौत्रियॉ है। आपकी बडी पुत्रवधू सौ. प्रीति डागा वर्तमान में बीकानेर बहुमंडल की कोषाध्यक्षा हैं। सम्पूर्ण डागा परिवार में विरासत से प्राप्त उदारता एवं शासन निष्ठा का सद्‌गुण प्रेरणास्पद एवं सराहनीय है।

पुत्र-पुत्रियॉ, पुत्रवधूएँ, पौत्र-पौत्रियों की शालीनता से सुसंस्कारों का परिचय मिलता है।

हुक्म संघ के गौरव नानेश पट्टधर तरुण तपस्वी ब्रह्म तेजस्वी शास्त्रज्ञ प्रशांतमना आचार्य प्रवर रामेश के प्रति परम श्रद्धानिष्ठ जैनत्व के सुसंस्कारों से सुसमृद्ध साधुमार्गी संघ का स्तम्भ स्वरूप यह सभ्य डागा परिवार ''रामेश शासन'' के प्रति पूर्ण समर्पित है।

—अमिताभ नागोरी

अनुक्रमणिका

***

मंत्र जपो नवकार

मंत्र जपो नवकार मनवा, मंत्र जपो नवकार,
पाँच पदों के पैंतीस अक्षर, है सुख के आधार ॥टेर॥

अरिहन्तों का सुमिरण कर ले।
सिद्ध प्रभु का नाम तू जप ले।
आचारज सुखकार मनवा...... ॥1॥

उपाध्याय को मन मे ध्याले।
सर्व साधु को शीष नमा ले।
होवे भव से पार मनवा.... ॥2॥

धन हीन सुख संपत्ति पावे।
मन वांछित हर काम बनावे॥
सुखी रहे परिवार मनवा..... ॥3॥

रोग शोक भय दूर भगावे।
जन्म जरा से पिंड छुड़ावे॥
भव दुःख भंजनहार मनवा.... ॥4॥



मंत्र-परमेष्ठि सुमरियां

तर्ज : आ बावासा री ......

मंत्र परमेष्ठि सुमरियां, भव रा बंधन कटसी रे,
बंधन कटसी शिवपुरी रो शुभ मारग मिलसी रे ॥टेर॥
कलंक लगायो सेठ सुदर्शन पर अभया महारानी रे,
हुक्म लगायो राजा जिण पर, शूली रो दुःख भारी रे,

सेठ सोचे मत्र सुमरिया, विघ्न टलसी रे ॥1॥
मिथ्यामद सु राजा कुष्ठी सग दीनी परणाई रे,
जाण लीला कर्मा री मैना पति सु कहे हरषाई रे,
मत्र सुमरिया कुष्ठ रोग सुं, मुक्ति मिलसी रे ॥2॥
कलिकाल मे तृतीया पद बिन दुनिया का आधार नही,
जिन नही पण जिन सरीखा, सकल संघ सिरनामी रे,
नाना गुरु री शरण सुं ''इन्द्र'' भवोदधि तरसी रे ॥3॥



परमेष्ठि-मंत्र सुहाना

तर्ज : कोई जब राह न पाये....

परमेष्ठी मत्र सुहाना है पुण्य खजाना, कि भाव विभोर हो गाना,
णमो अरिहताण-णमो अरिहंताणं ॥टेर॥
गुण है इसके एक सौ आठ श्रद्धा से करता जो कोई पाठ,
बन जाते उसके काम तमाम, है कल्पद्रुम समाना।
चितामणी पाना, कि घाति कर्म खपाना
णमो अरिहताण ॥1॥

अनन्त ज्ञान की ज्योति जले, दु ख दारिद्र दूर टले,
असख्य प्रदेश परस्पर खिले, ना कोई वेदना पाए,
मरण मिट जाये, कि त्रिलोकीनाथ कहाये,
णमो अरिहताणं ॥2॥

अगाध सुख की लहर जहाँ, घर है अपना सच्चा वहाँ,
मिटेंगे सारे सताप तिहाँ, फिर ना आना जाना,
अरूप में समाना, कि 'इन्द्र' होगा पहुंचाना,
णमो अरिहंताणं ।।3।।



पूर्वों का सार

तर्ज : यशोमति मैया से

पूर्वो का सार प्यारा मंत्र हमारा,
पंच परमेष्ठि की फेरो एक माला ।।टेर ।।
शूली का सिंहासन सुदर्शन ने पाया-2
अग्नि का नीर सीता सती ने बहाया-2
लक्ष 84 का SSS-2 मेटनवाला ।। 1।।
108 गुण गुणीजन के सोहे-2,
सुर-नर किन्नर सब मन मोहे-2
सुमिरण से सर्प की SSS-2 सुमन माला ।।2।।
दु:ख द्रौपदी का सुन चीर बढाया-2
कुष्ठी ने पाई कल्प तरुवर सी काया-2
शीयल सुभद्रा का SSS-2 प्रगटाने वाला ।।3।।
बिगड़ी सुधारे भैया, जो कोई ध्यावै-2
जपे जाप कोटि कर्मो की कट जावे-2
''इन्द्र'' कहे पीले SSS-2 प्यारे शिवपुरी का प्याला ।।4।।

प्रभु वीतराग तेरी

तर्ज : सो बार जन्म लेंगे....

प्रभु वीतराग तेरी भक्ति मे मगन होगे,
भले जान फिदा होवे, फिर भी ना भूलेंगे ।।टेर।।
ये भटकन भगवन् हाय, कितने दिन की होगी,
चौरासी चक्कर में, कितनी तडफन होगी।
बन्धन के झूले मे कब तक हम झूलेगे ।। 1।।
पापों मे दीवाना मन, ये कितना हंसता है,
नही ध्यान जरा इसको, दुर्गति मे फंसता है,
झूठी सुख की सांसे, ये कितने फूलेंगे ।।2।।
प्रभु सुन लो मेरी पुकार, बस तू ही हो जा दयाल,
लाखों भक्तो में, इस पापी को भी निहार,
''इन्द्र'' भक्ति में झूम झूम, बंशी प्रेम की बजायेंगे ।।3।।



जिनवर का जो करते ध्यान

तर्ज–रघुपति राघव.....

जिनवर का जो करते ध्यान,
पा जाते हैं अविचल स्थान ।।टेर।।
जन्म-मरण के फद टले,
मन वाछित सब आश फले,
आत्म स्वरूप का होवे भान ।। 1।।

घडी एक तूं करले विचार,
स्वार्थ भरा लगता संसार,
अनित्य भाव का अनुसंधान ॥2॥

पनघट की जैसे पनिहारी,
तन्मय हो जा हे अविकारी,
प्रगटे घट में अन्तर ज्ञान ॥3॥

तूं ही तेरा भाग्य विधाता,
सुख दु.ख का भी है निर्माता,
टूटे "इन्द्र" कहे कर्म चट्टान ॥4॥



पल पल प्रभु एकज मांग

तर्ज :- होठों से छुलो ....

पल पल प्रभु एकज मांग, तित्थयरा मे पसीयंतु।
क्षण क्षण मां एकज साध, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥टेर॥

ना सम्यक् ज्ञान मांगू, ना व्रत वरदान मांगू,
ना केवल ज्ञान मांगू, ना शाश्वत स्थान मागू।
अणु-अणु , मा एकज माग, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥1॥

जो तारी प्रसन्नता मले, मारा भव बंधन टले,
मारा पाप बधा प्रजले, मुक्ति नी आश फले।
एथी कहूँ छू बारम्बार, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥2॥

तारी एक प्रसन्नता मा, प्रभु पदनी प्राप्ति छे,
तारी स्नेहल दृष्टि मा, ससार नी समाप्ति छे।
एथी फरी फरी एकज माग, तित्थयरा मे पसीयतु ।।3।।

पेला गजसु मुनि ऊपर, प्रभु आप प्रसन्न थया,
दीक्षा लीधी तेज दिने, एने तारा जेवा कर्या।
ए प्रसंग राखी याद, तित्थयरा मे पसीयतु ।।4।।

मने श्रद्धा छे चौक्कस, प्रभु आप प्रसन्न थसो,
मारी नानकडी आ आश, प्रभु आप पूरी करशो।
जाणुं छूं खुशी नो प्रभाव, तित्थयरा मे पसीयुत ।।5।।



सिद्ध प्रभु है पथ सिद्धि

तर्ज : तुमको हमारी उमर....

सिद्ध प्रभु है पथ सिद्धि दातार,
सिद्धि दे दो हमे दीनदयाल ।।टेर ।।

अष्टकर्म अष्ट गुण सहारी, जिससे हो रही है ये आत्मा भारी,
स्वरूप सिह का स्वय विसारी, जड से गया देखो जीव हारी,
सिद्धा सिद्धि चाहु कीरतार ।। 1।।

चदेसु निम्मलयरा, ज्योति जगा दे, अध्यात्म रमण मे मन को लगा दे,
गूजन हृदय की उनको सुनाये, पातकता सारी तू दिल से जला दे,
गरल विष को देना निवार ।।2 ।।

ज्ञान से दर्शन की महिमा निराली, आस्था गौतम सी ले उजियारी,
उत्सर्ग काया का कर दे धारी, ध्यानाग्नि तेरी इतनी हो भारी,
उपसर्गो की तुम पे मार ।।3 ।।

''इन्द्र'' त्रिलोकीनाथ को वंदन, सिद्धि पदधारी का हो अभिनंदन,
सारे दु.खों का करले निकन्दन, एक दिन पाले ये पद निरंजन,
त्रिभुवन में होगी जयकार ।।4।।



हे प्रभुवीर दया

हे प्रभु वीर दया के सागर, सब गुण आगर ज्ञान उजागर,
जब तक जीयू हॅस–हॅस जीउ ज्ञान सुधारस अमृत पीउ,
छोड़ूॅ लाभ घमण्ड बुराई, चाहूॅ सबकी नित्य भलाई,
जो करना सो अच्छा करना, फिर दुनिया मे किससे डरना,
हे प्रभु मेरा मन हो सुन्दर, वाणी सुन्दर जीवन सुन्दर,
हे प्रभु वीर दया के सागर, सब गुण आगर ज्ञान उजागर। ।3 ।।



चेतन चारों शरणा

चेतन चारो शरणा धार पार हो जावणा रे।
चोखे चित्त हमेशा उठ भावना भावना रे।
पलो शरणो श्रीअरिहन्त, तोड्या चार कर्म दुर्दन्त।
प्रभु जी के गुण का नही अत, ज्याके शरणा से वर,
केवलज्ञान उपावणा रे चेतन चारो ही शरणा . ।।1 ।।

दूजो शरणो सिद्ध सदाई, प्रभुजी गति पाचवी पाई,
ज्याके रूप रग नही राई, जाके शरणा से आठो ही,
कर्म खपावणा रे।।2।। चेतन चारो ही शरणा
तीजो शरणो साधु सुजान, पाले अरिहन्तो की आण,
बाचे भारी सरस बखान जाके शरणा से,
मुक्ति री मोझा पावणा रे।।3।। चेतन चारो ही शरणा
चौथो शरणो धर्म को धारो चारगति का दु ख निवारो,
चेतन जल्दी मोक्ष पधारो,
श्रमण हजारीमल गुण गावे जीत बधावणा रे।
चेतन चारो



तुमसे लागी लगन

तर्ज पारस प्यारा

तुम से लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पारस प्यारा,
मेटो मेटो जी सकट हमारा।।टेर।।
निश दिन तुमको जपू, पर से नेहा तजू, जीवन सारा,
तेरे चरणो मे बीते हमारा।। तुमसे।।1।।
अश्वसेन के राजदुलारे, वामादेवी के सुत प्राण प्यारे,
सबसे नेहा तोडा, जग से मुँह को मोडा, सयम धारा।।मेटो।।
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मगल गाये,
आशा पूरो सदा, दु ख नही पावे कदा सेवक थारा।।
जग के दु ख की तो परवाह नहीं है, स्वर्ग के सुख की भी चाह नहीं है,

मेटो जन्म मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा।।
लाखो बार तुम्हे शीश नमाऊँ, जग के नाथ तुम्हे कैसे पाऊँ।
मन व्याकुल भया, दर्शन बिना यह जिया लागे खारा।।



साता कीजो जी

साता कीजो जी श्री शान्तिनाथ प्रभु, शिवसुख दीजो जी।
कि साता कीजो जी।।टेक।।
शान्तिनाथ है नाम आपको, सबने साताकारी जी।
तीन भुवन मे चावा प्रभुजी, मृगी निवारी जी।।1।।
आप सरीखा देव जगत मे, और नजर नही आवे जी।
त्यागी ने वीतरागी मोटा, मुझ मन भावे जी।।2।।
शान्तिनाथ मनमाही जपताँ, चाहे सो फल पावे जी।
ताप तेजरो दु ख दारिद्र्र, सब मिट जावे जी।।3।।
विश्वसेन राजाजी के नन्दन, अचलादेवी रानी जाया जी।
गुरु प्रसादे चौथमल कहे, घणा सुहाया जी।।4।।



एक बार तो मुख से बोल जरा

तर्ज उठ भोर भई

एक बार तो मुख से बोल जरा, अरिहत प्रभु श्री सिद्ध प्रभु।
हर वक्त ध्यान मन मदिर मे, अरिहत प्रभु श्री सिद्ध प्रभु।।टेर।।
सो–सो कर वक्त गुजार दिया, नर जन्म अमोलक हार दिया।

नही दु खियो पर उपकार किया। ।अरि। ।1 । ।
टुक अँखिया खोल तू होश मे आ, मुनियो के तू दर्शन पा जा।
सब को ये मत्र सुना जा तू ।अरि। ।2 । ।
ये वक्त नही है सोने का, और नीद मे गाफिल होने का।
ये मत्र है दिल को धोने का। ।अरि। ।3 । ।
जो जिनवर के गुण गाता है, वो भव सागर तिर जाता है।
नही नर्को मे दु ख पाता है ।अरि। ।4 । ।
एक चित्त से सुमिरण कर ले तू, और ध्यान प्रभु का धर ले तू।
कुछ बोध को हल्का कर ले तू ।अरि। ।5 । ।
महावीर से सुरती जोड जरा, और विषयो से मुख मोड जरा।
तृष्णा का बधन तोड जरा। ।अरि। ।6 । ।



यो पर्व सन्देश सुणाय

तर्ज–आओजी पधारो

यो पर्व सन्देश सुणाय, जीवन सफल करो जी, सफल करो।
अवसर यो बीत्यो जाय, जीवन सफल करो जी सफल करो। ।टेर। ।
अवसर यो अनमोलो आयो, सन्देशो अमृत रो लायो।
धर्म मे चित्त रमाय, जीवन सफल । ।1 । ।
त्यागो वैर विरोध लडाई, समता धन री कर लो कमाई।
प्रेम री गगा बहाय, जीवन सफल करोजी । ।2 । ।
भटकण बाहर री अब छोडो, अन्तर चेतन सूँ मन जोडो।
मोह ममता विसराय, जीवन सफल करोजी । ।3 । ।

अवसर बार–बार नही आवे, चूके वो पाछे पछतावे।
"शान्ति" गीत सुणाय जीवन सफल करोजी . .. ।।4।।



मनवा तू करले थोड़ा धरम

तर्ज : बहुत प्यार करते है तुमको सनम

मनवा तू करले थोडा धरम–2
कट जायेगे तेरे SSS सारे करम SSS मनवा तू करले ।।टेर।।
खेल खिलौने मे बचपन बिताया–2
आई जवानी तो धरम ना कमाया,
रोया बुढापा पे SSS खोया जन्म SSS मनवा .।।1।।
धन और माया मे बना अभिमानी–2
कायम रहेगी ना तेरी कहानी,
कुछ भी ना सग जाय–2 SSS मिटाले भरम SSS मनवा .।।2।।
चन्दन सा जीवन ये महके तुम्हारा–2
ले ले तू प्यारे धर्म का सहारा,
जग के झमेले–2 तो SSS होंगे ना कम SSS मनवा.।।3।।
उड जायेग हसा यहॉ से अकेला–2
कहे मुनि "गौतम" ये जग है झमेला,
सफल बना ले ये–2 SSS मानव जन्म SSS मनवा तू ।।4।।



मैं क्या करूं नाथ

तर्ज मैं क्या करूँ

मैं क्या करूँ नाथ, मुझे कर्मो ने घेरा,
कर्मो ने घेरा पापो ने जकडा।।टेर।।

ज्ञान पढ़ूतो मैं पढ नही पाऊँ
सिर तो पचाऊँ पढ़ू, फिर भूल जाऊँ
मिटाओ अज्ञान मुझे कर्मो ने घेरा।।1।।

सामायिक करूँ तो मुझसे बैठो नही जावे,
पैर, कमर दु खे जीया घबरावे,
चाहूँ मै आराम, मुझे कर्मो ने घेरा।।2।।

माला फेरूँ तो मन घूमने को जावे,
उसे समझाऊँ तो नीद आ जावे,
कैसे जपू नाथ, मुझे कर्मो ने घेरा।।3।।

उपवास नही होवे, आयम्बिल भी नही भावे,
एकासणा करूँ तो शाम को भूख लग जावे।
क्या होगा परिणाम, मुझे कर्मो ने घेरा।।4।।

पुण्य नही होवे मुझसे, पाप नही छूटे,
देणे के नाम से माथो मारो दु खे,
विशाल हो दयाल हो, ।।5।।



अंगुली पकड़ मेरी

अगुली पकड मेरी रस्ता दिखाता है–2
रस्ता दिखाता है, रस्ता दिखाता है।
कभी तो ये नाना मांझी बन जाता है।
कभी तो ये रामा साथी बन जाता है।।टेर।।
ठोकर लगी मुझको पत्थर नुकीला था।
पर चोट ना आई, नाना ने सभाला था।
तो, चलो ना. .कभी तो . ।।1।।
कोई याद करे उनको दु ख हल्का हो जाये।
कोई भक्ति करे उनकी ये उनके हो जाये।
तो, बोलो ना..कभी तो ..।।2।।
कोई चैन से सोता है, कोई भूखा रोता है।
किसी का भी दोष नही कर्मो का पासा है।
तो, गाओ ना.....कभी तो. ।।3।।
नानेश गुरु की हम भक्ति रचाते हैं।
रामेश गुरु की हम भक्ति रचाते हैं।
देशाणे वाले हो, हम दिल से बुलाते हैं।
तो, आओ ना कभी तो ।।4।।
तुम ठुकरा दिये हमको, हम किससे बोलेगे।
दर तेरे खडे होकर, छुप–छुप कर रो लेगे।
तो बोलोना . कभी तो ये नाना रक्षक बन जाता है।।5।।

मेरे इस जीवन की बस यही तमन्ना है।
गुरुवर के चरणो मे मुझे मुक्ति मिल जाये।
तो, बोलो ना कभी तो ।।6।।



तीन मनोरथ

मनोरथ तीन उत्तम है, जिनेश्वर नित्य भाता हूँ,
कृपा की आस रखता हूँ, सफलता शीघ्र चाहता हूँ।
परिग्रह पाप का दलदल, फॅसा हूँ, फॅसता जाता हूँ,
घटे थोडा बहुत प्रतिदिन, बडा ही कष्ट पाता हूँ।
प्रमादी गृहस्थ जीवन है, अधूरी धर्म करणी है,
बनूगा कब मुनि मुझमे, हो ऐसी शक्ति चाहता हूँ।
मोक्ष की लगन है पूरी, न कोई अन्य आशा है,
देह छूटे समाधि से, अन्त शुभ भाव चाहता हूँ।
दीन हूँ दीनता करता, देवता दान तू देना,
मनोरथ पूर्ण सब करना, चरण तेरे पकडता हूँ।
कहे 'केवल' सुनो पारस, विरूद अपना निभाना तुम,
कहूँ अब और क्या आगे, न खोजे शब्द पाता हूँ।



ओ भटके हुए इंसान

ओ भटके हुये इसान, प्रभु शरण चले आना।
हो जाये सफल जीवन, घबराये क्यो दिवाना।।टेर।।

—अतरा—

दो दिन की जिन्दगी को, क्या यू ही गमाएगा।
आयेगा काल सिर पर नही, कोई बचाएगा।
मतलब का जमाना है, तूने नही यह जाना।।1।।
ओ भटके

सुख और दुख जीवन मे, कर्मो का नजारा है,
धोखे मे पड ना गाफिल, बस एक सहारा है।
सुलझेगी तेरी उलझन, समता को न विसराना।।2।।
अन्याय, कपट कर क्यो, अपने को लुटाता है।
जिस डाल पर बैठा है, उसको ही मिटाता है।
कहे "वीर मण्डल" सुन पगले, पीछे नही पछताना।।3।।
ओ भटके ..



आया है धर्म का जोश

तर्ज बम्बई से आया

आया है धर्म का जोश, जोश को कायम रखो,
जोश भी अकेला न हो, होश को कायम रखो।।टेर।।
पैसा सूखी करे काया, चक्कर मे डाले माया,
धर्म इसलिए भाया, दुखडा इसी ने मिटाया,
काया से काम खूब लो, आज से नियम करो।।1।।
सच्चे धर्म को जाने, झूठ की बात न माने,
आये गुरु समझाने, तत्त्वो को अब पहचाने,

तत्त्वो को खूब सीखो, मन को सयम रखो।।2।।

निर्मल है ध्येय हमारा, प्रीति की बढ जाए धारा,
उज्ज्वल मिला है सहारा, जीवन बना यह प्यारा,
जीवन मे "प्रीति" भरो, आज से नियम करो।।3।।



मेरे सर पर रख दो

मेरे सर पर रख दो गुरुवर, अपने ये दोनो हाथ,
देना हो तो दीजिए, जन्म–जन्म का साथ

1 सुना है अपने शरणागत को अपने गले लगाते हो,
अरे हमने ऐसा क्या मागा जो देने से घबराते हो,
हो ऽऽ, चाहे सुख मे हो या दु ख मे–2
तुम देना अपना साथ

2 गम की धूप मे झुलस रहे है, प्यार की छाया कर दे तू,
बिन माझी के नाव चले ना, अब पतवार पकड ले तू,
हो ऽऽ, मेरा रस्ता रोशन कर दो–2, छायी अधियारा रात।।

3 गुरु बिन ज्ञान कहॉ से पाये, जीवन मे अधियारा है,
गुरु दर्शन हो जाये तो जीवन मे उजियारा है,
हो ऽऽ, हम राम गुरु से मागे–2, इतना ही आशीर्वाद।



सितारे हिन्द के तारे

तर्ज कभी सुख है कभी दुख है

सितारे हिन्द के तारे, हमे अब याद आते हैं,
हमारे पहले के पूर्वज, हमे अब याद आते हैं,
धरी जब खीर पैरो पे, रहे थे मेरु सम निश्चल,
क्षमाधारी वीर प्रभु, हमे अब याद आते है।।1।।
वचन पर राज तज दीना, भरा भगी के घर पानी,
वही हरिश्चन्द्र सत्यधारी, हमे ।।2।।
सूली चढना किया मजूर, पर शील नही छोडा,
धर्मधारी सुदर्शन जी, हमे ।।3।।
रहे चौदह वर्ष वनवास में, न लौटा हुक्म दशरथ का,
वही पितु आज्ञा पालक राम, हमे ।।4।।
बनाकर घास की रोटी, धर्म के वास्ते खाई,
वही प्रताप महाराणा, हमे. ।।5।।
पढो इतिहास और उनका, करो अनुकरण ए वीरो
कहे 'केवल' मुनि तुम तो, हमे ।।6।।

❋❋❋

चेतन प्यारा

तर्ज जब तुम्ही चले परदेश

तू भूल के अपने आप, रहा कर पाप,
ओ चेतन प्यारा, दुनिया मे कौन तुम्हारा . ।।टेर।।

1 जब मौत शीश पर आएगी,
कोई चीज साथ नही जायेगी,
मॉ भाई बाप न देगा कोई सहारा
2 ये जितने रिश्ते नाते है,
सब मरघट तक ही जाते है।
फिर हस अकेला करता कूच विहारा
3 बस धर्म ध्यान सग जाएगा,
जो शान्ति सुख पहुँचायेगा,
ले जैन धर्म की शरण मिले, शिवद्वारा
3 जिन वीतराग गुण गाया कर,
निज जीवन सफल बनाया कर,
मोह माया है जग 'चन्दन' झूठ पसारा।।



हे गुरु सदा चरण

तर्ज : तू जहॉ-जहॉ...

हे गुरु सदा चरण मे, मेरा जीवन साथ होगा-मेरा जीवन-3
मस्तक पर मेरे गुरु का, सदा मगल हाथ होगा, सदा मगल-3 ॥टेर॥

पावन चरण कमल की रज तो सदा मिलेगी,
जिसकी प्रभा से मन में सद्बुद्धि तो जगेगी।
निशदिन तेरे भजन मे, मेरा सरगम साथ होगा ॥ 1 ॥
किस विध सुनाऊ गुरुवर गीतो मे तेरी महिमा,

गाते रहेगा मेरा मन यह तान तेरी गरिमा,
समता के गुंजे स्वर में मेरा सरगम साथ होगा ॥2॥
मेरा सरगम-3

तेरे चमन की खुशबू चहुँ ओर महकती है
तपस्या की कडी में आत्मा दमकती है
''इन्द्र'' के अनुशासन में पथ-पथ का साथ होगा ॥3॥
पथ-पथ का,-3



बन गये सारे पराये

तर्ज : छुप गये सारे नजारे....

बन गये सारे पराये जीना भार हो गया,
हो तुमने ऐसा संवारा जीना सार हो गया,
दिल में बसाया दिया है सहारा,
कि ऐसा है स्वामी हमारा,
सागर में भी श्रीपाल को तिराया था,
शूली का भी सिंहासन बनाया था,
विषधर काला महकता सुंदर हार हो गया,
हो तुमको जिसने पुकारा बेडा पार हो गया ॥1॥
प्रभु गुण गाना कभी ना भुलाना,
कि फिर ना आना ना जाना,
जिसके दिल में तुम्हारा बसेरा हो,
मानस मंदिर में ज्ञान का सवेरा हो,

चरणो मे आये 'मधु' का जीना सार हो गया,
हो, अबर गूजा तुम्हारा जय-जयकार हो गया ।।2।।



अरिहंत अरिहंत बोलो सदा

तर्ज : परदेशी....

अरिहन्त अरिहन्त बोलो सदा, बडे चाव से, भक्ति भाव से।
अरिहन्त प्रभु है केवलज्ञानी, घट घट के है अर्न्तयामी ।।टेर ।।

णमो अरिहताण पद पहला है प्यारा,
जन्म मरण से मुक्ति है देने वाला,
घडिये दु ख की दूर हो जावे तेरी ।।
भव भव की मिट जाये ये भव फेरी,
हो महाज्ञानी, ज्ञान के महादानी,
मुझपे मेहरबानी करो मेरे स्वामी ।। 1।।

दोष अठारह दूर किये है सारे,
जिससे जग के अज्ञानी है हारे,
गुण बारह कैसे प्रभुजी है धारे,
कर कर चितन आत्मा को सुघारे,
हो मुक्तिगामी मुझमे क्या खामी,
दया करो देवाधिदेव तुम हो ज्ञानी ।।2।।

ओ ज्योतिपुज ज्योति मुझमे भर देना,
अतर की बाधाएं सारी हर लेना,

चरण पुजारी "इन्द्र" सदा रहेंगे जिनवर के,
संदेशों पे कदम बढ़ेंगे प्रभुवर के,
तारे लाखों प्राणी ओ करुणादानी,
जन्म जन्म का तो हूँ मै अनुगामी ॥3॥



गुरु नाना की शरण है

तर्ज : झिलमिल...

गुरु नाना की शरण है सुखदाई, वन्दन करे प्रभु को शीश नमाई
ऐसी सुन्दर वाणी सुनकर, होवे भवोदधि पारी ॥टेर॥

धन्य भाग्य सूर्य कैसा चमक रहा है,
अनुपम शक्ति पाकर हरस रहा है,
ज्ञान दर्शन की नहीं है पारावारी ॥1॥

हे श्रृंगार जननी सारे जग की प्रियकारी,
रत्न अमूल्य माता तूं ही जग मे पाई,
देवे धन्यवाद सुर नरेन्द्र हरषाई ॥2॥

पंचाचारी उग्र विहारी भव्यों के उपकारी,
शरणग्राही की मेटे कर्म खुमारी,
समतादर्शी प्रभु पूरण चिन्ताहारी ॥3॥

भ्रमण करत भव सिन्धु से उबारे,
छत्र छाया में रहे हमे न वीसराये,
"इन्द्र" आशीर्वाद से ही पावे ऋद्धि भारी ॥4॥

गुण गरिमा क्या गावे रे

तर्ज : मैं तो आरती....

गुण गरिमा क्या गावे रे अष्टम पट्टधर की,
जय-जय गुरुवर नाना जय-3
ज्ञानालोक से करे आलोकित सारी दुनिया को-2
मिथ्या मिटा दे समकित ज्ञान सारी दुनिया को-2
वन्दन करे झुक-झुक कर्म करे चूर-चूर पाप मिटाओ रे
हो जग के पाप ॥1॥

पाया अद्भुत समता ज्ञान गुरु के चरणो मे-2
अनुपम ज्योति जगाने दिया ध्यान गुरु के चरणों मे-2
विनय करे पल-पल रूके न पथ मे क्षण भर
हो आचार्य पद पाये रे, हो पुरुषोत्तम पद पाये रे ॥2॥

हो जाये दारिद्र सारे दूर वन्दन करने से,
ऋद्धि सिद्धि पावे आठो याम वन्दन करने से,
''इन्द्र'' कहे तिर जाय जन्म मरण मिट जाय,
शिवपुरी पद पावे रे हो भक्त शिवपुरी पद पावे रे ॥3॥



गणेश गुरु के चरण

तर्ज : निज उठ के सज्जन

गणेश गुरु के चरण, कर दिया अर्पण, जीवन सारा
कैसा चमकाया शासन हमारा

नाना नाम रटे, पल मे कर्म, कटे पाप सारा,

कैसा चमकाया.. .. ॥1॥

दिनमणि सम अतिशय तेजस्वी, दीर्घ ज्ञानी है तरुण तपस्वी,
जिनवर झरना झरे, अभिवादन करे, जग सारा।

कैसा चमकाया...... ॥2॥

तीर्थ चारों के हैं अनुशास्ता, युग-युग तपो जग त्राता,
रत्न दिया हमे, सुरनर चरणा नमे, धन्य श्रृंगारा,

कैसा चमकाया.... . ॥3॥

युग प्रणेता झेलो वन्दन, काटो मेरे भव-भव के बन्धन,
अर्ज करे कब से, तारो भव जल से, अन्तर नारा,

कैसा चमकाया...... ॥4॥

हे प्रभु विघ्न विनाशक, शांतिदायक शासन नायक,
दिव्य ज्योति भरे ''इन्द्र'' पग-पग वरे, विजयमाला,

कैसा चमकाया... . ॥5 ॥



गुरुवर तेरे चरणों की

तर्ज : दिल दिवाना बिन...

राह दिखादो, शरण मे ले लो, गुरु नाना,
शरण तुम्हारी, पुण्य से मिले, छुटे ना,
चाह नही है और जगत से है कहना,
शरण तुम्हारी, पुण्य से मिले, छुटे ना ॥टेर॥

तुम ही मेरे ब्रह्मा विष्णु, तुम ही मेरे साई,
रहे निरतर तेरे ध्यान मे, लेना मुझे निभाई,
जला दीप जो, भक्ति का वह, बुझे ना ॥1॥

है क्या ऐसा जो कि गुरुवर, श्री चरणो मे चढावु,
एक मात्र श्रद्धा से दयालु, शाति तुमसी पाऊ,
खिली है कलिया, भक्ति की देखो, लुटेना ॥2॥

खुला द्वार है साई के घर, कोई आश ले आये,
श्रद्धा है पूरण गर दिल मे, चाहे सो ही पावे,
मूरत के, दर्शन से, पलके झुकेना ॥3॥

धन्य-धन्य हो जाये घडियाँ, देखेगे सुरतिया,
चातक पछी सी हो मानो, प्यासी मेरी अखियाँ,
चरण पुजारी, ''इन्द्र'' तिहारी भूले ना ॥4॥



हुक्म-पूज्य हो गये अवतारी

तर्ज : नेमजी की जान...

हुकम पूज्य हो गये अवतारी, त्रिभुवन मे है यश जारी,
नित उठ नर जो गुण गावे, ऋद्धि-सिद्ध सुख वैभव पावे ॥टेर॥

आतम कारज सारवा, लीनो सयम भार,
शुद्ध क्रिया का पालन करने, लीयो अभिग्रह धार,
आये गुरु चरणे उपकारी ॥1॥

मुक्ति सुख रे कारणे, छोड दिया ससार,

समाचारी को शुद्ध बनावे, चले आगम अनुसार,
सहे परिषहों को भारी ॥2॥

एक चादर को छोडकर, कर दिया त्याग अपार,
द्रव्य तेरह तन को देते, लीनी समता धार,
हो गये जग के दुःख हारी ॥3॥

समोसरण में देशना, सुनते नर और नार,
होवे रुपयों की वर्षा, नाथद्वार मंझार,
जंजीर टूटी क्षण में भारी ॥4॥

कुष्ट रोग को काट कर, तन को दिया सुधार,
एक क्या अनेक गुरु ने, बहुत किया उपकार,
अनुपम संकट संहारी ॥5॥

निर्ग्रन्थ क्रिया के हो गये, इस संघ में प्रतिपाल,
शासन मणि सोहे कलियुग मे, पूज्यवर नानालाल,
गुरु है समता रस दातारी ॥6॥

प्रथम स्वर्ग में उपने, छांड के इस संसार,
सुमिरण करने से टले, कटे कष्ट अपार,
'इन्द्र' गुरु जग वल्लभकारी ॥7॥

❋❋❋

हुक्म गुरु का नाम तारणहारा

तर्ज : रेशमी सलवार.....

हुक्म गुरु का नाम तारणहारा है,
अधियारी राहों में ज्यूं ध्रुव तारा है ॥टेर॥

तेरा नाम है सकट मोचक,
लगता है जन-मन रोचक
करता विषयो का शोधक,
मिट जाते सब अवरोधक, सत्य निखारा है ॥1॥

एक चादर तन पर धारी,
पुद्गल की ममता मारी,
एकान्तर छट्ठ स्वीकारी,
बन गये परित ससारी, भाग्य सवारा है ॥2॥

तुम प्रथम स्वर्ग को पाये,
नश्वर बंधन ठुकराये,
बलदेह विदेह हो जाए,
शिव सुख को है प्रगटाये, पथ उजियारा है ॥3॥

तेरी गौरव गाथाए सदियो तक यहॉ गूजेगी,
नानेश कृपा बरसेगी, गुरु राम से शान बढेगी,
''इन्द्र'' का नारा है ॥4॥



शासन नंदन वन सम प्यारो

तर्ज–ढोला ढोल मजीरा.....

शासन नदन वन सम प्यारो रे, प्यारो रे,
शासन प्राणा ज्यूं जीवन रो आधारो रे।टेर।

हे ऽऽ इण शासन रा एक-एक,
गणि हो गया गण में न्यारा,
प्राण समर्पण करी शासन री, शान बढावण हारा,
शासन भक्ता रो सहारो रे ॥1॥

हे ऽऽ हिला दियो आसन, देवा रो बरसाया रूपैया,
बेडिया तोडी राजकुंवर री, साचा बन खैवेया,
कुष्टी रो तो आवे विचारो रे ॥2॥

हे ऽऽ सर्प संग मास चार, योगीश्वर बिताया,
शत्रु ने पण मित्रवत् मानी, श्री गुरु धर्म निभाया,
याद आवे चोथो आरो रे ॥3॥

हे ऽऽ जवाहर री कहता ही नही, आवे अद्‌भुत ज्योति,
दया दान रो डंको बजायो, थली में चमक्यां मोती,
वारे तप रो तेज कमालो रे ॥4॥

हे ऽऽ शेर बब्बर सी करे गर्जना, गणेश शासन में सवायो,
दे ललकार श्रमण संस्कृति रो, सुन्दर नाद गुंजायो,
नाना सारे संघ मे न्यारो रे ॥5॥

अष्टम पाट रो तेज अनूठो, शासन ने उजाले,
चारों तीरथ बन सेनानी, एक आण में चाले,
''इन्द्र'' ने शासन रो सहारो ॥6॥



साधुमार्गी संघ की शोभा

तर्ज - देखे तेरे दरवाजे

साधुमार्गी सघ की शोभा से, शोभित विश्व महान
गण के गणिवर हुए प्रधान, एक-एक से हुए निरतर,
शासन के श्रृगार, युवाचार्य श्रीराम बने अभिराम।टेर॥
साधुमार्गी सघ निराला, वीर आण निभाने वाला
दिखता दुनिया से अकेला, पर देखो कैसा अलबेला
भूल न जाना गजानद को, दे सकते प्रमाण॥1॥
समीचीन सुन्दर है अनुशासन, जनगण करते है अभिवादन
नानेश का अद्भूत सचालन, शस्य श्यामला सा मनभावन
आस्था चारो तीरथ की गणि पे मिले न अन्य स्थान॥2॥
सघसृष्टि के हुक्म निर्माता, अभिनव राम बनो सुखदाता,
दशरथ नदन से हो जेता, जन मन के तुम मनोविजेता
युवाचार्य श्री के चरणो मे 'इन्द्र' का हो प्रणाम॥3॥



शताब्दी श्री गुरु की

तर्ज : यशोमति मैया से....

शताब्दी श्री गुरु की मनावे
दयासिन्धु देव तेरी याद हमे आवे॥ टेर॥
भर-यौवन मे ऋद्धि वैभव त्यागी-2
जम्बू सम अद्भुत हो गये वैरागी-2
विजय कुँवर से अनुपम योगी कहाये॥1॥

संयम सजगता संघ ने है पायी-2
पुरुषोत्तम बन पीर भक्तो की मिटायी-2
चरणों मे आये वो कभी न भुलावे ॥2॥
अष्टम पट्टधर होंगे शासन के शानी-2
कैसी मुखरित हुयी भविष्यवाणी-2
शिवराह बतलादो "इन्द्र" अर्ज सुनावे ॥3॥



जिसके कण-कण में त्याग और सेवा

तर्ज- जहाँ डाल-डाल पर....

जिसके कण-कण में, त्याग और सेवा की बहती धारा
जय समता संघ हमारा,
सब एक सूत्र में बंधे हम, एक हो सबका नारा,
जय समता संघ हमारा ॥टेर॥

संघ हमारा गौरवशाली, इसकी महिमा गाये
अर्पण कर तन मन धन सारे, इसकी शान बढाये
जहॉ श्रद्धा और समर्पण का, अनुपम चमके ध्रुव तारा ॥1॥
श्री हुक्मगणि और शिवलाल जी, उदय हुए उपकारी,
श्री चौथमल, श्री लाल, श्री जवाहर गणेश की महिमा भारी,
गुरु नाना और राम ने मिलकर, शासन को उजियारा ॥2॥
यह समतामय श्री संघ हमारा, अपना ही परिजन है,
इसकी रक्षा का हमको ही, करना अब चिंतन है,
'पुण्य' खिले नित्य नूतन इसके, मिटे सकल अंधियारा ॥3॥

जवाहर जग ज्योतित किया

तर्ज : वह धर्म नहीं बस..

जवाहर जग ज्योतित किया, पतितो को पथ प्रकाश दिया।
तन मन जीवन प्रशात किया, जवाहर जग ॥टेर॥

धरती का कण-कण सिचित किया,
उजडे प्रान्तो को सरस किया,
शस्य श्यामल मानव मन को किया ॥1॥

प्रगाढ प्रज्ञान प्रदीप्त काया,
अगाध विचार सग लहराया
आत्मिक बल अनुपम पाया ॥2॥

भव्य पथ ले जाती किरणावली,
पढ-पढ खिलती अतर की कली,
याद आती जवाहर की छवि ॥3॥

समकित दाता गुरु कहा बसे,
याद करत नैना नीर बरसे
''इन्द्र'' दर्श बिना जिया तरसे ॥4॥

नानेश कृपा श्री संघ पे हुई,
चौमासा करने की आज्ञा हुई,
शहादा मे स्वर्ग तिथि मनाई ॥5॥



छुप गया एक सितारा

पुण्यतिथि जवाहराचार्य

तर्ज : रेशमी सलवार

छुप गया एक सितारा हिन्दुस्थानी का,
जग मे हो गया जाहिर नाम जवाहर का ॥टेर॥

झूठा जाल तमाशा, जग बंधन क्षण मे तोडा,
मुनिवर मगन गुरु से, सेवक सा नाता जोडा,
संयम शूरवीर का ॥1॥

गांधी के युग में आया, जिन शासन तेज बढाया,
धर्म धुरन्घर वीरवर ने राष्ट्र धर्म का पाठ पढाया,
दीन दु ख हारी का ॥2॥

उभय जवाहर जग में आये, स्वतंत्रता दिलवाने,
अनुपालक भी मोती थे, कैसा मेल मिला कुदरत से·
पाखण्ड हारी का ॥3॥

गर छोड के ही था जाना, क्यो न हमको बतलाना
हुआ हंसते हंसते रवाना लाखों का दिल तडफाना
पुरुषोत्तम भारत का ॥4॥

श्री जवाहर ज्योति जलादो, तडफन अतर की बुझा दो,
''इन्द्र'' दे शुद्ध समकित स्पन्दन, शिवपुरी का मार्ग दिखा दो,
भवी भव हारी का ॥5॥



भारत ने रत्न गंवा दिया

तर्ज : ये धर्म नहीं बस धोखा है

भारत ने रत्न गवा दिया, हाय जैन जवाहर कहा गया,
दया दान का डंका बजा दिया ॥टेर ॥

शस्य श्यामला भूमि पे जन्म लिया,
मरुधर मे अतिम सास लिया,
शुक्लाष्टमी आषाढी ने छीन लिया-1
छाई रग-रग मे वीरवाणी,
निकल पडे सुनाने प्रभु वाणी,
सत्य प्रेम का प्याला पिला दिया-2
मुखडे की छटा निराली थी,
दारिद्र मिटाने वाली थी
प्रलय पाखंड का दूर किया-3
अमूल्य जवाहर दो जन्मे,
गौरव गाधी के वचनो मे
राष्ट्रपति-धर्मपति बना दिया-4
खोया रत्न अब कहाँ से लावे,
तेज तुम्हारा गुरुवर मे पावे
नाना नई चेतना ले आया-5
ऋणी रहे सदा धरती तेरी,
मेटो सेवक की भव फेरी
नीमच मे 'इन्द्र' ने सुना दिया-6

गौरवशाली शासन हमारा

तर्ज : तुम्हीं हो माता.....

गौरवशाली शासन हमारा,
नानेश रामेश का पाये सहारा ॥टेर॥

पूज्य हुक्म के त्याग ने कैसा,
अमर बनाया स्वामी सुधर्मा जैसा
बहती संयम की निर्झर धारा ॥1॥

बाल घुंटी सी श्रद्धा कण-कण मे छाई,
आकर्षित आत्माए शरण में आई,
स्वेच्छाचारी से करती किनारा ॥2॥

युगदृष्टा जवाहर की सुझ थी निराली,
शिथिलाई गणेश ने गण से निकाली,
प्रज्ञा पुंज नानेश को जाने जग सारा ॥3॥

आओ हम सब संकल्प लेंगे,
आस्था के दीप रामेश चरणे जलेगे,
सति ''इन्द्र'' कहे होगा जन-जन का प्यारा ॥4॥

❋❋❋

उदियापुर रा गणपति (पुण्यतिथि)

तर्ज : वृंदावन का कृष्ण.... पुण्यतिथि

उदियापुरी का गणपति गुरुवर, सबकी ऑखों का तारा,
छुप गया किस देश में तुझको, याद करे हिन्दु जन सारा ॥टेर॥

ज्योति जलाई जिनशासन मे, जग से एक दिन चला गया,
सूरत नही है फिर भी कीरत, नभ मण्डल मे फैला गया,
दीन दु खी दुनिया का प्रभुजी, तू ही था एक सहारा ॥1॥

चन्दन से शीतल थे फिर भी, शेर बबर से गूज गये,
झोपडी से ले महलो मे महावीर सदेशा सुना गये,
फकीरीधारी भर यौवन मे, शिथिलाई का किया किनारा ॥2॥

जोहरी बनकर जवाहर सघ मे, सत शिरोमणी हमे दिया,
सोचे तेरे अरमानो को, नाना गुरु ने पूर्ण किया,
अलख जगा दी वीर प्रभु की, भूले न जन गण सारा ॥3॥

दर्श आश ले गुरु चरण की, अक्कलकुआ मे चल आये,
अपूर्व ठाठ लगा तपस्या का, हर्ष अतीव संघ मे पाये,
शरण कामी हूँ ''इन्द्र'' न भूले एक ही है अन्तर नारा ॥4॥



गणेशाचार्य (पुण्यतिथि)

तर्ज : जिन्दगी खुशनमा....

ओ उदियापुरी का प्यारा,
गुरु को याद करे ससार सारा ॥टेर॥

भर यौवन मे जोग लिया, दु ख दुनिया का दूर किया,
तिन्नाण तारयाण बन तारा ॥1॥

आप्तामृत गुरु से पाया, अकिंचन अद्भुत आया,
बन गया श्रमण सघ सितारा ॥2॥

श्रमण ताज है छिटकाया, अधिनायक पद ना भाया,
शिथिलाचारी से कर किनारा ॥3॥
ओ हुक्मशासन की ज्योति, पाये तुमसे अमूल्य मोती,
हो गया हिन्दुस्तान का दुलारा ॥4॥
उच्चलोक मे चले गये, कीरत जग मे छोड गये,
शुद्ध मन से किया सथारा ॥5॥
चरण सेवक न भूल जाना, पूर्ण करो प्रभु अरमाना,
''इन्द्र'' को तेरा ही सहारा ॥6॥



हो श्रमण संघ सरदार

तर्ज : तेरे पूजन को....

हो श्रमण संघ सरदार, प्रभु दर्शन दे देना-2
क्यों छोड गये निराधार, नयन से बहती अश्रुधार ॥टेर॥
अहोभाग्य से मां इन्दिरा ने, श्री गणेश को पाया,
दीपक बन दुनियां में तूने, शत-शत दीप जलाया रे हो ऽऽ
समकित दे पूज्य श्रीलाल, जवाहर जीवन का रखवाल ॥1॥
धर्मवीर बन धर्म भूमि मे, धर्म का नाद गूंजाया,
कुटिया ही क्या राजमहल मे, अहिंसा मत्र पढाया रे हो ऽऽ
हो उदियापुरी के लाल, दीनबंधु थे दीनदयाल ॥2॥
शेर बबर बन श्रमण संघ मे पंचाचार पलाया,
कोटी कोटी भक्तों ने तेरे चरणो मे शीश झुकाया रे हो ऽऽ
देखा शिथिलाचारी का ताल, संघ को छोड दिया तत्काल ॥3॥

मुग्ध जनो की मुग्ध क्रिया का, झूठा जाल हटाना,
कोई न भूल सकेगा तुमसे, पाये पूज्यवर नाना रे हो ऽऽ
हो अगणित गुण भडार ''इन्द्र'' को भवसागर से तार ।।4।।



गणेश गुरु के वे उद्गार

तर्ज : माने तुझको......

गणेश गुरु के वे उद्गार, याद आते है हर बार,
रोशन होगा ये जग मे नाना, दुनियाँ का है आधार
महक उठेगा, साधुमार्गी सघ, दशो दिश जय-जयकार ।।टेर ।।

सूरज गोखडा उदीयापुरी का, आना हुआ जहाँ राणा जी का,
उमड पडे थे नर अरू नारी, लाखो भक्त चरण पुजारी,
शत् शत् करे सत्कार ।। 1।।

डोली मे आए इन्दिरा नदन, आशीष पाए शृंगार नंदन,
बनना पाखड तम प्रतिहारी, आण पे चलना प्रभु की भारी,
चादर करो स्वीकार ।।2।।

स्वामी सुधर्मा सा संघ मे सोहे, सारे समोशरण को मोहे,
जवाहर बगिया ऐसी खिलाई, एकलव्य सी भक्ति दिखाई,
परचे पडे हजार ।।3।।

लालो का लाल 'इन्द्र' शासन पाया, नाना ने राम को ऐसा सजाया,
तन्मय हो जो करता भक्ति, पा जायेगा अनूठी शक्ति
सच्ची हुई मिशाल ।।4।।

श्रमण संस्कृति के अभिनेता

तर्ज : इण कलियुग

श्रमण संस्कृति रा अभिनेता,
चारो तीरथ रा हृदय जेता,
लाखो साधु मे साधु गजानद भावे,
मानो-मानो म्हारा नाथ थाने कांई चावे ॥टेर॥

एक आण मे चालण वाला, मै चरणा रा चाकर,
मध्य निशा में अर्ज गुजारे, बडा-बडा धुरन्धर आकर,
मोती गुरु रा शिष्य मानो, म्हारी हालत थोडी जाणो,
ज्योति दे दो जवाहर री, दीप जलावे ॥1॥

ललक एक थी सयम री, बस कदीयन वा पूरी होती,
देख देख शिथिलाई ने, अंतर आत्मा है रोती,
गंर्गाचार्य सो गणपति निकल्यो, पद रो लालच दूर फैंक्यो,
देखी हिम्मत थारी, लाखों भक्त बण जावे ॥2॥

थारा अरमाना ने पूरण करणीयो भी कांई मिल्यो,
दांता रो दातार पाकर, सच चमन देखो खिल्यो,
अवरोधक भी अचरज पाया, समता सिंधु री पदवी पाया,
बाप जिस्या ही है बेटो, रामेश मन भावे ॥3॥

मंगलाचरण रो बाजो भी, देखो आज निनाद भर्‌यो,
हुक्मगुरु रो बोयोडो बीज बडला वत ही छाय रह्‌यो,
पत्ती-पत्ती में मजबूती, हिम्मत किसी की न होती
सति ''इन्द्र'' कहे खंडित कोई न कर पावे ॥4॥

समता दर्शन रा व्याख्याता

तर्ज : इण कलयुग......

समता दर्शन रा व्याख्याता, ध्यान समीक्षण रा प्रदाता
थारी समता रो तो थाह कोई विरला ही पावे
नाम लेता ही ऑखडल्या म्हारी भर जावे ।।टेर।।

1

चमकतो सूरज बादल री घटा मे देख्यो मूरझतो
सघर्षा री घाट्या मे मै देख्यो सदा थाने हसतो
करदी जीवन री कुर्बानी, याद करे हिन्दुस्तानी
निर्मल प्रज्ञा रो तो पार कदीयन पावे

2

लाखो मनुहारा ने सयम खातिर गुरु ठोकर मारे
रह्यो अडिग मेरू सो महावीर आज्ञा ने धारे
निदा प्रशसा ठुकरावे, अतरनाद ही गूजावे
थारी आशीष सु सघ बढतो ही जावे

3

इतिहासा मे चड नाग रो, विष वीर पीतो पायो
शब्दा रा जहर पी थे तो अमृत रस ही बरसायो
ठायो शास्त्र सम्मत सथारो, मोह देह रो निवार्यो
रेइग्यो विरह दर्शन रो दिल दु ख पावे

4
सूझ-बुझ तो आज थारी, सारी दुनिया ने भावे
वादी कांई प्रतिवादी राम गुरु सुं मोहित हो जावे
कीरत सुण सुण मन हर्षावे, सति ''इन्द्र'' नत हो जावे
संघ हुक्म गुरु रो दीपायो, सारी दुनिया गावे.. .



इण कलियुग रा भाग्य विधाता

तर्ज : इण कलयुग......

इण कलियुग रा भाग्य विधाता, राम सबका कष्ट मिटाता
लाखो आंखडल्या रो तारो हार हिए रो लागे
म्हाने देशाणे रो लाल प्यारो प्यारो लागे,
म्हाने नाना गुरु रो राम प्यारो-प्यारो लागे .. ..
यश कीर्ति री नही चाहना, मान सदा पीछे राखे,
पद पदवी सु सदा दूर रहे, सयम सु प्रीति धारे,
अनुशासन में आगे आगे, पाखडी तो दूरा भागे,
वीर शासन रो सचालक हार हिए रो लागे .... ॥1॥
झालर री झणकारा सु भी, प्रियकारी मधुरवाणी,
सुनता ही मन मुग्ध बने, यह समता छकणे सु छाणी,
आ है राम गुरु री वाणी, वाणी लागे घणी सुहाणी,
ओ मधुर-2 बोलणियो, हार हिए रो लागे .. . ... ॥2॥

छवि अनोखी इण मे देखी, लाखा रो उद्धार कर्‌यो,
व्यसन मुक्ति रे आदोलन सु, जीवन रो निर्माण कर्‌यो,
देन निराली निर्मल लागे, सघ सुधारे सागे सागे
वीर सपूतो ओ रामेश गुरुवर हार हिए रो लागे ॥3॥

आगम दर्शन रा व्याख्याता, ध्यान समीक्षण रा ध्याता,
द्वेष क्लेश जजाल मिटाता, समता रो रस बरसाता,
विपदावा ने दूर भगावे, जीवन ने सरसब्ज बनावे,
अद्‌भुत योगी ओ सावरियो हार हिए रो लागे ॥4॥

गजब अतिशय झिलमिल झलके, ज्योत सवाई है जागे,
अल्पायु मे दीक्षा लेकर, सुरा रो सूरो लागे,
महिमा सुरनर किन्नर गावे, दौड्‌या इन चरणो मे आवे,
ओ तो ओजस्वी तेजस्वी हार हिए रो लागे ॥5॥



वीर जयंति पे जयंति आई

तर्ज: - इण कलियुग रा

वीर जयति पे जयति आई, गुरु राम ने बधाई
जुग जुग जीओ गवरा नन्दन सुणो म्हारी
त्रिविध व्याधि सु मुक्ति पावे ससारी ॥टेर॥

लक्ष्यपूर्ण पालना मे, पारिवारिक जन पाया।
अतिमुक्तक सो बण्यो वैरागी, साधु वेश ही मन भाया।
आसक्ति सु दूरो रेवे, त्याग मे ही मनडो पिरोवे।
कर्म वीर इसो भ्रात चिंता निवारी ॥1॥

तात् वियोग जाणी, संसारिक सुख समझे।
आत्म रमण मे रमतो राम, कहे माता आज्ञा दीजे।
चर्म रोग दूरो भाग्यो, संयम प्रण प्रबलता पायो,
शूरो मरूधरा रो, देखो शूरताधारी . ॥2॥

दर्शन देखो एक बार रा रंग मजीठ सो ना उतर्‌यो
साधना सुमेरू चढ़तो नाना गुरुवर जब्बर परख्यो
एकलव्य सो लक्ष्य देखो, मुनिप्रवर रो पद सोप्यो
आचार्य पद री गरिमा देखो भारी ॥3॥

वीर विचरण देश अनार्य में, साक्षात् कर दीनो
तड़फे आत्मा सति ''इन्द्र'' री मोह तन रो तज दीनो
घणी घणी सुख साता वर्तावो, अव्याबाध पद रो चावो
पूर्ण करजो गुरु भव भव आभारी . . ॥4॥



वीर प्रभु रे पाट पे आयो

तर्ज : इण कलियुग रो....

वीर प्रभु रे पाट पे आयो, वरद्‌हस्त नानेश रो पायो,
फाल्गुन शुक्ला तीज रो दिवस आयो,
लाल देशाणे रो देखो सब मन भायो ॥टेर॥

अवधपति रो राजतिलक तो, रामायण रो है सुण्यो,
राजमुकुट सो चादर अवसर, बीकाणे प्रांगण पेख्यो,
जूनागढ कांई गंगासिह रो, मेलो लाग्यो अगर-डगर रो,
जय गुरु नाना राम रो, जयकार छायो ॥1॥

सेठिया कोटडी सु नाना, गुरु सग दुनियां उमडी,
ठाठ निरालो इसो आयो, जनता देखे खडी-खडी,
आज वो दृश्य याद आवे, मन मोरियो हर्षावे,
मोच्छव चादर रो रग, अनूठो लायो ।।2।।

इण नगरी मे हुक्मी गुरु भी, आचार्य पदवी पाई,
मुनि प्रवर ने चादर नाना गुरुवर भी ओढाई,
गणीवरा री आशीष वर्षे, चारो तीर्थ चरणे हर्षे,
तमस अतराय रो म्हारे आडो आयो ।।3।।

सति ''इन्द्र'' शासनपति श्री जिनवर जी ने अर्ज करे,
केशरिया या झीणी-झीणी चादर दशो दिश लहरे,
नन्दन वन-सो शासन महके, बाट्या जोवे अमिट पलके,
धन्य-धन्य है वो क्षेत्र गुरु चरण पायो ।।4।।



माघ शुक्ला बारस आई

तर्ज– इण कलियुग

माघ शुक्ला बारस आई, बाटे घर-घर मे बधाई,
देशाणे मे गुरुवर नानालाल आवे,
हो दीक्षा देई राम ने यश पावे ।।टेर ।।

प्रज्ञा अनूठी वैराग्य काल मे, देखो गुरु परख लीनी
अलगो न राखे मुनि राम ने, चरणा री सेवा दीनी
झीणी-झीणी क्रिया पाले, गुरु सम्मत सु चाले

संयम तेज तो दिन-दिन बढतो जावे ॥1॥

लौकेषणा सुं दूर रहने, अन्वेषण आत्मा रो करे,
उत्तर दे दे प्रश्ना रा, श्रोता री शंका ने हरे,
प्रीति पुद्गल री परिहरतो, प्रतिपल सहजता सुं चलतो,
गढ चित्तौड में मुनिवर पद पावें ॥2॥

प्रथम चौमासो निम्बाहेडा युवाचार्य पद मे दीनो,
विघ्न अनेकों झेल्या आता, गुरु गहरो निरख लीनो,
अरमानां ने पूरा करता, चिन्ता नाना गुरु री हरता,
णमो आयरियाणं पद उदियापुरी में पावे ॥3॥

अचिन्त्यडो विचरण सुण-सुण श्रद्धा री नोबत बाजे,
सति ''इन्द्र'' कहे शेर बब्बर सो नन्दन गवरा रो गाजे,
दूरी चरणा री लागे खारी, अन्तराय दो निवारी,
स्वर्णिम घडियाँ दर्शन री, म्हारी कद आवे ॥4॥



अजी ओ गुरुवरसा

युवाचार्य-अभिषेक

तर्ज - अजी ओ

अजी ओ गुरुवरसा, भावी शासक रो थे तो चयन कर्‌यो
युवाचार्य श्री राम रो अभिषेक कर्‌यो
पूज्य हुक्म री गादी अमर रहे
'नाना-राम' री जोडी, जयवन्त रहे ॥टेर॥

फागण तीज रो दिन आयो, जूनागढ रो भाग्य सवायो
जन मन उमड पडे-2
सतसतिया भी है सग मे, राजमहला रे प्रांगण मे
नानेश चरण बढे-2
नदी सूत्र रो वांचन कियो भारी
बणग्या णमो आयरियाण पद रा अधिकारी ।1।

स्वस्तिक अकित धोली चादर, पकडी स्थविर आदि मुनिवर
केशर घणी बरसे 2
पूज्यवर नाना रो मन हरषे, सघ साधुमार्गी सरसे
अतर आशीष बरसे-2
चादर लहर-2 लहराती गई, नाना हाथा सु राम ने दी ओढाई ।2।

हो गए लाल जवाहर ज्ञानी, गणपति गुरु री अमर निशानी
गरिमा बढती जावे-2
करनी श्रमण सस्कृति री रक्षा, मारी आ ही एकज शिक्षा
आच नही आवे 2
सौपु शिष्य शिष्यारी खिली फुलवारी
होवे राम राज्य जग मे सदा यशकारी ।3।

देवा शत्-शत् आज बधाई, धरती धोरा री चमकाई
मगल गीत गावा-2
भरिया रेता रा समन्दर, बणग्यो मधुवन देखो मरुधर
गुणला गुरु रा गावा-2

मुनिवर जी रो मैं तो करूं अभिनंदन

नवम् पाट रो अखंड रहे अनुशासन ॥4॥

युग-युग जीओ भगवन् प्यारे, जितने चमके नभ मे सितारे

तन मन अर्पण करू-2

होवे कृपादृष्टि थारी, तिर जावे नावडली मारी

जीवन धन्य करूं-2

श्रद्धा भक्ति रो दिल में दीप जले

'इन्द्र' कहे शिव रमणी शीघ्र मिले ।5।



अपूर्व जयन्ती गुरुवर की आई

तर्ज : तुम्हीं हो माता

अपूर्व जयन्ती गुरुवर की आई,
सुरनर मुनिवर सब ने मनाई ॥टेर॥

ज्येष्ठ शुक्ल चन्द्र द्वितीया को पाया,
पूनम हो पुनीत नभ-मण्डल चमकाया,
सत्य संयम की ज्योति जलाई ॥1॥

पुलकित पोखरना वंश का उजियारा,
गुरु गणेशी से जीवन संवारा,
बन गये महर्षि महिमा बढ़ाई ॥2॥

आप्त आगम के अद्‌भुत है ज्ञाता,
वाणी क्या मुख से सरस्वती बहाता,
जुग-जुग जीओ नाना जग को सुखदाई ॥3॥

पर्दा ये मोह का मन से हटाले,
गीत प्रभु का अन्तर से गाले,
तिर जाएँ नैया ''इन्द्र'' गुरु गुण गाई ॥4॥



प्राणों से भी है प्यारा

तर्ज : क्या हुआ.....

प्राणो से भी है प्यारा, नाना नाम तारणहारा,
नमे जो चरणन्, मिट जाय कलिमश सारा ॥टेर॥

जिनशासन की, शान बढाकर, तन मन पावन प्रभु ने किया,
पद युवाचार्य को पाकर, भक्तो को प्रतिबोध दिया,
क्यो न हो सुरनर चरण पडे, वीर वाणी का रस जन मे भरे ॥1॥

अगाध है, ससार समुद्र, कैसे कहदो पार करे,
बडे-बडे मगरमच्छ कच्छ, बीच भँवर मे अनत भरे,
पर तेरे, सुमिरण से बढे, जन्म मरण के फन्द छूटे ॥2॥

वाह रे श्रृगारा, किया कमाला, कैसे सुकृत कर्म करे,
विष अमृत अगन को नीर, गजानन्द आनद करे,
श्रद्धा से, तेरा जो जाप जपे, कोटि जन्मो के पाप खपे ॥3॥

कैसे भी है फिर भी हमको, शरण चाहे तेरा-2,
न्यौछावर कर दिया जीवन को, काटो भव-भव का फेरा,
''इन्द्र'' है, प्रभु तेरे चरण तले, मन के मनोरथ मेरे फले ॥4॥



आठ की है शान

तर्ज : आवरा वेग पधारो जी

जवाहर की रखी थी शान, हुआ कुर्बान, गजानन्द नही घबराया जी।
आठ की है शान, पाट पर तुझे बिठाया जी।।टेर।।

सुन प्यारे, मै गजानन्द का बहुत ही हूँ आभारी।
सुन प्यारे, महलों के बीच में चादर तुझ पर डारी।
थी चादर रंग सफेद नहीं कोई भेद।
पूज्य ने यूं फरमाया जी।।1।।

सुन प्यारे, यह हुक्म मुनि की गादी हुक्म सब माने।
सुन प्यारे हुए एक से एक, श्रावक सब ही जाने।
यो गादी तणो प्रभाव, नाना परखा दे दे ताव।
लाल से लाल ही आया जी।।2।।

सुन प्यारे, तेने सच्चे दिल से करी थी सेवा भारी।
सुन प्यारे, तेरे साथी संत सभी बडे गुणकारी।
तेरी सतियों ने रखी टेक, हमारे पूज्य एक
श्राविका संघ ने भी सुहाया जी।।3।।

सुन प्यारे मै लायक नही हूं बीच सभा में बोलूं
सुन प्यारे, सब चरणों का फेर गजानन्द की जय बोलूं।
तुम आना गढ चित्तौड गजानन्द रोड
मैं रहता नीम की छाया जी।।4।।



वीर वाणी रो डंको बजायो-2

वीर वाणी रो डको बजायो-2
नानेश पट्टधर रो शरणो सवायो।
गुरु सा म्हारा रामेश जुग-2 जीओ

(1) चरण पड्या धरती, तीरथ बण जावे।
त्रिविध व्याधि सु, मुक्ति पावे,
अर्थ आगम रो अनूठो बतायो, गुरु सा

(2) मुस्कान भरी मुद्रा, दुखडो मिटावे,
कली-2 अन्तर री, इसी खिल जावे।
सुमिरण करता ही परचो पायो, गुरु सा

(3) गति है पवन सी, गहनता सरवर सी,
शीतलता शशि सी, तपस्या धन्ना सी,
समवशरण मे नानेश सो पायो, गुरु सा

(4) सती इन्द्र रो, हर्षे हिवडो,
लाखो प्रगटासी, दिवडा दिवडलो,
जिन नही पण जिनवर, सो पायो, गुरु सा



पौष शुक्ला अष्टमी

आचार्य श्री नानेश

तर्ज : माता देव की लाल

पौष शुक्ला आठम आई, नाना गुरु री याद दिलाई,
साची रामेश-चरणे जयंति, मनावे चारो तीरथ जी,

मनावे चारों तीरथ जी, मै वाने देवा बधाई ॥टेर॥

निर्मल ज्ञान थारो भारी, घट-घट रा थे अन्तर्यामी,
ज्यांरो नाम सुमरता बेडा पार, पावे चारों तीरथ जी ॥1॥

समता समीक्षण ध्यान ठायो, आसन देवा रो हिलायो,
माता श्रृंगारा ने याद, करलो चारों तीरथ जी ॥2॥

गुलशन हुक्म गुरु रो खिलायो, सौरभ सारो जग पायो,
फूलडा भक्ति रा चरणे, चढावे चारो तीरथ जी ॥3॥

शरणार्थी ने गले लगाया, समकित दिवड़ा खुब जलाया,
थारो भव-भव में आभार, माने ला चारों तीरथजी ॥4॥

आत्मानंदी सदा ही पायो, संघर्षा में नहीं घबरायो,
नत मस्तक रामेश आण मे, रेवेला चारों तीरथ जी ॥5॥

तमन्ना सति ''इन्द्र'' री पूरजो, दृष्टि कृपा री सतत् रखीजो,
झलक दर्शन री एक बार चावे, चारों तीरथ जी ॥6॥



शुक्ला अष्टमी पोष की

तर्ज : जहाँ डाल-डाल पर

शुक्ला अष्टमी पोष की देखो, याद दिलाने आई,
हम कितने भाग्यशाली, हम कितने गौरवशाली,
वरद् हस्त रख राम पे, नानेश कह गये गुरु गुणमाली,
हम कितने भाग्यशाली ॥टेर॥

अरुणोदय मे कठोर जीवन जीकर के सिखलाया,
झुकाया मस्तक सच्चाईयो पे, आडम्बर ठुकराया,
हो जाओ अर्पित मर्यादा पे, सदा रहेगी दिवाली ।।1।।

सेवा समर्पणा साधना से, सघ सुमन सहलाया,
आपाधापी से दूर रख, निज को निस्पृह पथ दर्शाया,
अनुचितना भी थी, देखो दुनिया से निराली ।।2।।

भगीरथ यत्नो से पाये सफलता रग अनूठा लाई,
नया मोड लिया अतरनाद ने बीकानेर के माई,
बन गई तीरथ इतिहासो मे, भूमि जूनागढ वाली ।।3।।

कर-कमलो से ओढा चादर, रामेश पाट बिठाया,
करणी-कथनी की एकता से, शासन गजब चलाया,
सति ''इन्द्र'' कहे नाम क्या माला फेरो आज्ञावाली ।।4।।



श्रद्धा के सरगम में

माघ शुक्ला द्वितीया गुरु गणेश

तर्ज : तन के तन्दुरे

श्रद्धा के सरगम मे-2, भक्ति के स्वर बोले,
गुरुवर गणेश मेरे SS, गुरुवर नानेश ।।टेर।।

हुआ सम्मेलन श्रमणो का जब, चादर तुझ पर डारी-2,
सयम साधना सख्त थी तेरी, जिनाज्ञा अनुसारी-2,
शिथिलाई सह ना पाये-3, पद पल मे ठुकरावे ।। 1।।

माघ कृष्णा द्वितीया आई, पुण्य तिथि है मनाये-2,
शासन का दे ताज नाना को, गुरुवर स्वर्ग सिधाये-2,
अश्रुधार बहे-3, भक्तो का दिल डोले ॥2॥

गणनायक गणेश गुरु ने, रत्न दिया अनमोला-2,
आयरियाण पद पे शोभित, नाना लगे निराला-2,
कुशल खैवेया बन के-3, भक्तों की नैया तारे ॥3॥

गुरु के पावन चरण तले, हम जीवन को सरसाये-2,
भावी शासन नायक देखो, राम सभी मन भाए-2,
चहुँ दिश फहरे ''इन्द्र''-3, यश पताका गुरु की ॥4॥



गमगीन बना दिल मेरा

तर्ज : ए मेरे वतन...

गमगीन बना दिल मेरा गुरुवर किस लोक सिधाए,
नत मस्तक हो चरणों में, श्रद्धा के सुमन चढाए ॥टेर॥
जीवन था कैसा पावन, सावन सी बरसती वाणी,
जन जन के मन को मोहा, त्रिभुवन के थे कल्याणी,
लाखों के प्राण तुम्ही थे, कहो कैसे तुम्हे भूलाएं ॥1॥
चरणों में आश्रय पाते, एक क्या लाखो प्राणी,
अवनी अम्बर गूजेगी, तप त्याग की भव्य कहानी,
विघटन की आंधी में भी, समता के दीप जलाए ॥2॥
वर्ष 14 गुरुवर बीते, दर्शन बिन रह गये रीते,
वनवास मिला जीवन भर, गम के पल कैसे बीते,

नयनो से अश्रु छल के, अब झलक कहाँ वो पाये ॥3॥
तेरी निर्मल प्रज्ञा ने गुरु राम दिया है हमको,
आशीष बरसाते रहना, विकसाने सघ उपवन को,
हर कदम पे साथ हो रहना "इन्द्र" राम की महिमा बढाए ॥4॥

❋❋❋

नाना-गुरु दु:ख भंजन

तर्ज : होठों से छू ....

अतर से करे सुमिरण, गुरु देगे तुझे दर्शन
झुकजा श्रद्धा से दिखे, नाना गुरु दु ख भंजन ॥टेर॥
जिसने भी लगाया है विपदा मे ध्यान तेरा,
खैवया बन खैया काटा भव-भव फेरा,
बदला है जीवन उसका, आया ले तेरी शरण ॥1॥
निर्लेप हो जग से पर, परवाह करे दुनियाँ
लीनी है कितनो की, खबर आए दुखिया
भक्ति मे रग दिया, भक्तो का अंतर मन ॥2॥
दुर्दिन सब दूर हुए, महर की नजर पडे
हंसते हसते ले लो शरण,कर्मो से ऐसे लडे
"इन्द्र" करे नाज तुझपे, हो मेरे जीवन दर्पण ॥3॥

❋❋❋

सूरज तूं क्या संदेशा लाया

दीक्षा-पर्व (आचार्य श्री नानेश)

तर्ज : दीदी तेरा....

सूरज तूं क्या सदेशा लाया, दीक्षा पर्व पे मैने बधाया,
तिरण तारण प्रगटा गुरु नाना, आज हर्ष से मैंने बधाया ॥टेर ॥

भोली भाली माँ श्रृंगारा आई,
नाना को ले सग कैसी हर्षाई
गली गली में रंग क्या छाया ॥1॥

उजली है आठम उज्ज्वलता लाना,
वरद हस्त तू गणेश का पाना,
आम्र तरुतल भी मुस्काया ॥2॥

गुरु मिले हस्ती, संयम में थी मस्ती,
कर कर सेवा तूं पाया है शक्ति,
फिदा हुए देव भी दीवाना ॥3॥

विरह वेला ''इन्द्र'' कितनी चलेगी,
राम सी गुरु भक्ति कैसे मिलेगी
बदनावर मे गीत सुनाया ॥4॥

***

दीवड़लो चमक रह्यो

तर्जः नखरालो देवरियो.....

दीवडलो चमक रह्यो, कपासन रे आंगण में
आंगन में हुक्म शासन मे ॥टेर ॥

अखण्ड ज्योति या दीवडले री, लाखो दीप प्रगटाया
बुद्धाण बोहयाणं पद ने, साचो करी बताया,
त्रिभुवन मे जय-जयकार ॥1॥

आम्रतरूतल दाता ग्राम सु, मा श्रृगारा आई
निज हाथा सु गणेश गोद मे, लाल ने दे हर्षाई
आशीष तो हो गई साकार ॥2॥

हु शि उ चौ श्री ज ग मिल, माला मे पिरोया मोती
सातो सूरज देखो कैसी, भरदी अद्भुत ज्योति
केसर री हुई है उछाल ॥3॥

काई-काई बाता होसी अनोखी, ''इन्द्र'' अचरज आवे
स्वप्न अधूरो राम राज्य रो, राम रोशनी लावे
घणो तपसी गवरा रो लाल, हुक्म शासन मे ॥4॥



नित उठ नाना गुरु के चरणे

तर्ज : चांदी की दिवार

नित उठ नाना गुरु के चरणे, करले रे बदे वंदन,
वदन ही क्या कोटी भवो के, टूट जाये तेरे बधन ॥टेर॥

दिव्य दिदार के दर्श से, दु खडे दूर हो जाये सारे,
दीन बधु बन शरणार्थी को भव सागर से उबारे,
नर ही क्या तरसते देव, करने चरणो का अर्चन ॥1॥

बोधी सत्त्व पा वन स्थली बीच, अन्तर तिमिर को हटा दिया,
कर कुरबानी जीवन की गुरु, अन्तर आशीष पा लिया,
हे योगीश्वर युग प्रवाह मे, हो गये जन मन दर्पण ।।2।।

चारो तीर्थ है जिनके चरणे, सघ के सुन्दर अधिनायक,
पीर हरी भक्तो की सुमरते, सेवक के है सुखदायक,
कथनी नहीं पर करणी से करते, निज शासन फिर अनुशासन ।।3।।

''इन्द्र'' कहे है अन्तर्यामी हो जाये गर महर दृष्टि,
ज्योतिर्पुज बन निज जीवन में, जानूं अन्तर से सृष्टि,
भूल न सके अहसान तुम्हारा, जब तक चन्द्र रवि गगन ।।4।।



आज महोत्सव आया

तर्ज : सावन का महीना

आज महोत्सव आया युवराज हुए गुरुराज,
16 वर्ष में देखो चमका दिया जैन समाज ।।टेर ।।

कैसी गजब की है मधुमय वाणी,
जिनवर सी लागे हमें अति कल्याणी,
हिलमिल के गुण गावे नानेश गुरु के आज ।। 1।।

छोटी सी उम्र में है संयम लीना,
लाखों भव्यों को आबाद कीना,
भरा हुआ है इनकी आशिषों में सुख साज ।।2।।

लोगो की इनमे अपार श्रद्धा भक्ति,
शरण मे आके इनकी बढती है शक्ति,
सस्कृति के रक्षक सुधारा जैन समाज ॥3॥

सघ के सिरताज जो है यशशाली,
आशीष दीनी गजानन्द भाग्यशाली,
चरण शरण मे रखले ''इन्द्र'' कहे गुरुराज ॥4॥



ॐ जय संघपति देवा

तर्ज : ॐ जय जगदीश हरे....

ॐ जय सघपति देवा, हो स्वामी जय सघपति देवा,
करने शरण मे आये, चरण कमल सेवा ॥टेर॥

जग उद्धारक त्राता आये इस युग मे -हो स्वामी
सारथी इस जिन रथ के, बन गये सचालक ॥1॥

शृगारा जननी ने, अद्भुत सुत पाया, हो स्वामी
तुम सम और न ज्ञानी, कलियुग मे आया ॥2॥

बाल्यवय मे सयम, सर जीवन पाया, हो स्वामी
महा पुण्य उदय से, गणपति मन माया ॥3॥

मिथ्या मद को मोडी, सेवा मन्त्र साधा, हो स्वामी
पूर्ण गुरु की कृपा से, अष्टम पद पाया ॥4॥

तुम सम सघ प्रतिपालक, नही ओर नजर आवे
एक ही आण मे शिक्षा, दीक्षा करवाये ॥5॥

सुबह शाम मन वच से, जो गुरु गुण गावे, हो स्वामी,
''इन्द्र'' कहे उस जन के, पातक झड जावे ॥6॥



दिखलादो कोई गुरुवर की डगर

तर्ज– ए मां तेरी सूरत...

दिखलादो कोई गुरुवर की डगर, अहसान तुम्हारा मानूंगी
है देव ! कहो समता सिंधु की बूंदे कब मैं पाऊगी-2 ॥टेर॥

सूरज से सूरत का क्या वर्णन हो सकता,
फूलो सा कहूं कैसे देखा वह मुरझाता,
किसने देखा ऐसा मानव हो ऽऽऽ-2,
हरदम समता की करता सफर ॥1॥

मतलब क्या मस्तक का जो गुरु सन्मुख ना झुकता,
स्वर्णिम समय मानो तुम गुरु सेवा में लगता,
तू हटना कभी अपने पथ से हो ऽऽ एक दिन,
बरसेगी जरूर महर ॥2॥

आपद में जिसने तेरा गुरु ध्यान लगाया है,
क्या ऐसा कोई है जग में ना ध्यान से पाया है,
चातक सी आस्था होवे अखंड हो ऽऽऽ-2,
मेघमाली की होगी तुझ पे नजर ॥3॥

''इन्द्र'' दीप जला है जिससे समकित का कहूं गुरु से,
नत मस्तक हूं चरणों में, क्या कसर रही मुझ से,

श्री राम दिखा दो कुछ तो महर हो ऽऽ-2,
फिर दुनिया से कोई है न उजर ॥4॥



मंगल आरोग्य-कामना

तर्ज : जरा सामने तो...

मेरी सुन लो अन्तर की भावना, सविनय करते प्रभु से प्रार्थना,
जुग-जुग जीओ गुरु मेरे नाना, जिनकी तपो निरन्तर साधना ॥टेर॥

कोटि-कोटि का है रखवाला, मा श्रृगार का लाला,
वनमाली सम सुसिचन कर, उजडे चमन का प्रतिपाला,
सुविचारणा सयम की महान् है, पथ पे कभी न दिखता विराम है ॥1॥

निस्पृहता है उनको जगत से, भक्तो के है जीवन प्राण,
मात्र दीदार के दर्शन से ही हो जाते है दुखियो के त्राण,
गुरु चरण धरा का आधार है, नही मिलता गुणो का थाग है ॥2॥

बिन्दु सी अर्जी को कृपालु, सिधु सम स्वीकार करो,
वाछित हूँ सेवा से सुरभि, स्वास्थ्य लाभ की गुरु में भरो,
''इन्द्र'' धन्य हुआ अवतार है, गुरु सेवा मुक्ति का द्वार है ॥3॥



याद करते नानेश का जीवन

तर्ज : ए मालिक तेरे....

याद करते नानेश का जीवन, भर आते मेरे नयन,
बन गये थे तारण-तिरण ॥टेर॥

भरे कांटो के पथ पे चले, राहो मे हो पत्थर भले,
अन्तर की रटन, नही कोई दुश्मन, महावीर सा ही रहा चिन्तन ॥1॥
चार तीर्थ के गुरु थे त्राता, गाभीर्यता भी कह न पाता,
ज्ञान कितना गहन, क्रिया का मथन, नलिनी नीर सा था मनन ॥2॥
''इन्द्र'' दया क्या गुरु की गाऊं, नही ऐसी अवर मै पाऊं,
याद जब-जब करें, झोली मेरी भरे, दे दो कृपालु हमे दर्शन ॥3॥



हो म्हारे संघ में दो भगवान्

तर्ज– मेरे नाना गुरु भगवान्

हो म्हारे संघ मे दो भगवान्, जय गुरु नाना जय श्री राम
उठत बैठत सोवत म्हारे इण रो ही आधार ॥टेर॥

गुरु कृपा सु बरसे म्हारे, सुख री अमृत धार
इण ने जाणे सब संसार, जय गुरु नाना जय श्री राम ॥1॥
सत्य अहिंसा अस्तेय, ब्रह्मचर्य रा धारी
दूर दूर फैली है कीर्ति, ज्यांरी जग मे भारी
पाले प्रभू री पूरी आण, जय गुरु नाना जय श्री राम ॥2॥
कांई लेणो है याने जग सूं, सोचे बस ही देणो
समतामय बने विश्व बस, एक मात्र है कहणो
सुमरो संकट में सुजान, जय गुरु नाना जय श्री राम ॥3॥
सति ''इन्द्र'' कहे एक मात्र है, गुरु श्रद्धा रो स्थान,
दृष्टि कृपा री रखजो गुरुवर, अर्पण तन मन प्राण,
नही मिले गुरु बिन जग मे ज्ञान, जय गुरु नाना जय श्री राम ॥4॥

तुम्हीं मेरे गुरुवर

तर्ज : तुम्हीं मेरे मंदिर

तुम्ही मेरे गुरुवर, तुम्ही मेरे प्रभुवर, तुम्ही हो विधाता-2,
शिक्षा का पाठ गुरु, तुमने पढाया कि तुम ज्ञान दाता।
तुम्ही मेरे गुरुवर ॥टेर॥

गुरु तुझमे ज्ञान का, सागर समाया,
मेरे सग चले तेरी, करुणा का साया-2,
भटक जाऊ मै, राह में कभी तो,
अपना समझ मुझे, रास्ता दिखाना ॥1॥

गुरु तुम सारे जग से निराले,
भक्तो के सारे दु ख, तूं ही संभाले-2,
खाली झोली जो तेरे द्वार पे आये,
मिल जाय उसको खुशी का खजाना ॥2॥

गुरु मैने भक्ति डोर, बाधी है तुझसे,
सासो के रहते कभी, रूठना ना मुझसे-2,
मेरी हर खता को, माफ कर देना,
तुमसे मेरी गुरु, हे यही प्रार्थना ॥3॥

❋❋❋

आ व्यथा विरह री

कार्तिक वदि तृतीया आचार्य श्री नानेश

तर्ज : आ बाबासा....

आ व्यथा विरह री, अब तो म्हांसु सही न जावे रे,
सही न जावे, श्रृगार नंदन री याद दिलावे रे ॥टेर॥

सादी अनंत समकित रो, दिवडो घर-घर प्रगटायो रे,
जीवण जीणे रो मर्म भारी, जणा-जणा ने समझायो रे,
जर्जर नैया अधबीच मे, कुण पार लगावे रे ॥1॥

सागर सो गंभीर सुमेरु सो सयम समीचीन पाल्यो रे,
पी घूट विष रा अमृत रस संघ में बरसायो रे,
एक-एक समता री बात्या याद आवे रे ॥2॥

प्रज्ञा सिंधु री प्रज्ञा रो थाह, नर क्या देव न पावे रे,
सींच-सीच हुक्म गुलशन ने, देखो कांई खिलावे रे,
दिव्य तपोधनी गंवरा रो नंदन, महक महकावे रे ॥3॥

कर्मठ सेवाभावी गुरणी, आज ही स्वर्ग पधार्‌या रे,
बैठा आसरो लिया मैं थारो, थें म्हाने छिटकाया रे,
गुर-गुरुणी री स्मृति सुं ''इन्द्र'' रो दिल दहलावे रे ॥4॥



कृष्ण पक्ष का अंधियार

कार्तिक वदी तृतीया आचार्य श्री नानेश

तर्ज : मैया मेरी है..

कृष्ण पक्ष का अंधियार, छुट गई अश्रुधार, हमें याद रखना,
कैसा कर गया उद्धार, माँ श्रृंगार का लाल, रामेश देके अपना ॥टेर॥

गमगीन हो गये थे कैसे जीयेंगे, हाँ कैसे रहेगे,
कहो कैसे सहेंगे, हाँ भूल न सकेंगे, पेपकवर जी मझधार,
छोड चले यही वार, हमें याद रखना ॥1॥

सासो मे भरी थी वीर-वाणी, तिराये प्राणी, जो थे अज्ञानी,
दया दिल आणी, समता सिधु था अपार,
गरल पी दे अमृत धार ॥2॥

दोनो खैवयो ने दिन एक छोडा, मुखडा था मोडा,
हॉ नेह भी तोडा, मुक्ति मे जोडा, फिर भी मानेगे उपकार,
दिया रामेश कर्णधार ॥3॥

चारो तीरथ ने ''इन्द्र'' याद दिलाई, गुजारिश गाई,
कृपा करो राई, संथारा पे आई, केशर कवर जी महाराज,
तुम्हे याद करे आज ॥4॥



जिनशासन रो है रखवाल

चादर दिवस आचार्य श्री नानेश

तर्ज : म्हाने गंगाजी रो पाणी....

जिनशासन रो है रखवाल, माता श्रृगारा रो लाल,
चादर दिवस पे याद, घणो-घणो आवे ॥टेर॥
लाखो जनता रे बीच गुरु, गणेश चादर ओढाई,
महक केशर री काई महकी, सारी सृष्टि चकराई,
अखड नंदी-सूत्र रो पाठ, म्हारे सघ मे लगायो ठाठ,
हो ज्यारी महिमा, सुर नर मिल गावे ॥1॥

पाट विराजता ही बादल, सघर्षा रा घिर आया,
समीर गति सुं चट्टाना ने, तोड-तोड आगे आया,

अन्तर्यामी साचा श्याम, दे गया वीरवर गुरु राम,
हुक्म गादी रो यो चांद, निखरतो ही जावे ॥2॥

चर्म पादुका तन की कर-कर, गुरुवर थाने पेरावां,
मुक्त न होवा ''इन्द्र'' कहे मै ऋण सुं, गुण गौरव गावां,
आओ आओ एक बार, थांने याद करे दरबार,
गुलशन थांरो राम गुरुवर महकावे ॥3॥



गुरुदेव है महान्

तर्ज : आराम है हराम....

गुरुदेव है महान्-2
संयम की साधना में, तप की आराधना में
जीवन के ज्वाला पथ पर, जो रहते हैं सावधान ॥टेर॥

प्राणीमात्र की रक्षा का है, दुष्कर व्रत अपनाया,
जीवन की हर एक गति मे, उसको पूर्ण निभाया,
हिंसा का किया शमन है, उपशान्त हुआ जीवन है,
मन, वाणी और कर्म सभी से, करे अभय का दान ॥1॥

झूठ और चोरी से कलुषित, करते नही स्वयं को,
स्वार्थ और छलछन्दों से जो, भरते नही जीवन को,
रहते जो नित्य सरल है, निज नियमों मे निश्चल है,
नही स्वप्न में भी प्रमत्त हो, जो होते बेभान ॥2॥

नवबाडों से ब्रह्मचर्य का, पालन जो कर पाते,
मार्गभ्रष्ट हो जिनशासन का, बाना नही लजाते,
भण्डार शील के होते, सब मैल हृदय के धोते,
इनके पावन-दर्शन मे हो, प्रकटे स्वय भगवान् ॥3॥

ससारी सम्बन्धो का है, सूत्र हृदय से तोडा
और किसी से क्या लेना, जब अपना सब कुछ छोडा
निज आत्मभाव मे रहते, नही जग-प्रवाह मे बहते
नही चाहिए इन्हे किसी का, धन जन और मकान ॥4॥

बहा जा रहा आज विश्व, है छोड धर्म की निष्ठा,
फिर भी जो अविचल रखते है, निज मे धर्म-प्रतिष्ठा,
जीवन आदर्श बनाया, जिनशासन को चमकाया,
इसीलिए इनके चरणो मे, झुकता मस्तक आज ॥5॥



समता के शुभ संकल्पों से

तर्ज : उडते पंछी....

समता के शुभ सकल्पो से, जीवन धन्य बनाये
सब समतामय बन जावे।
विषमता युत विषम विश्व मे, समता स्यन्द बरसाये, सब
भव्य भवन समता का जिसमे, आत्मा आनन्द पाये,
विशाल वट वृक्ष सी समता, शीतल समीर बरसाये,
करो आराधन समता का सब शाति सरवर पाये ॥1॥

अतुल सुख सम्पन्न समता का घट-घट मे भर आवे,
परिवार क्या सारे राष्ट्र से स्वारथ दंभ भगावे,
सत्य धर्म अरू सत्य गुरु की शरण जन मन भावे ॥2॥

सौम्य दृष्टि सूरज सी सृष्टि सकल संघ के स्वामी,
सरस्वती समता की देते, शासन के सिरनामी,
तरुण तपस्वी नाना शरण में, समता सुमेरू पाये ॥3॥

एक बार प्रभु पुनीत चरण में, सेवक बन कर आवें,
समता ही क्या सत्य शिवं सुन्दर जीवन बनायें,
''इन्द्र'' समतामयी बन इक दिन शिवपुरी पंथ सीधायें ॥4॥



जिनधर्म की फली फूली फूलवारी

तर्ज : पूज्य हुक्म गुरु

जिनधर्म की फली फूली फूलवारी,
सिंचन करता हो नाना गुरुवर उपकारी।

महा-महर्षि हुक्म मुनीश्वर, निकल पडे जग-वैभव तजकर,
शुद्ध संयम पाली ने मेटी शिशिलाचारी ॥1॥

शिवलाल प्रभु शास्त्र-विख्याता, उदयसागर महा प्रख्याता,
श्री चौथ चारों तीर्थ में अवतारी ॥2॥

पूज्य श्री का चम-2 चेहरा, घोर ब्रह्म तेज है धारा,
सुरनर मुनिवर नमे चरणारी ॥3॥

युग दृष्टा है जवाहर प्यारा, हो गया भारत का सितारा,
दया दान रो मर्म समझावे भारी ॥4॥

उदियापुरी का गजानन्द कैसा, दिया शिष्य कल्पतरुवर जैसा,
गुरुवर नाना सकट मोचन हारी ॥5॥

अहिल्यापुरी गुरु आण से आया, चार मास पचठाणो ठाया,
"इन्द्र" धर्मध्यान हुयो श्री सघ मे भारी ॥6॥



ओ शासन में चमक रहे गुरु नाना

तर्ज : ओ साथी रे....

ओ शासन मे चमक रहे गुरु नाना-2
संत और सतियो मे, भक्तो की लडियो मे,
चन्दा सम सोहे गुरु नाना ॥ टेर ॥

हुक्म शासन, खिलवाया तूने, सौरभ फैली नभ मडल मे,
भक्तो की पीर को सुनने वाला, इस दुनिया मे प्रभु जी तू है,
गायेगा जो गाना, भव-भव से तिर जाना सुख सपत्ति हो पाना ॥ 1॥

धन्य शृगारा, तुझसे पाया, गणेश गुरु का वचन निभाया,
शिक्षा-दीक्षा, शुभ समीक्षा, अनुशासन ऐसा कही न पाया,
दुनिया ये भूले ना, चरण ये छूटे ना, जय-जय हो गुरु नाना ॥2॥

भूले भटके हम ससारी, समकित सघ मे प्रभु जी सजाना,
विषयो की भूखी दुनिया हमारी, नैया तो भव से पार लगाना,
पाखड मिटा देना, समता दे देना, "इन्द्र" सुधरेगा जमाना ॥3॥



श्रद्धा से नाना गुरुवर की आरती

तर्ज : तजके पराई चिन्ता....

श्रद्धा से नाना गुरुवर की आरती,
हर्षित हो उतारे माँ भारती ॥टेर॥

मनुज अवतार तेरा सफल हुआ स्वामी,
इक ही लगन है कैसे मिले अन्तरयामी,
निगूढ ध्यानी के गुण का पार न पाती ॥1॥

लाखों अजैनी को जैनी बनाया,
प्रभु वीतराग का धर्म दर्शाया,
धन्य शृंगार माँ दुनिया पुकारती ॥2॥

संकट में नाना नाम ले जाता,
कार्य पूर्ण कर नर घर आता,
सोहनी सूरत कभी न भूलाती ॥3॥

इक ही अर्ज सुनलो सांवरियां,
तेरे चरण में जीवन बावरियां,
अंतर आशीष ''इन्द्र'' गुरुवर से चाहती ॥4॥



नाना गुरुवर शरणे ले लो

तर्ज : लकडी की काठी

नाना गुरुवर शरणे ले लो,
ले लो ले लो ले लो शरणे ले लो ॥टेर॥

सुना है जादू ऑखो मे, भर दो मन की पॉखो मे,
दुनियॉ से घबरा के सयम लेने आये है ॥1॥

चरणो के पुजारी है, फिर भी क्यो भिखारी हैं,
पूरण दानी सयम के, दान मॉगने आये है ॥2॥

जो भी दर पे आया है, आश पुराया है,
मोहनी मूरत से सुरभि लेने आये है ॥3 ॥

माफी गुरुवर फरमाये, ये बालाएं सुनाएं,
ससार से पिण्ड छुडा ''इन्द्र'' चरण पहुॅचावे ॥4॥



थे तो बोलो-बोलो नाना

तर्ज : कीजो-कीजो....

थे तो बोलो-बोलो नाना गुरु री जय,
भक्ति मे तन्मय, गावो सभी इकलय,
नाना गुरुवर री-2, हो गुरुदेव-2
अमृतवाणी मुख सु बरसे, सुणवा जीवडो मारो तरसे,
नाना गुरुवर री-2, हो गुरुदेव-2 ॥टेर ॥

थे तो हो समता-सिन्धु, समता री शानी,
भूल्या भटक्योडा जग मे, मै हा अज्ञानी आ ऽऽऽ,
चरणा री सेवा किस विध पास्या,
जद मै अन्तर प्यास बुझास्या, नाना गुरुवर री ऽऽ-2
हो गुरुदेव-2 ॥1॥

बिना गुरु री भक्ति, जीवन बेकार है,
नरतन पावण रो सांचो, यो ही एक सार है, आ ऽऽ,
हार्‌या जग सुं मै तो नाथ, थे हो सुणजो दीनानाथ,
नाना गुरुवर री-2, हो गुरुदेव ऽऽ ॥2॥

जीवन जीणो कियां म्हाने सिखावों,
नलिनी सम नीर में रहणो बताओ,
मुखडो चमके पूनमचंद, दर्शन कर्‌या दूर हो द्वन्द्व,
नाना गुरुवर री-2, हो गुरुदेव ऽऽ ॥3॥

करणी में कसर देखो, माफ करी जो,
''इन्द्र'' कहे अन्तर्यामी, सुपनो पूरी जो आ ऽऽ,
अ़रजी युवाचार्य श्री ने आज, जो है शासन रा सिरताज,
नाना गुरुवर री-2, हो गुरुदेव ऽऽ ॥4॥



थे तो सुमरो सुमरो

तर्ज : थे तो बोलो...

थे तो सुमरो-2 श्रृंगारा नंदन ने,
गवरा रे नंदन ने, दुःख निकंदन ने,
अन्तर भावां सुं, अविचल भावां सुं।
जिन नही पण जिण सा प्यारा,
तिन्नाणं और तारणहारा,
अन्तर भावा सुं, अविचल भावा सुं।

1. मेवा मिश्री रो स्वाद, भाई क्षणिक है,
अमृत रस रो कदियन अन्त है, हो ऽऽऽ-2,
आवे चरणा मे एक बार, वो तो आसी बार-2,
अन्तर भावा सु, अविचल भावा सु ॥
2 वाणी वीतराग री साची सुणावे,
स्वामी सुधर्मा रो, पाट दीपावे ऽऽऽ-2,
अजब गजब रो आगम ज्ञान,
गाभीर्य सागर सो महान। अन्तर
3 इन्द्र अहर्निश एक ही रटना,
हुक्म शासन को खूब ही बढाना हो ऽऽऽ-2,
लाखो आये आधी तूफान,
अर्पण होवे तन-मन-प्राण,
अन्तर भावा सु ॥



नाम नाम नाम नाना

तर्ज : मार दिया जाय

नाम नाम नाम नाना गुरुवर का नाम
रटले रे बन्दे सुबह अरू शाम ॥टेर॥

नही कोई है जग मे अपना, ससारी के झूठे सपना
बस तेरा ही नाम, मेटे पाप तमाम ॥1॥

जब से पाया है सम्बल तेरा, कट जायेगा जन्मो का फेरा
गाये तेरा जो गान, पावे शिवपुर का धाम ॥2॥

जननी हो गई है जग मे हजारा, वंदनीय है मा-श्रृंगारा
शिक्षा दीक्षा एक आण, पूरे गणेश अरमान ॥3॥

हो जाए तेरी महर दृष्टि, जान जाऊं मै ज्ञान से सृष्टि
माने तेरा अहसान, दिया संयम सुदान ॥4॥

दुनियॉ हो गई है भक्ति दीवानी, वीर प्रभु की सच्ची निशानी
'इन्द्र' जपे नाना नाम, सुख पाये आठों याम ॥5॥



जाता रे जाता

तर्ज : कांची रे कांची रे...

जाता रे जाता भव सागर तिर जाता,
आता चरणों में एक बार रे हो ऽऽऽ ॥टेर ॥

कर दिखलाया तूने कैसा कमाल
छोड दिया जान जग मिथ्या जंजाल
बोधी बीज दाता गणेश गुरु से बोधि पाये चरणार रे ऽऽ॥ 1॥

वीर प्रभु का तू सच्चा अवतार
चमकाया शासन क्षमा को धार
व्रज सम कठोर नवनीत सम कोमल, करे कर्म प्रतिकार रे ऽऽ ॥2॥

गायेगा जग कोटि कंठो से गान
भक्तो को तेरा है अभिमान
शरण में आवे, मुक्ति राह बतावे, देता संयम उपहार रे ऽऽ॥3॥

महक महकायी तूने, दुनियां में आय,

ज्ञान दिया मिटाने पाखड काज,
एक बार आवे ''इन्द्र'' मुक्ति मजिल पावे, नाना पतित पावन हार रे ॥4॥



संकट विमोचक

तर्ज : तुम्हीं हो माता-पिता....

सकट विमोचक नाना गुरु का,
सुमिरण तू करना हृदय मे रखना ॥टेर॥

छाया है जग मे घोर अधियारा
दीपक प्रगटा धन्य श्रृगारा,
गणपति शासन खूब ही चमकाना ॥1॥

अमृतमय है गुरुवर की वाणी,
झूम गई भक्ति मे दुनिया दीवानी-2।
गुण सौरभ की महक महकाना ॥2॥

तुमसा नही कोई वीर का प्यारा,
दूर किया जग सशय सारा-2
दर्शन करे जो न कभी भुलाना ॥3॥

कौन है कह दो जग तारण हारा,
दीनानाथ बन करे उद्धारा,
दावे से कहूँ 'इन्द्र' जय गुरुनाना ॥4॥



मिलके गाना

तर्ज : इचक दाना...

मिलके गाना दिल से गाना गुरुवर के गुण गाना,
जय गुरु नाना।
हु शि उ चौ श्री जग नाना, दर्शन कर हरसाना ॥1॥
छोटा सा नाम है, लगता न दाम है,
जय गुरु नाना, जय गुरु नाना, रटना सुबह शाम है,
दिन में गाना, रात में गाना, हर पल रटते जाना ॥2॥
तन के तंदुरे में, जितने भी तार है,
बिना गुरु सुमिरण, यूं ही बेकार है।
सुख में ध्याना, दु.ख में ध्याना, भक्ति में खो जाना ॥3॥
करेंगे कल्याण ये तो, करुणा निधान है,
सच्चे गुरु नाना मेरे, समता की खान है।
वन्दन करना, शीष झुकाना, मौका चुक न जाना।
जय गुरु नाना ॥4॥



ए कुण आया हो

तर्ज : काली-काली काजलिए....

ए कुण आया 3 हो''
मॉ श्रृंगारा रे आंगणे जी-2
सिंहासन सारी सृष्टि रो डोलियो
कोई धरती पर गुरुवर आविया जी
हिवडा मे, हरख घणो-2

ए तो नाना नाम धराया जी-हिवडा ।।टेर ।।
ए कुण आया धर्म रो, डको बजावता जी-2
धर्म री ज्योति जगाई, पाप मिटावता जी-कोई धरती
ए कुण आया, समता रस, बरसावता जी-2
धर्मपाल बणाया व्यसन मुक्त, करावता जी-कोई
ए कुण आया, प्रेम रो, अमृत घोलता-2
झूम रहया नरनारी महिमा गावता जी-कोई



गाते रहेंगे गुरुवर

तर्ज : जनम जनम का दास...

गाते रहेगे गुरुवर महिमा तुम्हारी, ये महिमा तुम्हारी,
भाव भक्ति के भरे भजन मे, लेना स्वीकारी ।।टेर ।।

घोर निशाए जीवन की, ज्योति जलाई,
स्वार्थ भरे संसार मे, सच्ची राह दिखाई,
छटा दर्श की दूर कर दे, दुविधाए सारी ।। 1।।
कल्याण कामना कितनी कैसे कहेगे
मन के मनोरथ मेरे मन मोहन पूरेगे
पतवार बनकर खेते नैया जो भी रहे पुकारी ।।2।।
निष्ठा निरन्तर नाना नाम पे पुण्य प्रगटाते
करणी के फल कैसे देखो युवाचार्य श्री पाते
अभिराम बने है राम जगत मे, शासन के सुखकारी ।।3।।

झुकते बादल देख गगन के, मयुर मन खिल जाते
सीप से ये नयन कटोरे, दर्श बिन्दु चाहते
'इन्द्र' कहे मोतीवत् चमके भाग्य चन्द्रिका भारी ॥4॥



भक्ति में विभोर हो

तर्ज : तन के तंदुरे में...

भक्ति मे विभोर हो-2 भक्तों का दिल बोले
जय गुरु नाना-जय, जय गुरु नाना ॥टेर॥
जब से गुरु मेरे जीवन में, हुआ है समकित उजेला-2
तब से ही हो गया है मानो, भव जल से किनारा-2
सावन सी हरियाली ऽऽ-2 मयूर सा मन डोले ॥1॥
गुरु चरण की देखो हो गई, दुनियां सारी पुजारी-2
श्याम सलोनी मूरत कैसी, देवो को भी प्यारी-2
सुरीली शहनाई ऽऽ-3 वाणी में अमृत घोले ॥2॥
मान सरोवर सा हंस बन, चुगले सच्चे मोती-2
कृपा होती जिस पर गुरु की, जलती जगमग ज्योति-2
कांच के टुकडे तज ऽऽ-3 हीरे ले अनमोले ॥3॥



आओ आज चादर दिवस

तर्ज : जन्म जन्म का दास....

आओ आज चादर दिवस मनावे, हम दिवस मनावे-2
अभिनन्दन कर गुरु चरण में श्रद्धा सुमन चढावें ॥टेर॥

गुरु गणेश के गुण गौरव को याद करे नर नारी
ललकार दी है श्रमण सस्कृति की सूरज गौखडे भारी
बढो निरन्तर नानेश वर्धमान वर पावे ।।1।।

चादर ओढी केशरी सिह सम गाजे,
छटा देख रहे चारो तीरथ समोशरण मे छाजे,
समीक्षण ध्यान आज आसन देवो के हिलावे ।।2।।

प्रभुजी मेरी पुरो चरण कमल की कामना
अमरासन हो शासनेश का 'इन्द्र' भावे भावना
बदले दशा देश की दुनिया दिशा राम से पावे ।।3।।



समता रो सुंदर नांद गुंजायो रे

तर्ज : ढोला ढोल..

समता रो सुदर नाद गुजायो रे-2
देश विदेश मे नाना गुरुवर डको बजायो रे ।।टेर।

हे वीर प्रभु री साची शिक्षा दुनिया ने सुनावे,
काम क्रोध तज सत्य री महिमा जनता ने समझावे,
रेवे आडम्बर सु न्यारो रे ।।1।।

निज शासन फिर अनुशासन री देखी अनोखी बात,
एक आण मे चाले चारो तीरथ है प्रख्यात,
पल-पल पायो चमत्कारो रे ।।2 ।।

अन्तर सुं सुमिरण करता ही पडतो परचो भारी,
आंधा ने तो आखियां दीनी, डुबोडा ने तारी,
सांवरियो म्हारो न्यारो रे ॥3॥

सतों में श्रेष्ठ सन्त, श्रृंगार मां रो जायो,
महावीर री आज्ञा रो है, पूरण धर्म निभायो,
'इन्द्र' संकट पड्या पुकारे रे ॥4॥



हर्षित हो रहे हैं मरुधर वाले

तर्ज : धरती धोरा री...

हर्षित हो रहे हैं मरुधर वाले, पधारे शासन के रखवाले
जन-जन के उजियारे,
हम जय-जय बोलेगे, गुरुदेव तुम्हारी ॥टेर॥

गंगासिंह दरबार का, क्षात्र तेज था भारी-2
परवाह न की पुत्र की, प्रजा के हितकारी-2
जूनागढ की हो ऽऽ पवित्र भूमि पे, गुरु ने विनति स्वीकारी ॥1॥

धूम मची थी नगर में सबको हर्ष अपार-2
मुनि प्रवर को सौंप दिया शासनेश ने भार-2
चमके चादर हो ऽऽऽ बनो, उजागर खिल गई केशर क्यारी ॥2॥

नवम् नक्षत्र नभ में, नयनो के अभिराम-2
चरण पडेंगे जहाँ तेरे, होंगे तीरथ धाम-2
शास्त्र वेत्ता हो ऽऽ तपो विजेता, कर्म शत्रु संहारी ॥3॥

उमड घुमड सरिता सारी, सागर मे समाय-2
बसन्त खिलेगा भाग्य का, कोयल से हर्षाय-2
'इन्द्र' गावो हो ऽऽऽ, इन्हे बधावो अर्पणा कर दे सारी ।।4।।



हीरो पायो नाना गुरुवर

तर्ज : म्हारे लेरिये रा नो सो रूपिया...

हीरो पायो नाना गुरुवर रे नाम रो जी,
ओ तो नही है अज्ञानियां रे काम रो जी ।।टेर।।

म्हारे आगणिये गुरुसा पधारिया जी,
तीरथ करिया मै तो चारो धाम रा जी ।।1।।
म्हारे सिर पर गुरु सा रो हाथ है जी,
म्हाने मुक्ति ले जासी आपरे साथ मे जी ।।2।।
म्हारे ऊपर गुरुसा री मेहरबानी,
नाना गुरुवर रा, दुनिया मे नही सानी ।।3।।
गुरु री सूरतिया लागे है सुहावणी जी,
दरसन करवा आवे है लाखो नर नारियॉ जी ।।4।।
जैन धर्म री रक्षा खातर, बण्या ढाल जी,
हु शि उ चौ श्री जग मे नाना लाल जी ।।5।।



चहुँ ओर गगन में गूंजा दिया

तर्ज : महावीर जयंति

चहुँ ओर गगन मे गूजा दिया, सब शोर से बोलो जय गुरु नाना,
भक्तो के मन मे समा गया, सब शोर से. . ॥टेर॥

विपदाएँ कैसी भी आये, तेरा नाम सुमरते हट जाये,
मानो काम कुम्भ सा सुख पाये, सब.... ॥1॥

समोवशरण सा ठाठ वहाँ लगता, जहाँ जहाँ तेरा चरण पडता,
रंग समता का सब मन छाता, सब... ॥2॥

गणपति ने की तेरी किम्मत, देखी अजब गजब की है हिम्मत,
नही करे कभी किसी की खिदमत, सब.. . ॥3॥

तुझसा नही मिला है गुरु अवर, इसीलिए चाहूँ मै तुझसे वर,
रहे कृपा ''इन्द्र'' पे जीवन भर, सब.. ॥4॥



सुनो आज गाते हैं

(तर्ज : बहुत प्यार करते....)

सुनो आज गाते हैं गुरु के भजन
नाना नाम ले लो, हो के मगन ॥टेर॥

चहुं ओर अंधेरा, कर्मो ने घेरा
जीवन की राहें मुश्किल, कोई न तेरा
मजिल मिलेगी आ ऽऽ गुरु की शरण ॥1॥

सच्चे दिलो से जो भी, गुरु को पुकारे
सकट निवारे उसका, दु ख भी निवारे
सद्गुरु नाना को, लाखो नमन ॥2॥

समता की ज्योति पावन, जलती रहेगी
दुनिया श्रद्धा से नाना नाम लेगी
रहेगे अमर मेरे गुरु के वचन ॥3॥



ओ दाता के देव तेरी

तर्ज : ओ बसन्ती....

ओ दाता के देव तेरी, यादो मे झूरे सघ गगन,
करुणा कैसी थी गुरु की, बरसते है मेरे नयन ॥टेर॥
छुप गये किस देश मे, बस प्रीति हमसे तोडके,
चलाया क्या चार संघ को प्रेम से हॉ जोड के,
क्यो हम तडफाते स्वामी कोटि कोटि करे नमन ॥1॥

उत्ऋण न कभी हो सकेगे, ऋण सर पर है भारी,
दिया रूप प्रतिमा का ककर को शक्ति दे सारी,
अब तो सुण लो विरह से व्याकुल, हो रहा है मेरा जीवन ॥2॥

वरं मै अप्पादतो का सूत्र रग रग मे भरा,
आया जो भी शरण उसका दु ख दारिद्र हरा,
जब भी देखा, मैने गुरु को, करते पाये आत्मरमण ॥3॥

दुर्गती कैसे हटेगी, कर गये जो नादानी,
गई सो गई अब भी "इन्द्र" कहते समझो अज्ञानी,
सुख पाओगे, जहाँ जाओगे, कर लेना तूं समकित जतन ॥4॥



पतित पावन गुरु का नाम

(तर्ज : रघुपति....)

जय गुरु नाना जय गुरु राम, पतित पावन गुरु का नाम,
कितना सुन्दर प्यारा नाम, जय गुरु नाना, जय गुरु राम ॥टेर॥

समता का संदेश सुनातें, जीवन का सद्मार्ग दिखाते,
जग उद्धारक जिन का नाम .... ॥1॥

संयम ही है जिनका प्राण, सबको देते जीवन दान,
कितना ऊँचा समीक्षण ध्यान...... ॥2॥

मूरत जिनकी ताप मिटाती, भक्तो को भव पार लगाती,
चलता फिरता तीरथ धाम...... ॥3॥

मन मोती भक्ति का पिराले, उपकार गुरु का अंतर तोले,
सति "इन्द्र" का एक ही गान..... ॥4॥



गुरु नाना के पाट विराजे

(तर्ज : देख तेरे संसार...)

गुरु नाना के पाट विराजे,हुक्म संघ की शान
जय जय गंवरा नंदन राम, तरुण तपस्वी महामनस्वी,
पावन इनका नाम ॥टेर॥

नेमीचद जी के घर जाये, मा गवरा के मन को भाये
भूरा कुल के दीप कहाये, देशाणे की शान बढाये
इनकी वाणी जन कल्याणी, मिलता आगम ज्ञान ।। 1 ।।

जम्बू वृक्ष सी इनकी छाया, पाकर श्री सघ है हरसाया,
सूरत श्याम सलोनी काया, लोचन सुदर है रघुराया
देख अतिशय जग चकराया, ज्योति पुज महान ।।2।।

खुद तिरते है और तिराते, भव सागर से पार लगाते
दुनिया का अज्ञान मिटाते, घर-घर ज्ञान के दीप जलाते
बजा दिया है व्यसन मुक्ति का, डका सकल जहान ।।3।।

क्या गाये हम इनकी महिमा, आठ पाट की पाले गरिमा,
समता की साकार प्रतिमा, अद्भुत इनकी सयम सुषमा,
प्रतिभा दिन-दिन बढती जावे, घरघर गूजे गान ।।4।।



दुनिया में हो नाम तुम्हारा

तर्ज : आव्यो छु प्रभु...

दुनिया मे हो नाम तुम्हारा, राम तुम्हारी भक्ति हो।
नाना गुरु के पट्टधर तुम तो, श्री सघ की शक्ति हो ।।टेर।।

जैन अजैन सभी को लगता, नाम तुम्हारा प्रियकारी।
ढूढ निकाली नाना गुरु ने, श्रमणो की एक शक्ति प्यारी ।।
आशीर्वाद गुरु का तुम पर, नवमे पट की ज्योति हो।
नाना गुरु के पट्टधर तुमतो, श्री सघ की शक्ति हो ।। 1 ।।

बाल ब्रह्मचारी हो तुम तो, शास्त्रों के विद्वान बडे।
कथनी और करनी से तुम तो, नाना गुरु के चित्त चढे॥
नाना गुरु की कीर्ति जग मे, दिन रात चौगुनी पक्की हो।
नाना गुरु के पट्टधर तुम तो, श्री संघ की शक्ति हो ॥2॥

सूरज चमके तब तक चमको, राम तुम्हारी जय जय हो।
हम सबकी बस यही भावना, नाम तुम्हारा घर घर हो॥
होगा राम इशारा जहाँ पर, बतला देगे भक्ति को,
नाना गुरु के पट्टधर तुम तो, श्री संघ की शक्ति हो ॥3॥

शासन की और गुरुदेव की, तन-मन से सेवा कर लो।
त्याग तपस्याओ से तुम तो, आत्मा को हल्की कर लो॥
रण कर्मो का जीतो तुम तो, विजय तुम्हारी हरदम हो।
नाना गुरु के पट्टधर तुम तो, श्री संघ की शक्ति हो ॥4॥



चाहते हो गर जीवन का उत्थान रे

तर्ज–खड़ी नीम के......

चाहते हो गर जीवन का उत्थान रे,
समर्पणा हो एक आण मे, आण हमारा प्राण रे-2 ॥टेर॥

छोड दिया जब सब कुछ चरणे, चितन को अवकाश कहां,
बढे निरन्तर कदम हमारे, होवेगा आदेश जहाँ,
शुद्ध समकित का यही मात्र निशान रे।1।

वीर प्रभु के आसन के, आचार्य देव ही अधिकारी,
पूर्वाचार्यो से जिनको, मिली भी है प्रज्ञाभारी,
स्वेच्छाचारी को न मिलता, इस शासन मे स्थान रे।2।

समीक्षणा देख देव भी, दर्शाते अपनी भक्ति,
निवेदना भी क्या करेगी, उनकी अनूठी है शक्ति,
हम तो मात्र है उनकी किरणे, वे है बुद्धि निधान रे।3।

दूरी है केवल तन की, मन हनुमत सम चरणार रे,
अविचार्य है नानेश आज्ञा, राम राज्य स्वीकार है,
''इन्द्र'' कहे सच्ची समर्पणा, ही सविधान रे॥4॥



आरती उतारूं म्हारा नाना गुरुवर री

तर्ज - गुरु अर्चना

आरती उतारु म्हारा नाना गुरुवर री,
श्रद्धा रो दीप ले हाथ, मनाऊ गुरुवर ने॥टेर॥

योगीश्वर रो ध्यान है भारी,
दौड-दौड आवे नर नारी,
हो देवता रा-2, वल्लभ आप, मनाऊ॥1॥

ब्रह्मतेज काई मुखडे रो चमके,
कीरत गुरु री दसो दिशा दमके,
थारे चरणा री-2 काई करामात, मनाऊ॥2॥

चरणरज भक्ति से लगावे,
दर आयो कदी खाली न जावे,

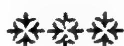
पूरो मन रा-2, मनोरथ आप, मनाऊं ॥3॥

मुरझायो संघ चमन खिलायो,
बोधि बीज दे रंग लगायो,
म्हारे शासन री, रख ली शान, मनाऊं ॥4॥

जननी एक ना अनेको पाई,
जग सु न्यारी श्रृंगार माई,
कर दिया, गजानंद कमाल ॥5॥

मान सम्मान री मन में न कामना,
वंदक निंदक सब ही समाना,
यो तो जवाहर रो, दूत गुणगान ॥6॥

सांवरिया म्हारी आश पुरावो,
जन्म मरण रा फंद छुडाओ,
''इन्द्र'' चाहे, नव निर्माण ॥7॥



गंवरा रे लाल री आरती उतारूं

तर्ज–आरती उतारूं.........

गंवरा रे लाल री आरती उतारूं,
आस्था रो-2 गुलशन हाथ, नानेश पट्टधर की ॥टेर॥

॥1॥

परमागम रा ज्ञाता भारी, विषय भोग ने दिया निवारी,
हो थारी तपस्या बडी कमाल.... ॥नानेश पट्टधर की ॥

||2||

स्वामी सुधर्मा रो पाट दिपायो, हुक्म शासन रो गौरव बढायो,
अष्ट सपदा रा भडार ||नानेश पट्टधर की||

||3||

ब्रह्मा विष्णु इन्हे ही मानू, महेश राम सम अवर न जाणूं,
श्रमणो मे श्रमण महान् ||नानेश पट्टधर की||

||4||

वीरवाणी रो मर्म बतावे, टाबरिया थारे दोड्या आवे,
मौन मागलिक रो चमत्कार ||नानेश पट्टधर की||

||5||

विश्व कल्याण की समीचीन कामना,
सागर सुमेरु सी संयम साधना, भक्ता सूं भर्यो दरबार,
|| नानेश पट्टधर की||

||6||

अर्पणा म्हारी गुरु स्वीकारो, ''इन्द्र'' भव्या ने भव सु उबारो,
काई महके संघ गुलजार |नानेश पट्टधर की||

❋❋❋

कितना सुन्दर कितना प्यारा

तर्ज - मिल के गाना.....

कितना सुन्दर कितना प्यारा मिला हमे यह नारा, तारण हारा,
जय गुरु नाना राम से गूंजे, धरती अम्बर सारा, तारण हारा||टेर||

जिसने भी गुरुमन्त्र, अन्तर मन से गाया।
गगन मडल से मानो कल्पतरु ही आगन छाया।
नयनो से जिनके बरस रही है, करुणा की धारा तारण हारा ॥1॥

जीओ और जीने दो का, जग को पाठ पढाया,
लाखों अधर्मियों को देखो, धर्मपाल बनाया,
जर्जर नैया पार लगादी, सच्चा खैवनहारा, तारण हारा..॥2॥

समता समीक्षण ध्यान का, दे जग को संदेशा,
कथनी करणी की एकता का, चितन रहे हमेशा,
विश्व शान्ति का शुभ संदेशक, मसीहा हमारा, तारण हारा ॥3॥
सति "इन्द्र" कहे पदरज ले लो बनके चरण पुजारी,
पूरे तमन्ना दिल की जो भी, दरपे रहे पुकारी,
रटना करले एक घडी तूं, भव से करे किनारा, तारणहारा ॥4॥



गुरु भक्ति में मशगुल

तर्ज : तेरी दुनियां...

गुरु भक्ति में मशगुल, श्रद्धा से भरपूर, तुम्हें करे वन्दना
पडे तेरे चरणन, ले लेना शरणन ॥टेर॥
शक्ति अनूठी भैया गुरु दर्श में, जो मस्तक धरे, भव पीडा हरे,
झोली अपनी भरे, कैसे मेरे भगवन्, करती दुनिया नमन .
तिर गये गुरु कितने तेरे ही सहारे, जो भी करता नमन
सुधरेगा जन्म, हुए पाप शमन, कर्म होते सारे चूर
मंजिल रहती न दूर .

आचार्य पद पे गुरु जब से विराजे, चमकाया शासन,
अमर आसन, वाणी मन भावन, तुम हो ज्ञान के भडार,
दु खियो के आधार
''इन्द्र'' जो ऐसा नाना नाम से मिलता, लेके जाये जो नाम
सुधरे सारे काम, सतो मे प्रधान, सुनो शृगारा के लाल,
मेरी ले लेना सभाल तुम्हे करे वन्दना



मस्तक झुका के वन्दन

तर्ज - चूडी मजा ने देगी....

मस्तक झुका के वन्दन, गुरुवर को हम करेगे,
दुनियां के है ये दीपक, हजारो दीप जलेगे ।।टेर।।

1 माता ने दे के जनम, चलना हमे सिखाया,
गुरुवर ने देके जीवन, रहना हमे बताया-2
श्रद्धा सुमन है ना कुछ, अर्पित चरण करेगे

2. श्रृगार का है लाला, शासन दिपाने वाला,
प्रभु वीर की ले शरण, समता सिखाने वाला-2,
वचनो पे तेरे अटल-2 पीछे नही हटेगे ।।

3 देखी गजब की हिम्मत, कोई न जाने किम्मत,
कभी न मन को भाती, करनी किसी की खिदमत-2
तुमसी न कोई शानी-2, कुर्बानी हम करेगे

4 प्यासी कहे ये अंखियां-2, कैसी खिलाई बगिया
''रामेश'' अब जलादो, बुझी दरस की बत्तियां-2
वो शुभ घडी सरांऊ-2, ''इन्द्र'' नानेश चरण झुके। . .



सुबह अरु शाम हो

तर्ज - तन के तंदुरे से....

सुबह अरु शाम हो-2 श्रद्धा से सुमिरण करले,
जय गुरु नाना जय जय गुरु राम ॥टेर॥

1. कितनी सुन्दर पतित पावन, मिली है सुन्दर जोडी ऽऽ
चांद सूरज सी सोहे दर्श से, कर्मों को दे तोडी-2
बसन्त ऋतु सा हो-ऽऽऽ कोयल सी भक्ति बोले....
2. ताप हरे, संताप हरे, गर संकट में जो सुमरे-2
खेवनहार वीर से सच्चे, ध्यान तू दिल में धरले-2
जवाहर गजानन्द से ऽऽऽ-2 शासन के मन को मोहे. ...
3. लाभ उठाले, बरसे बादल, छा जाये हरियाली-2
चमक उठेगी आत्मा तेरी आत्मानन्दी भारी,
आस्था के निर्झर से ऽऽऽ-2, अन्तर कलिमश धोले.
4. अब तो इस मन मंदिर में 'इन्द्र' आश लगी है दर्श की
क्या रंग लाती है गुरु भक्ति, मिले हनुमत शक्ति,
नयनों से धार बरसे ऽऽऽ-2 चातक सा दिल बोले ..



मरुधर री धरती रो गौरव

तर्ज - नखरालो देवरियो

मरुधर री धरती रो गौरव मे आज पाया-2 युवाचार्य पाया
देशाणे री धरती रो गौरव मे, आज पाया-2
युवाचार्य पाया ।टेर।

होवेला यो नाम यथारथ, राम जनमन भासी
लाल रो, यो रामलाल शासन घणो दीपासी
होवेला मोहनगार ॥1॥

जीवन ज्यारो सीदो साधो, पर संयम है भारी
लक्ष्य ऊचो यारो देखो, कामना निवारी
लघुवय मे दीपावण हार ॥2॥

जीत लियो है दिल नानेश रो, कदीयन रेवे दूरा
रोवा समर्पणा स्वाध्याय मे सतो में है शूरा
इन्द्र मुनिसा रो मानो आभार ॥3॥

हु शि ऊ चौ श्री जगनाना, राम चमको ऐसा
'इन्द्र' कहे बढसी निरन्तर, बाल सूरज जैसा
यो तो मार्ग दिखावण हार ॥4॥

❋❋❋

चमक्या-चमक्या हो श्री संघ

तर्ज : हीरो पायो

चमक्या-चमक्या हो श्री सघ रा भाग्य आज जी
गुणला गावा म्हे तो गुरु रे नाम रा जी ॥टेर॥

भूरा वंश मे जन्मया पूज्य रामलाल जी
ए तो परख्या गुरु म्हाणा नानालाल जी ॥ 1 ॥

सतरा बरस रह्या गुरु रे चरणार जी
तन मन न्यौछावर कियो सेवा काज जी ॥2॥

म्हारे हिवडे आनंद ओछाव है जी
तोरण बान्ध्या मैं तो भक्तिभाव रा जी ॥3॥

आज बधावो श्री संघ रे आगणे जी
तप त्याग रा बांटो, मिश्री मेवा जी ॥4॥

हु शी उ चौ श्री जग में नाना लाल जी।
शासन दीपावण प्रगट्या रामलाल जी ॥5॥

नवम पाट रो अखंड रहे अनुशासन,
'इन्द्र' जय-जय बोले गंवरा नन्दन ॥6॥



युवाचार्य महोत्सव मनाना है

युवाचार्य-पद गरिमा

तर्ज - धीरे-धीरे प्यार को

युवाचार्य महोत्सव मनाना है, चरणो मे झुक जाना है
नानेश पट्टधर श्री राम गूजाना है, चरणो में झुक जाना है ॥टेर॥

प्रभुवीर की कीर्ति, हुक्म संघ की दीप्ति
तुम नानेश चरणों का सिंचित कमल
शासन की हो शक्ति, अनुशासन की हो कृति

साधना की हो प्रखर, ज्योतिर्मय किरण
पाये -पाये गुरुवर का खजाना है।।1।।

हर जुबा पे भक्ति हो, आस्था मे अनुरक्ति
हो समर्पणा का शुचितम विमल वरण
दीप सम जलो तुम, सूर्य सम दीपो तुम
तिन्नाण तारयाण, की ओर बढे चरण
जीवन आदर्शो पे चढाना है।।2।।

खुशिया है छाई, उमगे भर आई है
चमका-चमका भूरा वश का ये नूर
धन्य-धन्य है जननी, देशाणा की वो धरती
माघ शुक्ला बारस की दीक्षा है मशहूर
'इन्द्र' कहे श्री सघ को सुहाना है।।3।।



दुनियां से क्या पूछूं

तर्ज– बच्चे मन के सच्चे

दुनिया से क्या पूछू, मेरे मन की गुरुवर खोलू
क्या दृष्टि है दीर्घ नानेश की, कैसे कह दो तोलू।।टेर।

जौहरी का लाल जौहरी है, जवाहर गणेश सी दृष्टि है
प्रखर प्रज्ञा 'नाना' की देख, मेरी भावना बोली है
परख न सकते इनकी चाल, परखे वो हो जाये निहाल
घर-घर बाट बधाई सबके, मुख मे मिश्री घोलू।।1।।

कैसा खिला है भाग्य गगन, राम राज्य करो अमन
तीरथ चारों चरणे रमण, हट जायेंगे पाखंड दंभ
दूर होंगे दुर्विचार, सत्य ही होगा स्वीकार,
भाग्य सराहू श्री संघ के, ग्रंथी मन की खोलूं ॥2॥

सचिव भी देखो कैसे मिले, मरुधरा में ऐसे खिले
सर्वसंतों में शिरोमणी, मुनिप्रवर जी नजर चढे
कर्मठ कारज निष्ठा है, धाय से सुमन स्रष्टा है
'इन्द्र' राम राज्य हो अर्पण, विभ्रम में ना डोलूं ॥3॥

***

हुक्म शासन की शान बढ़ावो

तर्ज – तुम्हीं हो माता

हुक्म शासन की शान बढावो
युवाचार्य पद खूब ही दीपावो ॥टेर॥

सुरभित बगियां की सौरभ पाकर,
नानेश आज्ञा से जीवन सजाकर
मुनि प्रवर की जय-जय गावो ॥1॥

दिशाएं पा दशा बदलेगी,
दशों दिशा में कीरत फैलेगी
भटकती पीढी को मार्ग दर्शावो ॥2॥

चारों तीरथ तुम चरणे रहेंगे,
एक ही आण में सारे चलेंगे,
श्री साधुमार्गी संघ चमकावो ॥3॥

सुनहरी घडियो से रह गये वंचित,
'इन्द्र' कहे कब होगा मन वाछित
राम राज्य के सपने पुरावो ॥4॥



धन्य होगी घड़िए अरू धन्य प्रभात

तर्ज : श्याम तेरी बंशी.......

धन्य होगी घडिए अरू धन्य प्रभात-2
जाएंगे नाना गुरुवर के चरणार ॥ टेर ॥

दीन बधु गुरु तुम तो दीनदयालु
चातक सी घडियो मे दर्श की निहारू
होगे कब मेरे सपने साकार ॥1॥

खिल न सकते सुमन बिना रवि के
खेयेगा कौन नैया बिना नाविक के
एक मात्र तुम्ही हो जीवन पतवार ॥2॥

सरिता सी समर्पणा चरणे करेगे
समता सागर से गगरी भरेगे
नर तन पाने का कुछ मिल जाए सार ॥3॥

मिल जाए मन चाही रामेश सी शक्ति
दीप जले अतर के करू गुरु भक्ति
'इन्द्र' कहे कृपा करो कृपा किरतार ॥4॥



जय गुरु नाना, जय श्री राम नाम भा गया

तर्ज : छुप गए

जय गुरु नाना, जय श्री राम, नाम भा गया,
जिसने सुमरा उसका ही बेडा पार हो गया
जंगल में भी मंगल देखो कैसा छा गया ॥टेर॥
बडी पुण्यवानी मिले महाज्ञानी, खोजे से न मिलती ऐसी कोई शानी,
ध्यान जिसने तुम्हारा लगाया है परचा प्रत्यक्ष पल में ही पाया है।
अंतर मन से गुरु का जो गीत गा गया ॥1॥
श्रद्धा से तू रटना दुःखों को है हरना दया का बरसे झरना,
सदा ही याद रखना, ध्यान समीक्षण सबको सीखाया है,
चरणे देवों ने शीष झुकाया है समतामय जीवन जीने का,
मार्ग दर्शाया ॥2॥
कर्मो से मिले मुक्ति दिल से करो भक्ति मुख से क्या गावुं,
मेरे गुरु की शक्ति समकित रंग में चादर रंगाया है,
सारी दुनिया के मन को लुभाया है मैल सारे धोले,
''इन्द्र'' कहे अवसर आ गया ॥3॥



इन्द्र-भगवन

तर्ज : इंसाफ का डगर

अर्पित था जीवन जिनका संघ सेवा मे समर्पण,
कैसे भूलेगी धरती तुमको हे इन्द्र भगवन् ॥टेर॥

क्या सार है शरीर का ससार को सिखाया,
परवाह भी ना थी तन की, कैसा चमन खिलाया,
गुरु मिले थे गणपति चरणो मे सारे जनगण ॥1॥

धाय मातृ पद को पाकर , धातृत्व प्रण निभाया,
बालक तरुण क्या वृद्ध भी नव चेतना ही पाया,
निस्पृहता निराली अमृत से मिलते वचन ॥2॥

जब-जब भी उलझनो ने शासन को आके घेरा,
सुलझाई ऐसी कडिए लाखो के मन को फेरा,
आस्था भरी क्या सबमे अतर हृदय था दर्पण ॥3 ॥

लूटा क्यो काल तुमने नानेश सचीव हमारा,
लाखो अनाथ जन का ''इन्द्र'' एक था सहारा,
सपनो सी हुई माया दर्शन अभागे नयन ॥4॥



जगती तल को पावन करने

तर्ज - देख तेरे दरवाजे...

जगती तल को पावन करने, नभ बीच लियो अवतार,
चरण मे वन्दन हो हजार,
प्रात· समय मे नाना गुरु को, करते नमस्कार
गुरु है रिद्ध सिद्ध दातार ।टेर।
अमल अखण्ड ब्रह्म तेज तुम्हारा
दर्शन से दु ख दूर हो सारा

जिनशासन का करे उद्धारा
भव्य जीवों का जन्म सुधारा
मूरत मोहनगारी गुरु की झलके तेज अपार।1।
हुक्म संघ को खूब दीपाते
सोये जनमानस को जगाते
समता का शुभ पान कराते
जिनवर का संदेश सुनाते
देश-देश में परिभ्रमण कर करते भव्य उद्धार।2।
एक ही अर्ज पे ध्यान लगाना
जन्म मरण के पिण्ड छुडाना
अज्ञ तिमिर को दूर हटाना
जीवन का सद्ज्ञान कराना
जुग-जुग जीओ नाना गुरुवर 'इन्द्र' शासन श्रृंगार।3।



खुशियां कहो कितनी क्या गावे

तर्ज– दीदी तेरा....

खुशियां कहो कितनी क्या गावे, कोई पूछे कह न पावे,
छाव नानेश चरणो की पाए, रामेश तुमको अर्ज सुनावे,
सोचा था संग में दर्शन करेंगे, रोशनी ज्ञान की घट में भरेंगे,
हार हम कर्मो से खाए ॥1॥
छोड आए है बरसते नयन, छविएं सन्मुख आती दिल में,
गम विरह वेदना बताएं ॥2॥

दास्तां इतनी दिल से दर्शाते, जब नाथ हाथो मे पत्र है आते
गुरुवर्या के भाव सुनाए ॥3॥
कहा आदेश जो भी श्री मुख से पाए, उसपे ही अपना जीवन चढाए,
आते वक्त आशीष लाए ॥4 ॥



सुण सुण के कीरतिया

तर्ज : गौरी है कलैया

सुण सुण के कीरतिया श्री राम की मुरतिया
दर्श की प्यासी थी अंखियाँ,
आज टूटी अतराय, नत मस्तक हो जाय,
खिले दिल की इक इक कलियाँ।
नानेश ने कैसा तुमको सजाया, लाखों सितारो मे चदा कहाया, आए हसते चरण, पर दिल में है गम,
भर लिए सबने नयनीया
भक्ति तुमसी हमको सिखावो, समर्पण की ज्योति ऐसी जलाओ,
सदेश सुनेगे, तप रग भरेगे, उजली हो जाए चदरियाँ .
अरमान नूतन राम से लगे है, आबाल वृद्ध कितने तरस रहे है,
तेरे नाथ को लाओ, तुम ही आश पूरावो, सुख रही है शासन बगियाँ
बात कही हमको देते विदाई, भावना "इन्द्र" ने दर्श की दिखाई,
श्री वर बढेगे, दर्श मिलके करेगे, हम सबकी ले लो खबरियाँ।

म्हे तो देवा सबने बधाई

तर्ज : थे तो बोलो.....

म्हे तो देवा-2 सबने बधाई, मुंह मे मिठाई,
जयन्ती मनाई दांता वाला री-2
पोखरना कुल में प्रगटाया म्हारा पुण्य उदय मे आया,
दांता वाला री श्रृंगारा नंद-2...... ॥टेर॥

दूज रो चांद ज्येष्ठ शुक्ला में आयो पूनम सम पूरण बनने,
दुनियां मे छायो, थारो समता रो संदेश सुणता शान्ति पायो देश ॥1॥

नश्वर मोतियन रो थाल मनडे न भावे, समर्पणा रो हार गले पहरावे
जब-जब गाऊं म्हे उपकार, छुट जाती अश्रुधार ॥2॥

जितरा ही धर्म सबरो, एक ही कहणो, गुरु सेवा बिन जीवन अलूणो
चढ रह्यो चरणा रो यो ऋण करदो नानेश थे उऋण ॥3॥

रात दिवस ''इन्द्र'' रो, दिलडो पुकारे, नतमस्तक कद होसु चरणा मे थारे
नाथ बणने रामेश आज थोडी रखदो म्हारी लाज ॥4॥



समकित से प्रीत पुरानी

तर्ज : दीदी तेरा....

समकीत से प्रीत पुरानी, मेरी जोडी गुरु महाज्ञानी
रामेश की है नानेश सी शानी ॥टेर॥

दुनिया को समता का अमृत पिलाया,
शाति से आपस मे जीना सिखाया,
वाणी है कैसी कल्याणी ॥1॥

जितने भी मजहब शिक्षा सुनाये,
बिना गुरु मुक्ति जग मे कोई न पाये,
समकित की सच्ची निशानी ॥2॥

आती बाधाओ मे गुरु ही बचाते,
दाम नही नाम से ही नैया तिराते,
जो न समझे वो है अज्ञानी ॥3॥

अरमान सारे पूरे करेगे,
जय गुरु नाना, जय श्री राम रटेगे,
''इन्द्र'' कहे गुरु अर्न्तयामी ॥4॥



जब तक नभ में चमकेंगे

तर्ज : गाते रहेंगे....

जब तक नभ मे चमकेगे चाद सितारे-हॉ
तब तक जग को याद रहेगे नाना गुरु हमारे ॥टेर॥
तप-तप तपस्या मे स्वर्णिम जीवन बनाया,
सेवा साधना समता का बिगुल बजाया,
काम क्रोध से हो गये हो कैसे किनारे ॥1॥
वीर प्रभु की वाणी जिनके रग-रग मे समाई,
लोकैषणा की लालसा स्वप्नो मे न पाई,
लगी लगन थी गुरु सेवा की विसारे सुख सारे ॥2॥

करणी कथनी सम रूप गणेश गुरु के मन मोहे,
चादर ओढी कर कमलो से सूरज गोखडे सोहे,
गूंज उठी थी धरती अम्बर लाखो लगे थे नारे ॥3॥
जल जलज जीवन जगमण्डल मे जीया,
पाट सुधर्मा का दे राम को, निस्पृह रस बरसाया,
सति ''इन्द्र'' कहे प्रण करे, चलेगे गुरु के इशारे ॥4॥



थे तो सुणजो-2 गुरु री कहानी

तर्ज : थे तो बोलो...

थे तो सुणजो-2 गुरु री कहानी, युगदृष्टा ज्ञानी,
जन्मे महाज्ञानी, दादा गुरु री-2 हो जवाहर-2
थारो सत्य रो उपदेश, याद करे सारो देश,
दादा गुरुवर री ॥टेर॥
म्है तो रह गया, जवाहरे चरणा रा ऋणी,
थे म्हाने छोड, कढे जा बैठा मुनि
याद करा जद दीदार, सांची शांति रो दातार ॥1॥
दुनिया ने दियो दया दान रो दर्शन,
झेल्या स्वामी थे शत्रु संघर्षण,
एक ही लागी थी लगन, धन-धन है नाथी नंदन ॥2॥
चारो तीरथ मे कांई दौड लगी थी,
साधु श्रावक री जोड ऐसी मिली थी,

लाखो तार्या थे अनाथ, म्हारा जीवन रा थे नाथ ।।3।।
समकित काई दीनी, म्हारो जन्म सुधारियो,
सति ''इन्द्र'' कहे, शिवमार्ग बतायो,
कितरो मानू म्हे उपकार, अर्ज कर दो भव से पार ।।4।।



लगा दिया है शासन सेवा में

तर्ज : गुरुदेव तुम्हें नमस्कार बार-बार...

लगा दिया है शासन सेवा मे प्राण रे,
पूज्य हुक्मी से वीरो को मेरा प्रणाम रे ।।टेर।।

निकल पडे थे जग में संयम का लेके प्रण,
अपनी ही मस्ती मे वे रहते थे मगन,
जो हो गए है, मेरे सघ मे प्रधान रे ।।1।।

श्रीधर श्रीलाल की कौन करता हौड,
विजयकवर सी ले प्रतिज्ञा पाली थी बेजोड,
लाखो सितारो में सोहे शशि समान रे ।।2।।

तुफा से टकराना सीखा था जवाहर,
अर्हत् वाणी मे शका न सह सके पल भर,
बीती शताब्दी फिर भी अमर आज गान रे ।।3।।

रह जाता नायक सघ का, क्या खिलता श्रमण सघ,
सारी बुराईयो से बचके रहता धर्म सघ,
हर वक्त छाया गणेश हर की जुबान रे ।।4।।

सपनों सी माया मानू नाना देख तेरा रंग,
प्रज्ञा गुरु की "इन्द्र" दुनियां देख हुई दग,
राम होगा तेरे भक्तो का, सुख निधान रे ॥5॥



जवाहर की लावो रे किरणा

जवाहर की लावो रे किरणा,
गणपति रा संजोओ रे शरणा,
श्रद्धा सुं शोभित थांरी आरती,
ओ नाना, पलका पसारूं ओ थांरी आरती ॥टेर॥

मोडीलाल जी रा लाडला, काई, मां श्रृंगार रा जाया,
पोखरना कुल दीपक बणग्या, दांता थांरी माया,
बणग्या पंच महाव्रत धारी, तिन्नाणं तारण हारी,
भावां सुं भरी ओ थारी आरती,
ओ नाना, झुक-झुक उतारूं ओ थांरी आरती ॥1॥

गांव-गांव सब तीरथ बण्ग्या, पगल्या ज्यां थांरा पड्ग्या,
दृढ प्रतिज्ञ शिष्य है थांरा, हिवड़े में सब रे जमग्या,
थारी वाणी है वीतरागी, म्हारी अन्तर आत्मा जागी,
जीवन सुं जडी ओ थांरी आरती
ओ नाना नयणा सवारू ओ थांरी आरती ॥2॥

धर्मपाल प्रतिबोधक बणग्या, समता रा समधारी,
हु शि उ चौ श्री जगनाना, गावे जनता सारी,

जिनशासन खूब दिपायो, शरणा मे 'समरथ' आयो,
प्राणा सु प्यारी ओ थारी आरती, ओ नाना ॥3॥



पर्व दीपावली में उतारे

तर्ज : खड़ी नीम के नीचे...

पर्व दीपावली मे उतारे, नाना गुरु की आरती,
जलावे दीप श्रद्धा के, चरणे आत्मा पुकारती ॥टेर॥

समता का सदीप कैसा, जीवन मे जलाया है,
ध्यान समीक्षण ऐसा देवो ने भी शीष झुकाया है,
क्या शक्ति है गुरु मे दुनिया यू ही रही विचारती ॥1॥

सार माना है तन पाने का गर गुरु सेवा मे ही लगे,
निशा अज्ञान की दूर हो सारी, समकित के शुभ दीप जगे,
जगमगाए ज्योति जग की शाति पाये भारती ॥2॥

धन्य हुआ वह नगर जहाँ श्री राम नानेश संग पाये,
कर-कर सेवा गुरु की लाखो आशीष अन्तर से पाये,
सति ''इन्द्र'' कहे शुभ घडियो मे करेगे गुरु की आरती ॥3॥



नाना गुरु की भक्ति

तर्ज : मेवाडी सांवरियो

गेरो-गेरो रंग लाग्यो नाना गुरु री भक्ति रो
भक्ति रो गुरु रा दर्शन रो ॥टेर॥

पारस ने कांई केवे, ऊंचो लोहो स्वर्ण बनावे-2
गुरु सेवा तो देखो भाई, निज सम जीवन बनावे-2
रोम रोम में लाग्यो उछाव.... ॥1॥

श्रृंगार नन्दन के चरणा मे जो आशा ले जावे-2
कल्पतरु कांई केवे पदरज ज्यांरी पार लगावे-2
म्हारे शरणा रो ही आधार॥2॥

धन्य-धन्य हो जावे धरती जठे गुरु विराजे-2
समोशरण रो सपनो सांचो रामेश संग छाजे-2
सूरज चांद सी जोडी अपार॥3॥

रिद्धि सिद्धि दातार दाता वाला थे सुण लीजो-2
सति ''इन्द्र'' री एक ही अर्जी मर्जी गुरु कर दीजो-2
दर्शन रो घणो ही चाव॥4॥



समता-सिंधु महान् की

तर्ज : सुबह अरू शाम की

समता सिन्धु महान् की, नाना गुरु के नाम की,
फेरो एक माला॥टेर॥
जहाँ भी जावो, जब भी घर से, जय गुरु नाना बोलो
पूरण होवे मनरा मनोरथ, दूर होवे दु ख जोलो
जो भी ध्यान लगावे, आनन्द मंगल पावे॥1॥ फेरो एक.

मूल्य क्या है गुरु भक्ति का, विरला ही कोई जाने,
परचो पावे पल-पल मे अन्तर से कोई माने,
अखियॉ ज्योति पाई, देखो बुढिया माई ।।2।। फेरो एक.

रोम-रोम मे जय गुरु नाना, जय श्री राम रमा ले,
सति ''इन्द्र'' कहे गुरु ही होते, जग मे तारने वाले,
भक्ति भाव से गावो, विश्व शान्ति जो चावो ।।3।। फेरो एक



हो नाना गुरुवर री महिमा

तर्ज : म्हारे....

हो नाना गुरुवर री महिमा रो, नही है पारावार
घणो रे दिपायो म्हारे शासन ने
हो ऽऽ गुरु भक्ति कर्‌या सु हो जाये बेडा पार ।।टेर।।
भूल्या भटक्या जो भी गुरुवर, द्वार थारे आया,
हो ऽऽ दर्शन करता ही वर्त्या है मगलाचार.. .
जय गुरु नाना जयश्री राम रो शरणो ले जो जावे,
हो वारा मनरा मनोरथ पूरे गुरुराज .
नगर डगर मे बरस रही है समता री अमृत धारा
हो गुरु री पदरज लेता ही हो जावे निहाल.
शृंगार नन्दन अब तो म्हारी एक ही है अरदास,
सति ''इन्द्र'' री आशा पुराओ दीनानाथ



नाना गुरु की आण

तर्ज : जवाहर की

नाना गुरु की आण, राम ली मान, देखो फल कैसा पाया जी,
हुक्म पाट की शान, मान तुम्हे शीष झुकाया जी ।।टेर ।।

सुनो सारे गणेशी पट्टधर नाना गुरु महाज्ञानी,
सुनो सारे प्रभु-पथिक को प्यारी है जिनवाणी,
है समता सिंधु महान, समीक्षण ध्यान, देवो ने भी सरायाजी ।। 1 ।।

सुनो सारे है मूरत जिनकी, जग को मोहनगारी,
सुनो सारे अमृत सी वाणी, सब जन को हितकारी,
सारे द्वन्द्व करे निवार, यश का नही पार, देखी सब अचरज पाया जी ।।2।।

सुनो सारे जिनकी प्रज्ञा का, पार कोई न पाया,
सुनो सारे सदा आत्म साक्षी से, चारों तीर्थ चलाया,
लाखो में मिलते एक, गुरुवर पूर्ण नेक, जवाहर दूत कहाया जी ।।3।।

सुनो सारे सति ''इन्द्र'' कहे, गुरु चरणे जीवन चढाओ,
सुनो सारे तप संयम धर्म का, फल गर मन मे चाहो,
तुम सुनलो चतुर सुजान, अर्पण करो प्राण, भावो का सुमन चढाया जी ।।4।।



चांदणी प्यारी-2 (नानेश जन्म-जयंति)

तर्ज : पल्लो लटके.....

चांदणी प्यारी-2, हो ज्येष्ठ शुक्ला दूज री चांदणी प्यारी ।।टेर ।।

चांद दूज रो देखण ने तू गगने नजर दौडावे,
पूनम सग प्रगट्यो धरती पे भारी ।। 1 ।।

धन्य-धन्य है नगरी दाता मेवाड भूमि मे भाई,
हो अवतार लियो, छाई जग मे खुशियाली ॥2॥

सयम ले जीवन ने कैसो गुरु चरणे चढायो,
हो बादल सघर्षा रा चीर चमकायो सघ माई ॥3॥

शासन कर्‌यो निज अन्तर में पछे अनुशासन,
हो शक्ति नैतृत्व री देख दुनिया चकराई ॥4॥

सति ''इन्द्र'' कहे जुग-जुग जीओ स्वामी सुधर्मा रा पट्टधर,
हो हृदयेश राम लेसी देख जो सभाल मारी ॥5॥



जय गुरु नाना, जय श्री राम

तर्ज : खड़ी नीम...

जय गुरु नाना जय श्री राम की भक्ति सबको है प्यारी,
हुक्म पट्टधर नानेश सेवक श्री राम की शक्ति न्यारी ॥टेर॥
सारी सृष्टि मे देखो क्या राम नाम है छाया,
सच्चे मेवाडी जौहरी ने, लाल से लाल को पा लिया,
गजब की देखो, एकलव्य सी गुरु भक्ति तुम मे भारी ॥1॥

तप ही जिनका प्राण शास्त्र का ज्ञान राम मे है गभीर,
खुल गई साधुमार्गी सघ की सोई जो तकदीर,
उठ सवेरे मुख पे आता, राम नाम मंगलकारी ॥2॥
''इन्द्र'' की तो एक भावना, शुद्ध बने मानस मन्दिर,
चारो तीर्थ चले आण मे, गुरु ही हरते भव की पीर,
लहराती रहे राम पताका, नाना गुरु के आभारी ॥3॥

संदेशो लायो रे

तर्ज : ढोला-ढोल...

सूरज सोने रो काई-उग्यो रे-2
कागदियो गुरु दर्शन रो संदेशो लायो रे ॥टेर॥

वांचता ही अक्षरा ने चमकण लाग्या नेण
कुमकुम रा छांटण्या नाख्या भक्ति भाव समेत
प्यारो कागदियो काई आयो रे ॥1॥

दिन रैन बीते म्हारा अमावस रो अधकार
सोच्यो कद होसी इण जीवन रो उद्धार
देखो भ्रम ने दूर भगायो रे ॥2॥

हंसला उडे नीलगगन में सरवरिये रे काज
चित्तडो म्हारो डोल रह्यो म्हाने गुरु दर्शन रो नाज
चादणियो लाग्यो सवायो रे ॥3॥

दो-दो सूरज उग्या न उग्सी झूठी हो गई बात।
इन्द्र कहे म्हारे शासन मे हो गया प्रख्यात
रामेश नानेश दिल में छायो रे ॥4॥

***

नाना का नाम रटेंगे

तर्ज : गौरी है कलैया....

जब तक जीयेंगे, दुनियां मे रहेंगे, नाना का नाम रटेंगे,
जैसी लगी है ललक, दर्शन की झलक,
गागर सागर से भरेगे ॥टेर॥

तेरे नाम का जग है दीवाना, जादू क्या चरणो की धूलि बत
मुखडे पे रखेगें, सपनो में दिखेगे, हरदम तुम्हे सुमरेगे ।।
जितना चाहो तो जीतो दिल को, हरि भी तुठेगे, भूलो ना गुरु
परवाह ना किसी की, करो गुरु की भक्ति, सबको सुनाते कहेगे ।
धून लगी है 'इन्द्र' नगर-डगर मे, जय गुरु नाना की जय अंत
जय गाते जाना, गम भूलते जाना, मांगलिक में मगन रहेगे ।।3



वन्दन करो स्वीकार

तर्ज : दुनियां में तेरा...

माने तुझको सब ससार, इसीलिए आया हूँ दरबार,
गुरु तेरा हमे है सहारा, वन्दन करो स्वीकार
स्वीकार करो तो हो जायेगा, ये मेरा बेडा पार ।।टेर।

गुरु को दुनिया नाविक कहती, जो भी बैठे करदे किन
जाति पांति भी ना पूछे, भक्ति उसकी उसको तारे,
मुझको भी पार उतार ।। 1।।

समता की मूरत, प्यारी लगती, सारी दुनियां जाप है जप
आती नही हमे वह भक्ति, कोई न देता अपनी शक्ति
कैसे होगा उद्धार ।।2।।

नानेश मेरे जीवनदाता, देकर शरणा कैसे निभाता
जो भी तेरा ध्यान लगाता, उसकी आशे पूरी करात
शासन का है उजियारा ।।3।।

दास अन्तर से है पुकारे, दर्श के दीपक करदे उजाले
''इन्द्र'' घडियाँ वहीं निहारे, भगवन अब तो हमे बुलाले
कब खुलेगा शिव का द्वार ॥4॥



गुरु-गुणगान

समवशरण में प्रतिबोध देने विराजे, विराजे, विराजे है।
सितारों बीच ''चन्द्र'' ज्यूं विराजे, विराजे है 2 ॥टेर॥

काम नही, अभिमान नही, संयम में प्रमाद नही,
जिनवर का गान गाये, विषयों में ध्यान नही,
सच्ची ये समता वाणी सुना रहे, सुना रहे, सुना रहे ॥1॥

सम्यक् ज्ञानी, गुरु ज्ञान का, देखो पारावार नही,
आप्तवाणी पर पूर्ण श्रद्धा, मिथ्या झंझाल नहीं,
युगदृष्टा ये जवाहर ज्योति जला रहे,जला रहे, जला रहे ॥2॥

माने या न माने, इसकी, गुरु को, कोई परवाह नही,
वन्दे चाहे निन्दे जिनको, थोडा भी गुमान नही,
समता के अनुपम झरने बहा रहे, बहा रहे, बहा रहे ॥3॥

कलिकाल मे तृतीया पद बिन, दुनियां का आधार नही,
चरणान्वित होवे उनको, मिले मुक्ति राह सही,
''इन्द्र'' तो गुरु आशीष, निशदिन पा रहे,पा रहे, पा रहे ॥4॥



सूरज सुहावणो

तर्ज–हीरो पायो.....

लागे लागे हो, सूरज सुहावणो जी
हर्ष छायो उदियापुरी रे आगणे जी।।टेर।।

झीणी-झीणी चादर हो महावीर जी री,
कोईक विरला ही पावे महा धीर वीर जी।।1।।

हजारो जनता रे बीच पधारया नाथ जी
नाना गुरु रे सिर पे राख्यो गुरुवर हाथ जी।।2।।

आस्था अरिहन्त वाणी पे पूरी राखजो जी
हुक्म गुरु री चादर चमकावजो जी।।3।।

जुडया देखो किस्या है इक इक तार जी
चारो तीर्थ रा नानेश तारण हार जी।।4।।

वीर शासन दुनिया री मिशाल है जी
साचो केवु या खुली कैसी टक शाल जी।।5।।
प्रज्ञा देखी गुरु री आवे अचरज आज जी,
''इन्द्र'' खूब ही दीपेगा म्हारा युवाचार्य जी।।6।।



नाना नाम लेने से

तर्ज – क्या खूब लगती हो....

नाना नाम लेने से, सकट मे जपने से,
खोया जो जीवन का, मारग मिलता है
बसत क्या पतझड मे देखो, राह दिखाता है।।टेर।।

जिनशासन का उजियारा, हो दुनियां मे पूरण ज्ञान भडारा
जो सुनता गुरु की वाणी, हा हा वाणी
वो करता है सारे दु.खों की रवानी ॥1॥ खोया

गुरु देश-देश में जाते, हा हा जाते,
जो धर्म का शुद्ध स्वरूप समझाते,
चरणों का ध्यान लगाले, हा हा लगाले,
वो मेटेंगे अष्ट कर्मो के जाले ॥2॥ खोया

मेरा तो प्रभु से कहना, हा हा कहना।
जुग-जुग जियो गुरुवर मेरे नाना
''इन्द्र'' भूले भटके जग को, हा हा जग को
गुरु समता का अमृत पिलाना सबको ॥3॥ खोया



गुरु नाना तू हमारा है

(तर्ज : एक तेरा प्यार....)

नाना तेरा राम, नाना तेरा राम हमको,
सब नामो से प्यारा है, गुरु नाना तू हमारा है,
सब झूठा संसार बस सच्चा दरबार तुम्हारा है,
गुरु नाना तू हमारा है ॥टेर॥

समता के धारी, ओ बाल ब्रह्मचारी, मैं पापी संसारी,
हो ऽऽ एक तेरा धाम-2 हमको सब धामों से प्यारा है,
गुरु नाना तू हमारा है ॥1॥

हे दया सागर, भर दो मेरी गागर, मै चरणो का चाकर,
हो ऽऽ सब झूठी दुनिया-2 आखिर तेरा ही सहारा है,
गुरु नाना तू हमारा है ॥2॥

दर्शन जो पाते वो किस्मत चमकाते, दु ख सारे मिट जाते,
हो ऽऽ दर्शन पाते ही-2, हुआ कर्मो से छुटकारा है,
ये श्री सघ तुम्हारा है ॥3॥



आचार्य श्री राम गुरुवर महान्

तर्ज - गुरुदेव तुम्हें नमस्कार....

आचार्य श्री राम गुरुवर महान् है,
नानेश पट्टधर को मेरा प्रणाम है ॥टेर॥
स्व पर की साधना मे, शक्ति ऐसी लगाई,
मानवता भरी मानवो मे, व्यसन छुडाई,
लक्ष्य एक ही जिनका सयम प्रधान है ॥1॥
स्वामी सुधर्मा पाट पे गुरु राम विराजे,
समवशरण मे नाना गुरु से सघ मे छाजे,
कितना गभीर गहन आगम का ज्ञान है ॥2॥
सगठन की वीणा मे ही नाद सबका मिलेगा,
पूज्य हुक्म का उपवन सदा खिलता ही रहेगा,
चारो तीर्थ मे चलेगी एक आण है ॥3॥

लक्ष्मण से ही वीर बन वीरता दिखादे,
संघ चंदना का कैसा जग को याद दिलादे,
सारे विश्व की शरण ''इन्द्र'' राम है ॥4॥



देखो देशाणे रा लाल

तर्ज – नीले घोड़े रा असवार........

देखो देशाणे रा लाल, प्रगट्या जग में रामलाल,
सूरज सुनहरो आयो जी, नानेश शासन सजायो जी ॥टेर॥
दशों दिशाएं सिन्दुरी रंग में, प्रभात वेला आवे,
आभा अनूठी मुखडे री कांई, भावि बोध करावे,
होसी हुक्म संघ प्रतिपाल, मां गवरां रो नोनिहाल ॥1॥
जोशीडो रो नाम दियोड़ो, जयचंद जग में होसी,
जरूरत राम राज्य री जिणसुं, राम नाम हुयो होसी,
अनाथी चरित्र पढ्यो रसाल, प्रण संयम रो धर्‌यो विशाल ॥2॥
निकल पड्यो जौहरी जीवन रो, आवे गुलाबी नगरी,
जद सुं ही बस पडी राम पे, नजर नानेश री गहरी,
पूर्वाचार्य सो क्रांतिकार, खिलासी महावीर शासन गुलजार ॥3॥
सति ''इन्द्र'' कहे आत्मा पुलकित हो जावे सगला री,
समोशरण में विराजे गुरुवर, अजब रह्यो ललकारी,
परमागम रो अर्थ कमाल, घणो-2 चमके गंवरा रो लाल ॥4॥



गुरुवर मेरे जीवन की

(तर्ज : तुम दिल की धडकन में)

गुरुवर मेरे जीवन की, हर उलझन सुलझा देना।
द्वार तुम्हारे आया हूँ, मन मन्दिर महका देना।
मेरे उजडे उपवन मे, गुण सौरभ सरसा देना॥

(1)

कितना ढूढा कितना भटका, तब ऐसे गुरुदेव मिले।
कितने घोर अंधेरे मे, आशाओ के दीप जले।
भव सागर मे नाव मेरी, तू ही पार लगा देना॥

(2)

रोम रोम मेरा कहता है, तेरे गुणानुवाद करू।
तुझसा गुरु मिले सबको, वीर से यह फरियाद करूं।
आया हूँ तेरे चरणो मे, मजिल मुझे दिखा देना॥

(3)

जैन जगत के राजहस हो, जिनशासन की शान हो तुम।
देव कहूँ या दिव्य कहूँ, इस युग के भगवान हो तुम।
एक तमन्ना है दिल मे, खुद सा मुझे बना देना॥

(4)

अब तो चाह यही मन मे, हर पल तेरा ध्यान धरूँ।
जब तक प्राण रहे तन मे, 'विजय' गुरु गुणगान करूँ।
जन्म-जन्म का प्यासा हूँ, मेरी प्यास बुझा देना॥

चाहे नाना कहो चाहे राम

जग में सुन्दर है दो नाम, चाहे नाना कहो या राम।
बोलो राम राम राम, नाना नाम नाम नाम।
एक है समता दीप जलाए, एक शान्ति का पाठ पढाये।
दोनो दीन के दुःख हरन है, दोनो सुधारे काम। बोलो ..
एक समीक्षण के हैं ध्यानी, एक शास्त्रों के ज्ञानी,
दोनों सुख के सागर है ये, दोनों मधुर मुस्कान ।।बोलो ।।
एक के चरणों में है जन्नत, एक की वाणी में है अमृत।
दोनों सूर्य के जैसे चमके, शीतल चन्द्र समान ।। बोलो ।।



हो म्हारा राम गुरु रो नाम

तर्ज– हो म्हारे संघ में...

हो म्हारा राम गुरु रो नाम, सुमरता संकट मिटे तमाम ।।टेर ।।
जंगल में हो या अटवी मे, भले बीच श्मसान,
चारों तरफ से घेर लिया है, आंधी अरु तूफान,
सन्मुख उभा रहे गुरु राम ।। 1 ।।
मेवाडी जौहरी तो देखो कर गयो काम कमाल,
याद आवे पल-पल म्हाने मां श्रृंगार रो लाल,
अंतरयामी साचो श्याम ।।2 ।।
सीधो सादो जीवन राम रो, मान नही अभिमान,
चाहे राजा रक हो काई सबने दे सम्मान,
कैसो मिल गयो दया निधान ।।3।।

घणो-घणो फलसी शासन हुक्म रो, इन्द्र खुशिया मनावे,
आरती सुबह शाम थे तो, राम गुरु री गावो,
थारे प्रगटे नव निधान ॥4॥



तेरे बिना हमारा नहीं कोई रे

तेरे बिना गुरुवर हमारा नही कोई रे-2,
तेरे बिना गुरुवर सहारा नही कोई रे-2 ॥टेर॥
भाई बंधु कुटुम्ब कबीला, कुटुम्ब कबीला भाई बधु,
बिगडी बात बनाया नही कोई रे तेरे बिना ॥1॥
गहरी नदिया नाव पुरानी, बडे-बडे भवरे गहरा पानी,
डूबन लानी नाव, बचाया नही कोई रे तेरे बिना ॥2॥
जब से मैने तुझको ध्याया, तुने मुझको अपना बनाया,
तेरे जैसा लाड लडाया, नही कोई रे तेरे बिना ॥3॥
घर-घर तेरा नाम जपाऊ, तेरी महिमा सबको सुनाऊँ,
तेरे जैसा प्यार जताया, नही कोई रे तेरे बिना ॥4॥
कहत कबीर सुनो भाई साधु, सुणो भई साधु कहत कबीर,
गुरु बिना ज्ञान, बताया नही कोई रे तेरे बिना ॥5॥



जंगल में भी मंगल

तर्ज : मेरे आंगन में.....

जगल मे भी मगल करे, नाना गुरु का नाम रे,
उद्धार करे दुनिया का, सावरे का काम रे ॥टेर॥

मेरे गुरु समता के सच्चे अवतार है,
सुख और शांति के पूरण दातार है,
पावन पुरुषोत्तम-2, भक्तो के भगवान है ।।1।।

मेरे गुरुवर को सारी दुनियां से प्यार है,
चाह एक तिर जाये, सारा ससार है,
निंदा हो या स्तुति-2, गुरु को एक समान है ।।2।।

कल्पतरु मानें ये, पूरे अरमान है,
ज्ञान देते सबको, न मन में एहसान है,
रंक हो या राजा-2, सभी को सन्मान है ।।3।।

देवों को भी प्यारा, मेरा श्रृंगार का लाल है,
जो भी करे भक्ति, वह होता निहाल है,
जवाहर का दूत-2, मेरे शासन की शान है ।।4।।

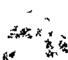
एक ही अर्ज, मेरी लेना खबरियां,
पतवार बनो ''इन्द्र'' की तिर जाय नैया,
छोड तुमको अवर, न हृदय में स्थान है ।।5।।



नाना गुरुवर है महाज्ञानी

तर्ज – तेरा साथ है कितना प्यारा..

नाना गुरुवर है महाज्ञानी, समता की है सच्ची शानी,
समीक्षण ध्यानी, गुरु भव-2 रहेंगे, तेरे चरण पुजारी-2 ।।टेर ।।



जो भी आया द्वार पे, सुनते है पुकार-2
नजर पडी जब भक्त पे, हो जाते निहाल-2
वदन करते, धूली लेते, दुनिया चरण पुजारी ॥1॥

दो अक्षरो से है सजा, राम बाण सा नाम-2
शुद्ध भावो से जो जपे, सुधरे बिगडे काम-2
मुख से बोलो, मिश्री घोलो, हरले दुविधा सारी ॥2॥

परवाह किसकी हम करे, साइ गर है साथ-2
राह पकडली मोक्ष की, छुटेगी ना नाथ-2
जीवन देना, सुध-बुध लेना ''इन्द्र'' ने अर्ज गुजारी ॥3॥



हुक्म शासन का शौर्य

तर्ज : तुम्ही हो माता...

हुक्म शासन की शान बढाओ,
युवाचार्य पद खूब ही दीपावो ॥टेर॥

सुरभित बगिया की सौरभ पाकर,
नानेश आज्ञा से जीवन सजाकर,
मुनि प्रवर की जय-जय गावो ॥1॥

दिशाए पा दशा बदलेगी,
दशो दिशा मे कीरत फैलेगी,
भटकती पीढी को मार्ग दर्शावो ॥2॥

चारो तीरथ तुम चरणे रहेंगे,
एक ही आण मे सारे चलेगे।

श्री साधुमार्गी संघ चमकावो ॥3॥

सुनहरी घड़ियों से रह गये वंचित,
''इन्द्र'' कहे कब होगा मन वांछित,
''राम'' राज्य के सपने पुरावो ॥4॥



सब बोलो जय जयकार

सब बोलो जय जयकार, नाना गुरुवर की।
समता की दिव्य मशाल, नाना गुरुवर की ॥टेर॥

प्रथम पाठ पर हुक्म मुनीश्वर, घोर तपस्वी बने पूज्यवर।
शासन को दिया चमकाय, नाना गुरुवर जी ॥1॥

शिव मुनीश्वर बडे उपकारी, भव्य जीवों के तारणहारी।
छः काया प्रतिपाल, नाना गुरुवर जी ॥2॥

गिरी पाग वैरागी बन गये, उदय सागर तोरण से फिर गये।
तारण तिरण की जहाज, नाना गुरुवर जी ॥3॥

चौथमल जी संघ के नायक, भव्य जीवों के दया के पालक।
धीर वीर गंभीर, नाना गुरुवर जी ॥4॥

श्रीलाल ऋद्धि के त्यागी, नारी छोड कर बने वैरागी।
धर्म का किया प्रचार, नाना गुरुवर जी ॥5॥

ज्योति जगाई थली प्रांत में, जवाहर चमके दया धर्म में।
मोक्ष पति दातार, नाना गुरुवर जी ॥6॥

क्षमा शील और क्रान्तिकारी, गणपति को पदवी नही प्यारी।
अनुशासन से प्यार, नाना गुरुवर जी ।।7।।

समता दर्शन के व्याख्याता, धर्मपाल के बने विधाता।
किया समता का प्रचार, नाना गुरुवर जी ।।8।।

नाना गुरुवर अद्‌भुत योगी, जिन शासन की वृद्धि होगी।
थारो शासन चमके विशाल, नाना गुरुवर जी ।।9।।

युवाचार्य श्री राम हमारे, मर्यादाओ के रखवाले।
श्रीसंघ आधार, नाना गुरुवर जी ।।10।।



गुरु–वंदन

तर्ज : मेरी तेरी दुश्मन....

वंदन हो वंदन हजारो वंदन,
जय जय हो श्रृगारा नंदन ।।टेर।।

दीन बधु हो दीन दयाला, प्याला पिलाते समता वाला।
दर पे आता जय जय गाता, झोली अपनी भर ले जाता।।
ब्रह्मर्षि है, दया के सदन ।।1।।

सकट मे है जिसने पुकारा, भेद न रखता सबको तारा।
डुबती नैया पल मे तारी, सकट मोचन कर गये भारी।
देव तरसते करने दर्शन ।।2।।

फूल है झूठा, जल भी झूठा, भक्ति मे मेरा मन है लूटा।
तीरथ बन गए गांव अरु नगरी, जहाँ भी जाते समता प्रहरी।
चमक रहा है, तुझसे शासन ।।3।।

दर पे आया हूॅ मै भिखारी, मेटो गुरुवर जन्मों की भारी।
सेवक हूॅ मैं, न विसरादो दृष्टि महर की बरसादो।
''इन्द्र'' कहे तोडो, कर्मो के बंधन ।।4।।



गुरु चरणों में मेरी वंदना

तर्ज– मेरे हाथों में नौ नौ चूड़ियां हैं....

गुरु चरणों में मेरी वंदना है, करे सेवा हमारी ये भावना है,
आनंद आता, हमें देखे, तुम्हारी साधना है ।।टेर।
फूल श्रद्धा के लिए खडे दर पे,
कृपा करनी होगी किरतार हमपें-2 ।। 1।।
सत्य बोलना कभी ना छोडेंगे,
प्रीति झूठ से कभी ना जोडेंगे-2 ।।2।।
दीन दु:खियों के आसू पौछेगे,
गुरु भक्ति की केसर घोलेंगे-2 ।।3।।
''इन्द्र'' कहे चरण मे हमें रखले,
तेरी शरण मिले गुरु भव अगले-2 ।।4।।



खुशियाँ मनाये, मंगल गाये

चादर-दिवस

तर्ज : लकडी की काठी

खुशियाँ मनाये, मंगल गाये,
नानेश गुरु को शीष झुकाये ॥टेर॥

गुरुवर दिव्य ज्ञानी है, समता के सैनानी है।
तीरथ चार के अन्तर यामी है
. यामी है-यामी है अन्तर यामी है ॥1॥

छठवा आरा सुनाया है, मन मुरझाया है
वनस्थली बीच बोध पाया है
पाया है-पाया है, आप्त वाणी पाया है ॥2॥

''इन्द्र'' गुरुवर ध्यानी है, महिमा सुहानी है
चादर दिवस पर शहादा बलिहारी है
हारी है-हारी है शहादा बलिहारी है ॥3॥

❋❋❋

जय गुरु नाना मुख में मिश्री घोल

तर्ज—जय गुरु नाना

जय गुरु नाना 2 मुख मे मिश्री घोल,
सुबह शाम तू सच्चे दिल से, जय गुरु नाना बोल ॥टेर॥

जय गुरु नाना कहते मुख से आनंद कितना आता है,
अमृत पीने वाला ही तो स्वाद कह सकता है,
रटना करले सच्चे मन से, वाणी मिली अनमोल-1

जय गुरु नाना 2 अलख जिसने जगाई है,
राह उसने सत्यधर्म की, जीवन में अपनाई है।
बिगडी बनाने वाले योगीश्वर की जय 2 बोल-2
कलिमष सारे धोने मन का, नानेश चरण में आना है,
संताप मिटे अपने कर्म का, मुक्ति का सुख पाना है,
''इन्द्र'' कहे गई सो गई, रही को अंतर तोल-3



जयवन्त होवे शास्ता

तर्ज– हे प्रभु शुद्ध साधना.....

जयवन्त होवे शास्ता जयवंत हमारा संघ हो।
अनुशास्ता की आस्था मे, अविचल अर्पित अंग हो ।।टेर।।

शासनेश की सुव्यवस्था, सुरतरु सी जाणिये।
हम एक हो अनेकान्त की गौरव सुगाथा गाईए।
कर्त्तव्यपथ पे चले निरन्तर, निर्विकल्प निर्द्वन्द हो ॥1॥

घोर तपस्या गणि हुक्म की, दिव्य जिनकी साधना
बनी नींव के प्रस्तर सी कितनी पूज्यवरों की कामना।
उल्लसित इतिहास स्वर्णिम हिमगिरी सा संघ हो ।।2।।

दुविधाएँ सारी दूर रहेगी, इगित ईशारों पे चले।
आडम्बरों से हट सदा, चारित्र उत्तम पे पले
नीलगगन सा संघ निर्मल, निर्मल ज्यूं विहंग हो ।।3।।

चारो तीर्थ की तृप्ति हेतु, तन मन जीवन कुर्बान है।
हो हितैषी सकल जग के, सेवा समर्पित प्राण है।
निर्विवादो की श्रृखला मे, जुडे अग प्रत्यग हो ॥4॥

लक्ष्य सदैव उच्च हो, बस एक दिल की चाहना,
गुरु नाना राम की, आशीष से ही सफल हो आराधना।
नन्दनवन सा संघ फैले "इन्द्र" का यह छद हो ॥5॥



हुक्म संघ की शान है

तर्ज : चांदनी ढ़ल....

हुक्म सघ की शान है, भक्तों के भगवान है।
आचार्य श्री रामेश को, वन्दन हमारा है ॥टेर॥
तिन्नाणं तारणहारे, वीर आज्ञा निभाने वाले।
संकट हारा रे ॥1॥
जवाहर शासन के दिनेश, दृष्टि दया की रखे हमेश,
ज्ञान निराला रे ॥2॥
भावी भाग्य विधाता है, सोया जग जगाता है,
मां गवरा का लाला रे ॥3॥
चारो तीरथ करे प्रणाम, नाना गुरु के है ये प्राण।
"इन्द्र" का नारा रे ॥4॥



नानेश पट्टधर रामेश चरण में

तर्ज : तुम्ही हो माता....

नानेश पट्टधर रामेश चरण में,
वन्दन हमारा शासन दुलारा ।।टेर।।

आचार्य पद उदियापुरी में पाया,
जन-जन के मन में मोद सवाया।
त्याग वैराग्य से जीवन संवारा ।।1।।

संयम क्या मूरत भी गुरुवर सी सोहे,
मनहर वाणी भक्तों को मोहे।
चारों तीरथ के हो उजियारा ।।2।।

जम्बू से वैरागी खूब ही बनेंगे,
चन्दना संघ के सुमन खिलेंगे।
नई उमगें नया सवेरा ।।3।।

बगियाँ जवाहर की खूब ही फैलेगी,
नानेश की आशीष धारा बरसेगी।
''इन्द्र'' का एक ही अन्तर नारा ।।4।।

***

हुक्म संघ की शान को

तर्ज : सुबह और शाम की...

हुक्म संघ की शान को, नवम् पट्टधर राम को
शीष नमाओं हो हो आनन्द पावो ।।टेर।।

अनार्य देश मे मुनि अनाथी की, गुरु ने किरण पाई
ज्योतिधर जवाहर की वाणी, रोशनी क्या लाई
अन्तर मन से ध्यावो, श्रद्धा दीप जलावो ॥ 1 ॥

महावीर की आज्ञा गुरु के, रोम-रोम मे छाई।
गुरु नाना की सेवा मे, जीवन दिया चढाई।
तन्मयता से गावो, शासन दीपाओ ॥2 ॥

व्यसन मुक्ति का अभियान तो, घर-घर मे पहुचाया,
मरुघर के लाल ने देखो, सत्य मार्ग दर्शाया।
गुरु गुण गावो, आशीष पावो ॥3 ॥

दशरथ नन्दन राम सी दृष्टि, हम पे सदा ही रखना।
चमक उठेगा संघ हमारा, ''इन्द्र'' जीवन चढाना ॥
सकट में ध्यावो, बेडा पार लगावो ॥4 ॥



गुरु राम हमारा प्यारा

तर्ज : बच्चे मन के....

गुरु राम हमारा प्यारा, जन-जन का नयन सितारा,
शुभ भावो से सुमरे उसको, दु.ख से मिले किनारा ॥टेर ॥

बेफानी दुनिया को छोडा, गुरु सेवा मे जीवन जोडा,
कृपा भी देखो कैसी मिली, नानेश सी ही सूरत खिली,
सादा सीधा जीवन है, रोम-रोम मे सयम है।
हिमगिरि सा अविचल प्रण है, पिलाये शास्त्र सुधारा ॥ 1॥

तिमिर अज्ञान का दूर करे, सुवास ज्ञान की जग में भरे॥
पहले आचरण फिर उपदेश, चिंतन जिनका रहे हमेश,
विषय कषाय को दूर निवार, छत्तीस गुण के हैं भंडार,
नर क्या देव भी तरसेगा, गुरु पाने चरण तुम्हारा॥2॥

विश्व कल्याण की भावना धार, व्यसन मुक्ति का करने प्रचार,
देश-देश में भ्रमण करे, वासना दिल की दूर करे,
नानेश बगिया खिलायेंगे, शोभा संघ की बढायेंगे,
मधुकर सम हम ''इन्द्र'' चरण में, पाये आशीष धारा॥3॥



बोलो रे बोलो जय-जय बोलो

तर्ज : मैं तेरी दुश्मन....

बोलो रे बोलो जय-जय बोलो,
राम गुरु की जय बोलो॥टेर॥

संयम ही है जीवन जिनका, प्रण धारा है प्रभु महावीर का
शास्त्र सुधा मुख से फरमावे, सुन-सुन जन-जन मन हरसाये
सफल कियो है देखो नर चोलो॥1॥

चहुँ दिशा में चरण पडेगा, शेर बबर सा गुरु गरजेगा,
लाखों चरण में समकित धारी, विश्व को राह मिलेगी भारी,
गुरु सेवा से पातक धोलो॥2॥

चांद रवि सी उपमा न पाये, शत् शत् दीप से दीप जलाये,
जहाँ भी जाता राम हमारा, भक्तों का करता उद्धारा,
ठाठ लगाया क्या दीक्षा का तोलो॥3॥

मन मोहनी मूरत के दर्शन, ''इन्द्र'' कहे बने अन्तर दर्पण,
भटके जग को राह दिखादो, प्रदूषण व्यसनो का हटादो,
राम नाम है जग मे अनमोलो ॥4॥



संत शिरोमणी

तर्ज : गुण के निधान

सत शिरोमणी, आचार्य श्री महान है
तारण-तिरण, गुरु राम को प्रणाम है
निगूढ ध्यानी, आगम वेत्ता प्रख्यात है
स्वामी सुधर्मा के सुनहरे प्रभात है
नवम् पट्टधर, नानेश शासन शान है ॥1॥

बाल ब्रह्मचारी, त्यागी तपस्वी भारी है
सरस्वती मुखडे से बरसे निराली है
महावीर आण मे अर्पण-प्राण है ॥2॥

समोशरण मे सत सग जब विराजते
गजानंद से भक्ति मे शशि सम छाजते
व्यसन मुक्ति का सुन्दर अभियान है ॥3॥

आदेशो का अभिनन्दन हम सब करेगे
अहर्निश एकता के सरगम स्वर गुंजेगे
''इन्द्र'' गुरु सेवा से ही जीवन कल्याण है ॥4॥

देशाणे का दीनदयाल

तर्ज : दातावाले बड़े दातार है....

देशाणे का दीनदयाल है, दिनकर सा सोहे गुरु राम है
सारे संतो में महान है दिनकर ।।टेर ।।

मुखड़े की छटा निराली है, अन्तर में कैसी खुशियाली है
मीठी-मीठी मुस्कान है ।। 1।।

सादा जीवन उच्च विचार है, आगम का अजब भंडार है,
तपस्या का लक्ष्य प्रधान है ।।2 ।।

लाल का लाल कैसा आया है, नानेश ने गजब सजाया है,
याद करेगा जहान है ।।3।।

मांगलिक भी मंगलमाल है, गवरा का लाल रामलाल है,
चारों तीर्थ के प्राण है ।।4।।

हुक्म शासन को दीपायेंगे, अर्पित गुरु के हो जायेंगे,
''इन्द्र'' का एक ही अरमान है ।।5।।



गुरु राम की महिमा गायेंगे

तर्ज : जय बोलो महावीर स्वामी की....

गुरु राम की महिमा गाएंगे, चरणों मे शीष झुकायेंगे ।।टेर ।।

संसारी वैभव त्याग दिया, संयम से नाता जोड लिया ।
तप त्याग की ज्योति जलायेंगे, गुरु राम की महिमा गायेंगे।। 1।।

गुरु आज्ञा जिनको प्यारी है, दिन रात वही सुखकारी है
समता का पुष्प खिलायेगे, गुरु राम की महिमा गायेगे ।।2।।

ये गवरा मा के नन्दन है, ये नेमिकुल के चदन है
व्यसन मुक्ति नाद गुजायेगे, गुरु राम की महिमा गायेगे ।।3।।

ये ज्ञान क्रिया के पुजारी है, नही उसमे कही लाचारी है
साधुमार्गी संघ दीपायेगे, गुरु राम की महिमा गायेगे ।।4।।

गुरु हुक्मी की ये परम्परा, उसमें भी नवम् पाट चला,
इनकी ही क्रान्ति फैलायेगे, गुरु राम की महिमा गायेगे ।।5।।

देशनोक मे जन्मे दीक्षा वही, मारवाड धोरी सुझबुझ सही,
गुण गौरव सब मिल गायेगे, गुरु राम की महिमा गायेगे ।।6।।

अनुशासित संघ ही प्यारा है, नानेश गुरु का नारा है,
श्री संघ को ये विकसायेगे, गुरु राम की महिमा गायेंगे ।।7।।



राम गुरु रे मुख सुं

तर्ज : दमयन्ति सुता....

राम गुरु रे मुख सु काई बरसे अमृत धार
गुरुसा शासन महिमा बढाजो जी ।।टेर।।

चादर ओढी नानेश सु काई, चमको सघ महान ।।1।।
मोहनगारी मूरति कांई दर्श सुं वर्त्या मगलाचार ।।2।।
गध हस्ती सा चालता काई, करयो वीर वाणी प्रचार ।।3।।
चारो तीरथ रा हो स्वामी काई, साधना रो नहीं है थाग ।।4।।

ब्रह्म तेज गुरु राम रो कांई, दूर कर्यो जग अंधकार ।।5।।
महोर्दधि हो आगम ज्ञान रा कांई वादी मान रा मर्दन हार ।।6।।
तपस्या थांरी पूज्य हुक्म सी कांई, जवाहर सा क्रांति कार ।।7।।
घणो-घणो दीपे गवरा रो लाल काई, ''इन्द्र'' गावे जय-जय कार ।।8।।



अन्तर ज्ञान के

तर्ज : तनके तन्दुरे....

अन्तर ज्ञान के-2 दीप जलाया देखो, राम गुरु ने
आगम का अनुचिन्तन मंथन, जीवन में उतारा-2
खोजी बनकर निकल पडा था, निज का किया उद्धारा
पुण्य का संदीप प्रगटा हो ऽऽऽ नाना गुरु को पाया देखो ।। 1।।

अन्तर्यामी ने भी राम को, कितना गहन निहारा-2
ऐसा तराशा कला से क्या, दिया स्वरूप ही सारा
आज्ञा में अर्पित हो ऽऽऽ रे मन भी चढ़ाया देखो ।।2।।

लक्ष्य एक ही आचरण से ही उपदेश सुनाना-2
सर्जना होवे ऐसी विश्व में, मानवता है लाना,
समीक्षा का सुन्दर हो ऽऽऽ पाठ पढाया देखो ।।3।।

गर्जना समोशरण में सुन-2, लाखों बने शरणार्थी-2
देख-देख संयम चर्चा कहे, क्या जीवन परमार्थी
''इन्द्र'' कहे शासन का हो ऽऽऽ गौरव बढाया देखो ।।4।।

गुरु से नाता जोड

तर्ज : रेशमी सलवार कुर्त्ता

गुरु से नाता जोड-आनन्द पाएगा।
गुरु आज्ञा को छोड, कहाँ तू जाएगा (कहाँ क्या पाएगा)
तेरा मन तुझको भटकाता, नहीं गुरु पास ले जाता
तू मन से ही भरमाता, नही जीवन मे सुख पाता
सोच क्या पाएगा ॥1॥

तू चतुर चौक मे उलझा, जिससे मानस नही सुलझा
तू गुरु के सन्मुख खुल जा, नही गुरु है कोई दूजा
मस्त हो जाएगा ॥2॥

तेरा अन्तर मनवा रोए, वह वाट गुरु की जोए
क्यो समय अमोलक खोए, क्यो अहंकार मे सोए
रग क्या लाएगा ॥3॥

तेरा गुरु है समता धारी, तेरी अप्पा उनको प्यारी
तू पाले शरण सुखकारी, तेरी खिल जाए केशर क्यारी
मोद मनाएगा ॥4 ॥



जान से प्यारे

तर्ज : ऐ मेरे प्यारे वतन

जान से प्यारे गुरु, प्राण से प्यारे गुरु, तेरा नाम है राम।
तू ही संघ की जान है, तू ही संघ की शान है,
तू ही संघ की आन ॥टेर॥

नेमी का तू लाडला, गवरा मां का तू है लाल,
भूरा कुल मे जन्म लेकर, ऊंचा कर गया कुल का नाम,
जैन सघ की जान है तू, जैन संघ की तू है आन,
तेरा नाम है राम ॥1॥

हुक्मी संघ के नवम पट्टधर, नाना गुरु की जान है,
तुझसा पाकर रत्न ये संघ, कर रहा अभिमान है,
हुक्मी संघ की जान है तू, हुक्मी संघ की तू है शान,
तेरा नाम है राम ॥2॥

शास्त्र ज्ञाता मुक्ति दाता, तेरे काम महान है,
व्यसन मुक्ति के लिये, तूने किया आह्वान है,
प्रगति पथ पर अग्रसर तू, तेरा लक्ष्य महान,
तेरा नाम है राम ॥3॥

तेरी सूरत है सुहानी, प्यारा तेरा नाम है,
सबसे पावन तेरी वाणी, सबसे न्यारी तेरी शान,
चूम लू मै उस धरा को, जिसपे पडते तेरे पांव,
तेरा नाम है राम ॥4॥



जय जय जिनवर शासन

तर्ज : धरती की तरह

धरती का कण-कण, जन-जन का मन, गीत तुम्हारा गाएगा
नानेश तेरा रामेश जग मे, जैन धर्म चमकायेगा।

ये यश झडा लहरायेगा, जय जिन शासन।
जय-जय जिनवर शासन ॥टेर॥

सकट की घडिए निकल गई, बदली बाधा की दूर हुई
सुदर सुरभित उपवन की, महक चहु दिश फैल गई ॥1॥

निजशासन मे जीवन ढाला, प्रभु आण को प्रण से है पाला
कथनी करणी के समरूप से, ये हो गया कैसा उजियारा ॥2॥

देखी जिसने भी गुरुभक्ति, कैसी चरणो मे अनुरक्ति
अन्तर दृष्टि से हुआ चितन, संयम से समीचीन प्रवृत्ति ॥3॥

चादर के एक-एक तंतु मे, ऊर्जा भी भर दी क्या सारी
बीच सतो मे जो देखे, लगे नाना सी सूरत प्यारी ॥4॥

''इन्द्र'' नत हो गुरु को सुनायेगे, नानेश कभी न भूलायेगे
ये हरा भरा मेरा मधुवन, तीर्थेश से खूब खिलायेगे ॥5॥



आचार्य श्री रामेश, आगम के आख्याता

तर्ज : गुरुवर तेरे चरणों की

आचार्य श्री रामेश, आगम के आख्याता
तेजस्वी यशस्वी गणी, हो गण के प्रख्याता ॥टेर॥

भर यौवन मे गुरु ने, सयम पथ अपनाया।
विषयो से विरक्ति ले, अन्तरदीप प्रगटाया
तप त्याग से ही देखो, हुक्म संघ सुविधाता ॥1॥

अष्ट संपदा से शोभित, 36 गुण अधिकारी,
धन्य हो गये चारो तीर्थ, नानेश के आभारी
गभीर गिरा कैसी, जीवन के निर्माता ॥2॥

निष्ठा क्या वचनों मे, वैराग्य भरी वाणी
शान्ति कैसे पाये, बस सृष्टि का प्राणी
मुक्ति हो व्यसनों से, महामंत्र प्रदाता ॥3॥

अर्पित हो चरण में "इन्द्र" सेवक का तन-मन
कृपा ही गुरु की देती, शिवपुरी में होवे गमन
कुर्बानी से उपवन, आनन्द का खिल जाता ॥4॥



मिल्यो मिल्यो कल्पतरुवर सो शासन

तर्ज : खम्मा-खम्मा हो..

मिल्यो-मिल्यो कल्प तरुवर सो शासन
नाना-राम रो पायो सुंदर सिचन, किस्यो मन भावन ॥टेर॥

एक-एक गणिवर भी देखो, शोभा कियां बढाई हो
सह-सह परिषहा ने जग में, क्रान्ति भारी मचाई हो
सहिष्णुता भी कैसी लुभावण, ज्योति जगावण ॥1॥

वीणा री झंकार सीमित, मनडा ने मोहे रे
बडले री छाया भी, यूं ही समझो सोहे रे
वीर री वाणी रो सांचो पालन, सुंदर संचालन ॥2॥

आबालवृद्ध गणनायक री, समृद्धि में रेवे रे
गणिवर स्वय सेवा मे, तत्परता दिखावे रे
ज्ञान क्रिया रो अखड उपवन, बढता जावे चरण ॥3॥

पूज्य पाद हुक्म गुरु रो, आभार सब मिल गावा हो
एक आण मे चाल अतर, आशीष गुरु री पावां हो
जन-जन रो ''इन्द्र'' होवे अभिवादन, जयवत हो शासन ॥4॥



चहुं दिश यश देखो

तर्ज : धरती धोरा री

चहु दिश यश देखो काई पाई, कीरत नानेश ने फैलाई
देशाणे री महिमा बढाई, परख सवाई होऽऽ-2 ॥टेर ॥

लगनी आत्मज्ञान मे लागी, भावना भव मुक्ति री जागी
निकल पड़्यो संसार ने त्यागी ॥ 1॥

गुरु भी देखो राम ने निरखे, साचो जौहरी जीवन ने परखे
तिन्नाणं तारण हारी देखे ॥2॥

चादर जूनागढ ओढाई, अन्वेषणा आगम मे लगाई
आस्वादन दुनियॉ है पाई ॥3॥

जागे ''इन्द्र'' मे अन्तर दृष्टि, नयना सु निरखे समसृष्टि
गुरु री होवे ज्ञान वृष्टि ॥4 ॥



नित उठ अन्तर मन से गालो

तर्ज : मिलता है सच्चा...

नित उठ अन्तर मन से गालो, जय नाना गुरु जय राम गुरु
हे विघ्न हरण मंगल दाता, जय नाना गुरु जय राम गुरु ॥टेर॥

देवाधिदेव का ध्यान करे, गुरु चरणो मे हम शीष धरे
त्रिविध बाधाएं दूर हरे ॥1॥

कष्टों से मुक्ति सदा मिलती, फुलवारी जीवन की खिल जाती
तूफां से पार होवे किश्ती ॥2॥

अज्ञान तिमिर को दूर किया, प्रभु गौतम सा चित्त चरणे दिया
आस्था का दीप जला दिया ॥3॥

चारित्र चूडामणि उत्तम, वट वृक्ष सा विकसित संघ चमन
समर्पित हो बोले तन-मन ॥4॥

भक्ति की शक्ति निराली है, ''इन्द्र'' अंतर मे खुशहाली है
इस मंत्र की महिमा न्यारी है ॥5॥



नानेश पट्टधर राम

तर्ज : तुम तो ठहरे....

नानेश पट्टधर राम, गुरुवर को मेरा प्रणाम,
जन-जन के मनभावन, नाम है पतित पावन ॥टेर॥
गुरु सेवा की घडी, नजरों में घूम रही,

लक्ष्य था एक ही, पा जाऊ मुक्ति यही
वैराग्य का-2 रग लाई, देखो जवाहर की किरण ॥1॥

दशवैकालिक ही क्या, 32 आगम का मथन
अहर्निश जीवन का, एक ही है चितन
सेवा का-2 फल मेवा, पाया है गवरा नदन ॥2॥

सादा सीधा परिवेश, सीधी सरल भाषा,
अभिव्यक्ति आगम की, एक-एक परिभाषा,
जान गया-2 सारा जहान, अन्तर्यामी शृंगार नंदन ॥3॥

विभूति विश्व की विरल, ''इन्द्र'' जन्म मरण हरे
तमन्ना मन की पूरे, मुक्ति की राह वरे
त्रिविध-2 व्याधि हो दूर, मौन मांगलिक उत्तम ॥4॥



घणी घणी खम्मा हो म्हारा

तर्ज : पल्लो लटके..

घणी खम्मा-2 हो म्हारा देशाणे रा नाथ ने घणी खम्मा ॥टेर॥

देशाणे रो दिनकर देखो, समोसरण मे सोहे
हो यो तो नाना गुरु सो राम म्हारो मनडे मोहे ॥1॥

आगम ज्ञान है अजब गजब रो, ग्रंथी सारी खोले
हो इणने विरलो ही समझे, इसो दिल बोले ॥2॥

किरिया भी तो ज्ञान सग मे, बडी अनूठी पाले
हो यो तो जिसो अदर मे बीसो बाहर चाले ॥3॥

दशरथ नंदन राम सी ही, जग री भलाई चावे
हो यांरी तपस्या ने देख देव झुक जावे ॥4॥

मरूधरा रा नाथ थे तो, मरूधरा पधारो
हो ''इन्द्र'' धरती है धोरा री, सीचन दे तारो ॥5॥



कितना गहन है आगम का ज्ञान

तर्ज : नाना के नाम...

कितना गहन है आगम का ज्ञान, सागर सम गंभीर गुरुवर राम।
गादी दीपाई है, मेरे नाना गुरु की,
महिमा बढाई है मेरे नाना गुरु की ॥टेर॥

छोड़ दिया है जग को, आधि व्याधि से भरा जब जाना
पुण्यशाली पथ पे पाया, देखो पूज्यवर नाना
निस्पृहता, भरी वाणी, क्या रंग लाई है मेरे नाना गुरु की ॥1॥

साहसी है कैसा प्रतिश्रोत में समय लगाया
आत्मार्थी ही पाया, जब-जब गुरु ने निहारा
दुनियां से, दृष्टिहटा, समता क्या लाया है, मेरे नाना गुरु की ॥2॥

निज में निज का दर्शन, नही कभी है प्यारा प्रदर्शन
करणी भी है ऐसी, जिसमें झलकता है, अन्तर संयम
बीच संतो मे मानो, मिले, मूरत सुहानी है, मेरे नाना गुरु की ॥3॥
आठ पट्टधरो का ''इन्द्र'' तेज क्या राम मे आया
लेना सीखो आशीष गुरु की साक्षात् करके दिखाया
सेवा से शक्ति भी मिल गई है मेरे नाना गुरु की ॥4॥

राम चरणों में मस्तक झुकाते चलो

तर्ज : सिद्ध अरिहंत में मन....

राम चरणो मे मस्तक झुकाते चलो,
श्रद्धा भक्ति के दीप जलाते चलो ।।टेर ।।
चैत्र शुक्ला चउदश को जन्म लिया,
माता गवरा के आगन को पावन किया,
नाना गुणो से जीवन सजाते चलो ।। 1।।
तप त्याग से जीवन को महका दिया,
आगम वाणी को रग-रग मे रमा लिया,
गुरु सेवा का अमृत पिलाते चलो ।।2।।
तेरे चरणो के गुरुवर पुजारी बने,
तेरी सूरत मे नानेश के दर्शन मिले,
हुक्म शासन का गौरव गुंजाते चलो ।।3।।
व्यसन मुक्ति का सदेश घर-घर रहे,
सारे भारत मे राम का राज्य रहे,
''इन्द्र'' नानेश सी समता बढाते चलो ।।4।।



राम गुरु का होगा ईशारा

तर्ज : नाना गुरुवर है महाज्ञानी

राम गुरु का होगा ईशारा, उधर बढेगा कदम हमारा,
संघ को गुरु का सहारा, हम मस्तक झुकाएं,
बस आण पे तुम्हारा ।।टेर ।।

रूखी सुखी जो भी मिले, घर की रोटी सुहाये,
कितनी भी भव्य लालसा कभी डिगा न पाये,
क्योंकि नाना गुरु की हम पे बरसी शिक्षा धारा ॥1॥
इंगित दिशाएं जो मिले उसपे नजर रहेगी,
लुभावनी बातो पे दृष्टि नही भटकेगी,
युगदृष्टा जवाहर से ही तो पाया संघ ने नारा ॥2॥
एक आण पे जो चले, उसकी जग में कीमत
भटक गया जो पथ से, उसकी है बद किस्मत
लुढक गया पर्वत से तो कैसे चढे दुबारा ॥3॥
निवेदना श्री संघ को ''इन्द्र'' दिल से देते
सेनानी बन संघ के स्वप्न नये संजोते।
हम ही सजाये, हम ही खिलाये, है यह संघ हमारा ॥4॥



आज खुशियों का न पारावार है

तर्ज : दिल के अरमां

आज खुशियों का न पारावार है
हो रहे हर्षित करे सत्कार है ॥टेर॥
संघ साधुमार्गी महान है,
लक्ष्य ऊंचा, चाहता उत्थान है
नाना गुरु का मानेगे उपकार है ॥1॥
अर्ज अभिनन्दन वेला में एक है
करे समीक्षा दिल में कितने नेक है

दीप जलाये श्रद्धा के शत बार है ॥2॥

नवम् पट्टधर से दिशा हम पायेगे
आस्था के डोर मे बध जायेगे
चारो तीर्थ के गुरु आधार है ॥3॥



जन–जन के मन में बसे

तर्ज : जंगल में भी मंगल करे...

जन-जन के मन मे बसे, मेरे गुरुवर राम है,
श्रद्धा से सुमरे जो, होवे कल्याण है ॥टेर॥
सदेश जिनवर का, जग को बताया,
त्याग तपस्या का, पथ अपनाया
श्याम सलोनी सूरत, मीठी मुस्कान है ॥1॥
नानेश की सेवा क्या तुमने बजाई
अर्हनिश घडिये थी, गुरु ने लगाई
आशीष से परखे, गुरु पद प्रधान रे ॥2॥
समवशरण मे वाणी, वीर की सुनाते
नानेश क्या गणेश ही, नजरो मे आते
सयममय जीवन ही, जीना महान् है ॥3॥
पदरज जो आस्था से, सिर पे लगाते
रिद्धि सिद्धि के भडार भर जाते
''इन्द्र'' कहे नानेश का, माने अहसान रे ॥4॥

गुरुदेव के दर्शन से

तर्ज : क्या खूब लगती..

गुरुदेव के दर्शन से, चरणों में वदन से,
सोया जो, जन्मों का, भाग्य जगता है,
पदरज ले ले रामेश की, निहाल होता है ।।टेर ।।

जब-जब चरणों में आते, नजरों से नजर गुरु मिलाते
कलियें मन की खिल जाती,
गुरु आस्था की ज्योति दिल में जलाते ।।1।।

राम नाम ही तारण हारा, गुरु नाना से हमने पाया प्यारा
मेरे होठों पे राम रमता, अर्हनिश मे राम राम रटता,
सति ''इन्द्र'' अर्ज गुजारे, दया दृष्टि ही गुरु की,
भव से उबारे महर नानेश सी रखना,
दश दिशा में जिनवर नाद गूंजाना ।।3।।



आचार्य श्री रामेश के चरणों

-तर्ज : उठ भोर भई...

आचार्य श्री रामेश के हम चरणों में शीष झुकाते हैं
हे परमागम रहस्य ज्ञाता, नानेश के शिष्य कहाते है ।।टेर ।।

भर यौवन में जग त्याग दिया,
वैराग्य में मन को रग लिया
महावीर की वाणी सुनाते है ।।1।।

पूज्य हुक्म से घोर तपस्वी है,
जवाहर से जग मे यशस्वी है।
अहिसा का पाठ पढाते है ॥2॥

मौन मागलिक मगल करती है,
भडार भक्त के भरती है,
दारिद्र को दूर हटाते है ॥3॥

''इन्द्र'' राम नाम मंगलकारी
सकट मोचक गुरु गुणधारी
श्रद्धा के दीप जलाते है ॥4॥



आगम ज्ञान रा भंडार

तर्ज : नीले घोडे रा असवार...

आगम ज्ञान रा भंडार, म्हारा नानेश पट्टधर राम
गुरु को शत-शत करते नमन,
छूटे भव-भव रा जन्म मरण ॥टेर॥

अनार्य देश मे देखो ज्ञान की ज्योति गुरु ने जलाई
भर यौवन मे मुखडो मोडी, प्रीत सयम से लगाई
पंथ पकडयो प्रभुरो प्रधान, हो गया दुनिया मे महान् ॥1॥

सादा जीवन उच्च विचार की गजब है चिन्तन धारा
एक ही आदर्श है गुरु का, लक्ष्य हो उच्च हमारा
व्यसन मुक्ति रो अभियान, चलायो जन-जन मे भगवान ॥2॥

छटा निराली समोवशरण री, चांद सा निर्मल छाजे
बीच संतो में गंवरा रो लाल, गजानंद सा राजे
देवे जनता ने सद्ज्ञान, दूर कर दिया अज्ञान ॥3॥

घणी-घणी खमा म्हारा नाथ ने, शासन ने दिपायो
''इन्द्र'' कहे सुधर्मा स्वामी रो, पाट कांई चमकायो
करता अर्पण तन-मन प्राण, होवे आत्मा रो उत्थान ॥4॥



नन्दन वन सो शासन

तर्ज : आ बाबासा री लाडली.....

यो नन्दनवन सो शासन, म्हाने घणो सुहावे रे,
घणो सुहावे सुख शांति रो, तरू लहरावे रे ॥टेर॥

घोर तपस्वी पूज्य हुक्मी ने, परिश्रमा सूं लगायो रे,
आठों गणिवरा रो सीचन, रंग अनूठो लायो रे,
नानेश पट्टधर राम गुरु, कांई शोभा बढावे रे ॥1॥
रोम-रोम मे भरी है देखो, गुरुवर रे आगम वाणी,
एक ही भावना बस तिर जाये, सारे सृष्टि रा प्राणी,
घूम-घूम कर नगर डगर मे, अलख जगावेरे ॥2॥

सत्य अहिंसा तपरी महिमा, देखो काई फैलाई रे ।
शांति वर्ते प्राणी मात्र मे, मैत्री भावना भाई रे ।
प्रशांत मुद्रा रा दर्शन, दारिद्र मिटावे रे ॥3॥

सति ''इन्द्र'' कहे श्रद्धा दीप, अंतर मे जलावो रे।
पूण होवे मन का मनोरथ, चाहो सो ही पावो रे।
आशीष ले लो गुरुदेव की, मुक्ति मिल जावे रे ॥4॥



नानेश पट्टधर गुरुवर राम

तर्ज : सेवो सिद्ध....

नानेश पट्टधर गुरुवर राम चरण में वंदन करते है
वदन करते है, सादर शीष झुकाते है ॥टेर॥

तिमिर अज्ञान का दूर होवे, जो वाणी सुने एक बार
मन वांछित पूरण हो जावे आनद वर्ते है ॥1॥

समोशरण मे बीच विराजे, सोहे नभ ज्यूं चांद
अभियान भी कितना उत्तम व्यसन छुडाते है ॥2॥

श्याम सलोनी काया मूरत, गुरु की मोहनगार
मौन मांगलिक सुनकर, सुख की बशी बजाते है ॥3॥
घणी-घणी खम्मा मॉ गंवरा के लाल को हो प्रणाम
सति ''इन्द्र'' कहे आस्था से ही मुक्ति वरते है ॥4॥



गुरु राम की कथा निराली

तर्ज - जय बोलो महावीर .....

गुरु राम की कथा निराली है,
जन-जन के वल्लभकारी है॥ टेर॥

मुनि आद्र सा देखो निकल पड़ा, गुरु नाना के नयनों मे चढा,
लगी लगनी चरण में भारी है ॥1॥
अंतरदृष्टि गुरु की जागी, शिक्षा शास्त्र की भी लागी,
तन्मयता त्याग की न्यारी है ॥2॥
जौहरी सा नाना गुरु प्यारा, शासन का होगा उजियारा,
चादर ओढाई प्यारी है ॥3॥
लाल मरुधरा का खूब तपे, रहे दृष्टि दया की श्री संघ पे,
''इन्द्र'' चरणों की दुनिया पूजारी है ॥4॥



जिनके जीवन की यश गाथाएं

तर्ज : जहाँ डाल डाल पर....

जिनके जीवन की यश गाथाएं, नर क्या देव भी गाये,
हम ऐसे शासक पाए, स्वामी सुधर्मा के पट्टधर,
नानेश को शीष झुकाए, हम ऐसे शासक पाये ॥टेर॥

तज अगणित अभिनंदन जनता का, महावीर प्रण पाला,
रणभूमि में योद्धा सी, झेली कितनी ज्वाला-2,
आदर्श रहा है संघ हमारा, लोह पुरुष राम को पाये ॥1॥

समता सरोवर में जिसने, गहरी डूबकी लगाई,
सर्वोच्च रहा है चिंतन जिनका, दुनियाँ रही चकराई,
उस प्रज्ञापुंज को दक्षिणा में, समर्पणा बकसाएँ ॥2॥

पूर्वाचार्यो की इतिहासो मे, है अमर कहानी,
विरले ही दे सकते है, शासन मे कुर्बानी,
''इन्द्र'' कहे अन्तर अर्पणा का, गुलशन भेट चढाएँ ॥3॥



धन्य घड़ियां आज की आई

तर्ज : तुम्हीं....

धन्य घडियां है आज की आई,
दीक्षा जयति नानेश पट्टधर की पाई ॥टेर॥

युगदृष्टा जवाहर की वाणी थी कैसी,
वैराग्यमय स्वामी सुधर्मा जैसी,
गाथा अनाथी की आत्मा जगाई ॥1॥

निकल पडा देखो मुक्ति का राही,
नानेश दर्शन से दिल ने दे दी गवाही,
अर्पणा अनुपम चरणे दर्शाई ॥2॥

गुरु चरण के होके पुजारी,
गुण सत्ताईस के हुए धारी,
लोकेषणा सारी दी विसराई ॥3॥

सयम का अर्थ ही है गुरु सेवा,
36 गुण धारी ने पाया है मेवा,
प्रणेता शासन के हो सुखदाई ॥4॥

आलोकित जीवन को हो गर बनाना,
''इन्द्र'' कहे आस्था के दीप जलाना,
अर्पित सेवक की खिली पुण्याई ॥5॥



गंवरा के लाल की महिमा

तर्ज : गाते रहेंगे....

गंवरा के लाल की महिमा है न्यारी,
मिथ्या तिमिर में उलझे जग का, भ्रम देवे निवारी ॥टेर॥

अनार्य देश में अनाथी मुनि की किरण नजरें आई,
दूर हो गई व्याधि, अशरण भावना जब भाई,
झुकते मस्तक गुरु चरण में कामना विसारी ॥1॥

संयम समर्पण सेवा से, शोभित है सुज्ञानी,
रखे निरन्तर ध्यान नानेश मेरे थे महाज्ञानी,
क्रांतिकारी हुए हैं इतने 36 गुण अधिकारी ॥2॥

श्रमणों में है श्रेष्ठ श्रमण अन्तर्यामी प्यारे,
देदी पदवी जूनागढ में युवाचार्य पद धारे,
देशाणे का मान बढाया, लाखों भक्त पुकारी ॥3॥

संगठन प्रेमी बन हम तो, एक आण में चाले,
सति ''इन्द्र'' कहे गुरु आण में चले जो निराले,
विरला ही कोई जान सकेगा, गुरु है चमत्कारी ॥4॥



राम धुन मचाऊं

राम धुन मचाऊ, गुरु राम राम राम,
मेरा भजन रहे, गुरु राम राम राम।
मेरे हृदय मे राम, मेरे होठो पे राम,
हृदय होठो पे रहे, गुरु राम राम राम, राम धुन
मेरे विचारो मे राम, मेरे आचारो मे राम,
मेरा ज्ञान है राम, मेरा ध्यान है राम,
ज्ञान ध्यान मे रहे, गुरु राम राम राम, राम धुन ..
मेरे श्वास मे राम, उच्छ्वास मे राम,
श्वासोच्छवास मे रहे, गुरु राम राम राम, राम धुन.
मेरे तन मे है राम, मेरे मन मे है राम,
तन मन मे रहे, गुरु राम राम राम, राम धुन
मेरे घर मे है राम, मेरे गॉव मे राम,
देश विदेश मे रहे, गुरु राम राम राम, राम धुन .
जन-जन मे है राम, नाना गुरुवर का राम,
प्रकाश कहे, गुरु राम राम राम, राम धुन ।



उच्च शिखर पर चढता साधुमार्गी संघ

तर्ज : देख तेरे संसार की हालत......

उच्च शिखर पर चढता, साधुमार्गी संघ है आज,
तपस्या त्याग की भरी सुवास।
विस्तृत छाया सघ तरु की, सुखद सरस निवास ।।टेर।।

सौभाग्य हमारा हम सब गायें, जीवन अपना धन्य बनाये,
एकता का अमृत पाये, संगठन की वीणा बजाये,
चले निरन्तर एक आण में, सतत करे प्रयास ।। 1।।

गुरु हुक्मी ने नींव लगाई, आठ पाट ने दी गहराई,
नई रोशनी राम से पाई, भ्रमणा सारी देवे मिटाई,
याद करें हम गुरु नाना से, पाया कैसा प्रकाश ।।2 ।।

जोश हमारा सदा बढ़ेगा, होश भी संग में नित्य रहेगा,
कोई किसी से कम न रहेगा, गौरव संघ का हममें बढेगा,
अफवाहो से दूर रहेगा, निन्दा से अवकाश ।।3।।

सच्चे गर हैं हम अनुयायी, ''इन्द्र'' कहे पायेंगे दुआई,
पुरखों की मुझे याद आई, कर कर श्रम क्या कीर्ति फैलाई,
गुरु अरमानों को पूरेंगे, पाये मुक्ति आवास ।।4।।



हम महिमा बढ़ायेंगे

तर्ज : मैं तो आरती उतारूं रे....

हम महिमा बढ़ायेंगे, हुक्म शासन की,
जय जय नानेश पट्टधर, जय जय जय-2 ।।टेर ।।

पाया अद्‌भुत आगम ज्ञान, गुरु ने जीवन में-2
समय लगाया देखो महान्, आत्मरमण में-2,
अहर्निश करे ध्यान, दूर करे दुर्ध्यान,
गरिमा क्या गावें रे, हो गुरु की गरिमा क्या गावें रे ।। 1।।

कल्पतरु सा है पावन, भक्तो का मन बोले,
पूरे मनोरथ मन भावन, संदेश है अनमोले,
कैसे करू सन्मान, नही पाये अभिमान,
36 गुणधारी रे, हो गुरु 36 गुण धारी रे ।।2।।
गति समीर सी, साहसी अपार, गंभीर मुख मुद्रा,
मिथ्या तिमिर को देवे निवार, दूर हो जाये तंद्रा,
ओ मेरे भास्कर, अज्ञान मेरा हर,
शीष नमाऊ रे हो गुरु को शीष नमाऊ रे ।।3।।
चारो तीर्थ मिल करे आज, अर्जी प्रभुवर से,
अमरासन हो रामेश का, कहूं अंतर दिल से,
''इन्द्र'' कहे प्राण है, जीवन कुर्बान है,
शिवपुर चावे रे हो चरणे शिवसुख चावे रे ।।4 ।।



बोलो रे बोलो रे जय बोलो

तर्ज : एक दो तीन.....

बोलो रे बोलो रे बोलो जय बोलो रे बोलो रे बोलो,
नानेश पट्टधर राम, चरणो मे शत शत प्रणाम ।।टेर ।।
मुस्कानभरी है मुद्रा तुम्हारी, देख देख आत्मा हर्षे हमारी,
जब आगमवाणी सुनाते, नानेश ही नजरो मे आते,
तपस्वी जग मे महान ।। 1।।

साहसी श्री गुरु सा पाया, क्रान्तिकारी गुरु गणेश सा भाया,
मान सम्मान का विष न पाया, निरन्तर पुरुषार्थ मन भाया,
संयममय जीवन प्रधान ॥2॥
कुदरत गुरु की होके रहेगी, बाधाएं पथ की दूर टलेगी,
आशीष आठों पट्टधर की होगी, "इन्द्र" की अंतरात्मा खिलेगी,
शिवपुर का दे देना स्थान ॥3॥



अरिहंत सिद्ध पद रा दातार

तर्ज–जाणुं भक्ति

अरिहंत सिद्ध पद रा दातार, नाना राम रो आधार,
अर्जी अन्तर री सुणजो जी,
खबरा जीवन री लीजोजी ॥टेर॥
लाखों उपमा है शास्त्र में, किसी गुरु ने लगाऊं ?
नलिनी नीर सो जीवन किस्यों, वर्णन कर ना पाऊं,
काम क्रोध ने दिया निवार, ज्ञान गुणा रा भंडार ॥1॥
तरसती आख्या लाखों जन री, द्वार पे अर्ज गुजारे,
होता ही मूरत रा दर्शन, जय-जयकार पुकारे,
अंगूठे में अमृतधार, पाकर हो जावे निहाल ॥2॥
तेज सूरज रो दुनियां में, विरला ही झेल सकसी,
अज्ञानी हाथा मे आयो, हीरो ना संभल सी,
थारी समता है प्रख्यात, हुक्म शासन रा प्रभात ॥3॥

सगला तीरथ करो भले पर, गुरु सा कोई न जग मे,
सति ''इन्द्र'' की एक ही भावना, रहो गुरु री नजर मे,
करदो जीवन सब कुर्बान, गुरु है सर्व सुखो रा निधान ।।4।।



सुबह शाम मुख से बस बोलो

सुबह शाम मुख से बस बोलो, जय-जय गुरुवर राम-2,
गुरु की त्याग तपस्या से ही, चमके संघ महान् ।।टेर ।।
मा गंवरा के ऽऽ लाल तुम्हारी, भक्ति करे, लाखो नर-नारी,
मंगल ही मंगल हो जाए-2, लेते राम का नाम ।। 1।।
शास्त्र सुधा ऽऽ, क्या मुख से बरसे, सुन-सुन के, मन सबका हरसे,
घूम-घूम के देश-2 मे, दूर करो अज्ञान ।।2।।
सोये जग को ऽऽ, गुरु जगा दो, मिथ्या तिमिर, दूर हटा दो,
शरण तुम्हारी जो भी लेगा-2, पाये नव-निधान ।।3 ।।
हु शि उ चौ ऽऽ, श्री जग नाना, राम शासन को, खूब बढाना,
लाल का लाल ही ''इन्द्र'' पूरेगा, जग के सब अरमान ।।4।।



ॐ जय आगम ज्ञाता

तर्ज—ॐ जय नानेश

ॐ जय आगम ज्ञाता, हो स्वामी परमागम ज्ञाता,
महायशस्वी तपस्वी, संघ के अनुशास्ता ।।टेर ।।
बाल ब्रह्मचारी, छत्तीस गुण धारी-2,
पंचाचार के पालक-2, जग मे प्रख्याता ।। 1।।

समवशरण में विराजे, पद्मासन धारी-2,
गुरु गणेश से सोहे-2, वाणी व्याख्याता ॥2॥
अनुचितन नित नूतन, नानेश पट्टधर का-2,
विरल विश्व में विभूति-2, सत्पथ प्रदाता ॥3॥
आधि व्याधि कांइ तन की, मिटे प्रेत छाया-2,
राम नाम की धून से-2, विघ्न टल जाता ॥4॥
गंवरा नन्दन राम का, ध्यान धरो भाई-2,
''इन्द्र'' कहे उस जन के-2, वर्ते सुख साता ॥5॥

***

भक्ति शबरी सी हो

तर्ज-मैं आंखें बंद करूं

भक्ति शबरी सी हो सबमें, ऐसी शक्ति दे देना,
राम भक्त हनुमान बने सब, ऐसा वर देना ॥टेर॥
राम राज्य को पाया हमने, रोम-रोम विकसाया,
महाप्रज्ञा है नाना गुरु की। राम को पाट बिठाया,
गौरव गाथा SSS सदा ही गाये, ऐसी धडकन दे देना ॥1॥
संयम के तुम महाशिखर हो, आगम धन के हो आकार,
तपोपूत महासाधक हो तुम, वीर वाणी के हो प्रकार,
सब कुछ है SSS अर्पण ये तुझको, अज्ञ तिमिर सब हर लेना ॥2॥
पदलिप्सा की नहीं कामना, आत्म साधना भाये।
लघुमुनि मैं बना रहूं बस, भरी सभा में सुनाएं।
बिन पद मैं SSS कार्य करूं बस, आशीष दे देना ॥3॥

हु शि उ चौ श्री जग नाना, राम नाम प्रगटाये,
क्राति जवाहर सी फैलाकर, भ्राति सारी हटाये,
''इन्द्र'' कहे ऽऽऽ सब कुछ है समर्पण, शिव सुख दे देना ।।4।।

***

हुक्म संघ में हुए महान्

तर्ज–शांतिनाथजी को कीजे...

हुक्म सघ मे हुए महान, नानेश पट्टधर गुरुवर राम,
दशरथ नदन से पुण्यवान, संकट मे सुमरो गुरु राम ।। 1।।
सयम साधना जिनकी सख्त, लाखो खडे हैं शरणे भक्त,
समवशरण विराजे राम, सितारो बीच शशि सम श्याम ।।2।।
भगीरथ सा है कैसा त्याग, आगम वाणी मे अनुराग,
इच्छित होते मन के काम, जो रटता है गुरु का नाम ।।3।।
नदन वन सा खिलाया बाग, शासन का ही है अहोभाग,
अतिशय धारी प्रज्ञावान, श्रद्धा से नित करो प्रणाम ।।4।।
समीर सी कैसी सुंदर चाल, केई धराए हुई निहाल,
त्रिविध व्याधि से मिले आराम, यक्षादिक भय मिटे तमाम ।।5।।
चरण रज भी बडी कमाल, पाये जिनके भाग्य विशाल,
शेर बब्बर सी गर्जना जान, गूढागम का कराते पान ।।6।।
तन्मय हो जो राम रटे, जन्म-जन्म के बन्धन कटे,
महामहर्षि योगेश जान, चौथ गुरु सी है पहचान ।।7।।
रिद्धि सिद्धि से भरे भडार, गवरा नदन वल्लभकार,
माधुर्य भरी है मुस्कान, दर्शन से होवे कल्याण ।।8।।

सती ''इन्द्र'' को है विश्वास, चिंता चूरे पूरे आश,
जय-जय बोले गुरुवर राम, पा जाये मुक्ति में स्थान ॥9॥



श्रद्धानत हो चरणों में

तर्ज : म्हारे नैणा में....

श्रद्धानत हो चरणों में, गावां गुरुवर थारां गीत,
जागी पुण्याई म्हारे शासन री ॥टेर॥
मर्यादा पुरुषोत्तम प्रगट्या, भूरा कुल हर्षाया,
पितु नेमि मां गंवरा आंगन, मंगल थाल बजाया,
खुशियां मनावे परिजन, परम पुनित ॥1॥
मुनि अनाथी रो जीवन पढ, आयो घट वैराग,
गुरु सेवा भक्ति सुं बणग्या संघ रा दिव्य चिराग,
आगम मंथन कर कर, पायो नवनीत ॥2॥
मंत्राक्षर है नाम राम रो, जपता सिद्धि पावे,
जीवन नैया रा संचालक, पल में पार लगावें,
थारे चरणां सुं गुरुवर, लागी म्हाने प्रीत ॥3॥
सदा बहार यो संघ आपणो, राम सभी मन भायो,
गुरु नाना री परम कृपा सुं, नन्दन वन यो पायो,
इण रे कण कण में गूंजे, ''इन्द्र'' श्रद्धा रो संगीत ॥4॥



विपदा को दूर करने वाले

तर्ज : गुण के निधान

विपदा को दूर करने वाले, घनश्याम थे,
नाना गुण खान थे जी, नाना गुण खान थे ।।टेर ।।

श्रृंगारा के प्यारे, मोडी कुल के सितारे थे,
डुबती नैया के, गुरुवर खैवनहारे थे,
लाखो को तिराया, वे तो बडे दयावान थे ।। 1।।

स्नेह भरी दृष्टि जिस, ओर उठ जाती थी,
भक्त जनो को अमृत, घूंट मिल जाती थी,
छोटे छोटे बच्चो पर, बडे मेहरबान थे ।।2 ।।

श्रद्धा भरे दिलो की, धडकन पुकारती,
एक बार दर्श दे दो, पलके निहारती,
बने जग अभिराम, ''इन्द्र'' के तो प्राण थे ।।3 ।।



जिनशासन के शान की

तर्ज : सुबह और शाम की....

जिनशासन के शान की, नवम पट्टधर राम की,
जय जय बोलो, सब मिल जय जय बोलो ।।टेर ।।
मुनि अनाथी के जीवन से नश्वरता को जाना है,
सयम पथ पर कदम बढाकर, शाश्वत पद को पाना है,
सकट मोचन हार की, छ काया प्रतिपाल की ।। 1।।

योग्य गुणों को देख गुरु ने, अपने पाट बिठाया है,
ज्ञान क्रिया तप त्याग के बल से, जग में नाम कमाया है,
तिरण तारण जहाज की, भक्तों के भगवान की ॥2॥
शासन शान बढ़ेगी इनसे, हुक्म संघ सरताज है,
नाना गुरु से महायोगी पर सति ''इन्द्र'' को नाज है,
करुणा के अवतार की, जन जन के आधार की ॥3॥



हु शि उ चौ श्री जग नाना

तर्ज : उड़ते पंछी....

हु शि उ चौ श्री जग नाना,
राम को शीष नमाएं, राम गुरु गुण गायें
नाना गुरु के पट्टधर की, सब मिलकर जय जय गाये
राम गुरु...... ॥टेर॥

देशाणे की पुण्य धरा पर, गुरु ने जन्म है पाया,
मां गंवरा और पितु नेमि का, मनवा खूब हरषाया,
भूरा कुल दीपक बन करके, लाखों दीप जलाये ॥1॥
मुनि अनाथी के जीवन से, नश्वरता को जाना,
गुरु नाना से संयम पाकर, पाये ज्ञान खजाना,
विनय भाव और गुरु सेवा से, अन्तराशीष पाये ॥2॥
महावीर के उपदेशों से, निज आतम को सजाया,
सहनशीलता सार जीवन का, जन जन को सिखाया,
जो भी इनके चरणे आये, भव सागर तिर जाये ॥3॥

नवम् पाट का सूरज देखो, तप का तेज बढाया,
व्यसन मुक्ति और समता की किरणो से, जग को जगाया,
''इन्द्र'' प्रशातमना गुरुवर के, शासन को चमकाये ।।4।।



हो हो हो हम सब, करें शुभकामना

तर्ज : हो हो हो म्हारी तपस्या री....

हो हो हो हम सब, करें शुभकामना,
सदा स्वस्थ रहे, गुरु हमारे यही प्रभु से प्रार्थना ।।टेर ।।
दीर्घायु हो युगो युगो तक, शासन के वर देवता,
संत सतीवर बीच विराजो, रवि शशी सम शोभता,
रहे निरामय स्वास्थ्य आपका, करे चरण उपासना ।। 1।।

नैया डोले भवसागर मे, तू ही तारण हारा,
शरण लिया है तेरे नाम का, अवर न कोई सहारा,
आशीष बरसे प्रतिपल संघ पर, भक्तजनो की चाहना ।।2।।

नाना गुरु के पट्टधर प्यारे, राम सभी मन भाये,
आओ सब मिल इन चरणो मे, सादर शीश झुकाये,
बनो यशस्वी जग मे गुरुवर ''इन्द्र'' की मगलकामना ।।3।।



हो हो हो जन्म दिवस सुहावणो

तर्ज : हो हो हो म्हारे तपस्या री....

हो हो हो जन्म दिवस सुहावणो,
राम जन्म सुं पावन बणग्यो, मां गंवरा आंगणो ॥टेर॥

चेत सुदि 14 रो सूरज, शुभ संदेशों लायो,
भूरा कुल में आनन्द रो, उजलो प्रकाश फैलायो,
परिजन रे मुखड़ा पर छायो, हर्ष रंग रलियावणो ॥1॥

व्याधि की आंधी ने घेरा, बचपन बीता सारा,
जयपुर में गुरु दर्शन पा, वैराग्य भाव मन धारा,
एकनिष्ठा सुं अपनायो, संयम पथ मन भावणो ॥2॥

गुरु सेवा का मेवा देखो, पुण्योदय सुं पाया,
जूनागढ रे प्रांगण में, युवाचार्य पद सहराया,
जिनशासन रा नायक बणग्या ''इन्द्र'' भाग्य सरावणो ॥3॥



जन्म महोत्सव आया है

तर्ज : प्यार दिवाना....

जन्म महोत्सव आया है, खुशियां संग लाया है,
भूरा कुल दीपक बनकर, श्री राम आया है ॥टेर॥

पितु नेमि का आगन, चहक रहा था,
गंवरा माता का ललना, पुलक रहा था,
चेत सुदि 14 को, शुभ सवाद सुनाया है ॥1॥

व्याधि ने तन को घेरा, उपचार ना लगा,
मुनि अनाथी के जीवन से, चितन जगा,
किरणावली निमित्त बनी, विरक्ति लाया है ।।2।।

त्याग मे मन रमाया, गुरु शरण आ,
कैसे छूटूं बधन से, रास्ता बना,
प्रज्ञा के बल से सयम का पथ अपनाया है ।।3।।

स्वाध्याय सेवा मे, तन्मय बने,
नानेश दृष्टि मे रहकर रामेश बने,
यश पताका फहरें ''इन्द्र'' ने नाद गुंजाया है ।।4।।



राम गुरु को वंदन करके

तर्ज : उडते पंछी....

राम गुरु को वदन करके, पुलकित है जन सारे,
कहे राम है प्यारे, नाना गुरु सा योगी पाकर,
खिल गये भाग्य हमारे, कहे राम है प्यारे ।।टेर।।

सयम की उच्च साधना करके, जीवन खूब संवारा।
दिव्य गुणो को धारण करके, हो गये सघ सहारा,
अन्तर मन मे ध्यान धरे सब, अपने कष्ट निवारे ।।1।

शास्त्रों के अनुसार गुरु ने, सार अथाह है पाया,
नाना गुरु के शुभाशीष से, ज्ञान दीप जलाया,
लेकर सम्बल इनका सब जन, आत्म ज्ञान निखारे ।।2

भक्तिमय होकर के सबको, राम गुरु मे रमना,
श्रद्धा के अटूट भावो से, सेवा अब है करना,
नाना के ये ''प्रफुल्ल'' योगी, सबके मोहनगारे ॥3॥



नाना गुरु रो पट्टधर प्यारो

तर्ज : देवता रे दर्शन....

नाना गुरु रो पट्टधर प्यारो, राम गुरु मन भावे रे,
श्रद्धा सुं करता गुरु दर्शन, मन वाछित फल पावे रे ॥टेर॥

समकित रा दीवड़ा प्रगटावो, श्रद्धा रो हार पहरावां रे,
अगर सुं आंगणियो सुरभित कर, सौरभ भक्ति पावे रे ॥1॥
मान सरोवर रे हंसले ज्यूं, मोती चुगणहारा रे,
विरला ही कोई दुनियां मे मिलसी, ज्योति कैसी जलावे रे ॥2॥
विश्व कल्याण री भावना कैसी, व्यसनमुक्ति रो नांद गुंजावे रे,
श्रीवाल ने तारणहारा, लाखां ने पार लगावे रे ॥3॥
चमक रही है देखो सूरत, श्रृंगार नंदन सी प्यारी,
पद रज ले ले गुरु चरण री, भव सागर तिर जावे रे ॥4॥
सति ''इन्द्र'' कहे आनन्द पावो, राम धुन लगावो रे,
जो भी चावे, जब भी आवे, मौन मांगलिक सुं पावे रे ॥5॥



ये देशाणे वाला, गुरु नाना ने पाला

तर्ज : गोरी कलैया

ये देशाणे वाला, गुरु नाना ने पाला, राम गुरुवर हमारा,
करो इनको नमन, होवे सफल जनम,
सुख संपत्ति का दातारा ॥टेर॥

समकित की गहरी, नींव लगा दो,
भक्ति का दीप जरा, दिल मे जला दो,
तुफा से बचा दो, जरा जीवन बना दो,
राम नाम जग का है प्यारा ॥1॥

करणी तो देखो गुरु हुक्म सी ऊची,
दृष्टि भी जवाहर सी कितनी पहुची,
गजानंद सा देखो, अतर मे पेखो,
नाना का रूप ही सारा ॥2॥

नंदन वन सा सघ साधुमार्गी जानो,
''इन्द्र'' कहे कल्पतरु वर सा मानो,
चचलता हटादो, कुछ धीरज लादो,
घर घर गूंजे ये नारा ॥3॥

❋❋❋

हो मुक्तिदाता गुरुवर

तर्ज : चूडी मजा....

हो मुक्ति दाता गुरुवर रास्ता हमे दिखा दो,
हे राम गुरु अमृत, आगम का अब पिला दो ॥टेर॥

शास्त्रो का करके मंथन, जीवन में कैसा ढाला,
अर्जुन सी दृष्टि रख बस, नानेश वचन है पाला,
इंगित ईशारों पे ही चलना गुरु सीखादो ॥1॥

गुरु जिन नही पर जिन से, उपमित शास्त्र कहता,
गोविन्द से ही दिल से जो ध्यान लगाता,
रसना हो जाये पावन, राम नाम में रमा दो ॥2॥

नयनों से मिले नयन, सन्मुख सदा ही रहना,
''इन्द्र'' कहे गुरु चरणे, मस्तक सदा झुकाना,
विशाल वट सी गहरी, जड भक्ति की लगा दो ॥3॥



राम गुरुवर हुक्म संघ की शान है

तर्ज : वीर वाणी की...

राम गुरुवर हुक्म संघ की शान है,
श्रद्धा भक्ति से करें प्रणाम रे ॥टेर॥

कैसा चमका आज, मरुधरा मोती,
ज्ञान दर्शन की जगी, अद्‌भुत ज्योति,
नाना गुरु का मानेंगे, अहसान रे ॥1॥

ग्रंथि सारी आगमों, की खोल दी,
अनुशासन की शिक्षा, भी अनमोल दी,
नन्दन वन सा, जीवन मिला महान् रे ॥2॥

मन मोहनी मूरत, लगे मन भावनी,
झडिये लगी तप की, जैसे ऋतु सावनी,
अर्ह निश जिनका समीक्षण ध्यान रे ॥3॥
''इन्द्र'' आस्था तेज गुरु पे बढ जाए,
मानो झोली खाली, अपनी भर जाए,
गुरु दर्शन विश्व, का कल्याण रे ॥4॥



हेमगिरी सा, अविचल शासन

तर्ज : झिलमिल सितारों.....

हेमगिरी सा, अविचल शासन,
अमर रहो नानेश, पट्टधर का आसन,
कितना सुन्दर नन्दन वन सा, खिल रहा मन भावन ॥ टेर ॥
संघ निर्माता, भाग्य विधाता, हुक्म गुरु ने ध्यावो,
उठ सवेरे छंद गुरु का, भाव भक्ति सु गावो,
तन मन कांई जीवन होवे पावन ॥1 ॥
परिश्रमां सु सीच-2 काई, बडलो हे लहरायो,
गहरी जडा है त्याग तप री, शीतलता वर्तावो,
अतर मे जिनके स्वामी, सुधर्मा के आगम ॥2 ॥
एक आण मे शिक्षा दीक्षा, प्यारा नही आडम्बर,
सेवा समर्पणा साधना से, विशाल जैसे अम्बर,
आबाल वृद्धां रो सुखकारी आश्रम ॥3 ॥

जितनी भी है राम गुरु के, दिल में उमंगें,
आओ हिलमिल हम सब ''इन्द्र'', पूर्ण करेगे,
घणो-2 चमके मा, गंवरा रो नंदन ।।4।।



मेरे भाग्य विधाता गुरु राम

तर्ज - ओ मेरे दिले नादान

मेरे भाग्य विधाता गुरु राम, जीवन को सजाना है,
तेरी अर्चा पूजा करे, भव जल से तिरना है ।।टेर।।
संयम की सुधा तेरी, देवों को लुभाती है-2,
आगम से सधी वाणी, पावन पथ देती है,
कुंठित दु खमय सारा, गुरु अब तो हरना है ।।1।।
तेरी दिव्य सुषमा को, नयनों में बसाया है,
निर्देश तेरा भगवन, प्राणों में समाया है,
जीवन के तारों में, बस तेरा तराना है ।।2।।
धरती के आंचल मे, तेरा यश छाया है,
होगी अब तो क्रान्ति, युग पुरुष को पाया है,
'इन्द्र' समर्पणा वीणा, हर पल ही बजाना है ।।3।।



गुरुदेव थे तो म्हापर आछी महर करी

तर्ज :- गुरुदेव अचानक ....

गुरुदेव थे तो म्हापर आछी महर करी,
महर करी गुरुसा महर करी ।।टेर।।

कृपा हुई नाना री जद, पाट पे है लाया-2,
अचानक चादणो हुयो, सिगला ने भाया-2,
चमकेला शासन यारी, साधना गहरी ॥ 1 ॥

दातारे दातारी, महिमा घणी गावे,
जवाहर गजानंद री, याद है दिलावे,
आगम रो मथन करे, शासन पहरी ॥2 ॥

राम गुरु सा रो मैं, हुक्म उठावा,
आशीष मिलसी यारी, परचो मै पावा,
मुक्ति पुरी ने चावा 'इन्द्र' ध्वजा लहरी ॥3 ॥



गुरु दर्शन का कैसा नजारा

तर्ज :- तेरा साथ है कितना ....

गुरु दर्शन का कैसा नजारा, खिल गया मानो भूतल सारा।
जन-जन का उजियारा हम झुकते रहेगे गुरुदेव चरण मे ॥टेर॥
हुक्म संघ की शान ये, रामेश गुरु महान-2
सागर सम गभीर है, सौम्य गुणो की खान-2
कितना पावन हो ऽऽ-2 इनका जीवन, वारि जाए चरण मे
हम झुकते रहेगे गुरुदेव चरण मे ॥ 1॥
जीवन के विज्ञान का तुमने दिया विज्ञान-2
विनय गुणो को पाकर के बढ जाता है मान-2
संदेश तुम्हारा हो ऽऽऽ -2 हमको प्यारा वारि जाए चरण मे
हम झुकते रहेगे गुरुदेव चरण मे ॥2 ॥

निर्बल के बल हो तुम्ही भक्तों के भगवान -2
आत्मीयता के केन्द्र तुम्ही, तुमसे हर अरमान-2
नाता तुमसे हो ऽऽऽ-2 जनम-जनम का वारि जाए चरण में
हम झुकते रहेंगे गुरुदेव चरण में ॥3॥

श्रद्धानत होकर कहें सुनलो है गुरु राम,
आत्मज्ञान को पाकर के, पायें मोक्ष धाम,
'इन्द्र' गगन के हो ऽऽऽ-2, ज्योति तारे वारि जाएं चरण मे,
हम झुकते रहेंगे गुरुदेव चरण में ॥4॥



नानेश जन्म जयंति

तर्ज : धरती धोरा री...

जिनशासन री शान बढाई, भक्ता री पीर पल में मिटाई,
महिमा सुर-नर-मुनि गण गाई,
जन्म जंयति आई-2 ॥टेर॥

मनमोहनी मूरत न्यारी, दर्श सुं कोटि कटे कर्मा री,
दसों दिश मिल जय गुरु री गाई ॥1॥

प्रगट्या पोखरना कुल माही, तृण सम दुनियां दी छिटकाई,
गुरु गणेशी री गादी दिपाई ॥2॥

हुक्म पूज्यवर री पुण्याई, लाल सुं लाल में दुनियां लुभाई,
नाना नाम सदा सुखदाई ॥3॥

भेट्या गुरु चरण पूजारी, जुग-जुग जीयो अर्ज हमारी,
'इन्द्र' पावे आशीष भारी ॥4॥



सुबह शाम बोलो गुरु राम-राम-राम

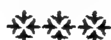
(तर्ज : छोटी-छोटी गैया....)

सुबह शाम बोलो गुरु राम-राम-राम।
नाम लिया सु मिटे कष्ट तमाम॥
बीकाणे री धरती देशाणे रो लाल।
भूरा कुल मे प्रगटे आप महान॥टेर॥

गंगा जल जैसे आप निर्मल, चंदा जैसे आप शीतल,
वाणी मे बहावे नित अमृतधार, सुनकर हर्षावे नर-नार
बीकाणे री धरती देशाणे रो लाल. ॥1॥

नेमि के नदन जग मे महान, पाता जग जिनसे निर्मल ज्ञान
जीवन है जिनका गुणो की खान, नर और नारी सारे करे गुणगान
बीकाणे री धरती देशाणे रो लाल . ॥2॥

करिये कृपा अब करुणा निधान, भव जल से तारो करो
जग त्राण गुरु राम-गुरु राम मेरे भगवान चरणो मे अर्पित है दस प्राण
बीकाणे री धरती देशाणे रो लाल ॥3॥



श्री साधुमार्गी संघ के सैनानी

तर्ज : ए मेरे वतन....

श्री साधुमार्गी संघ के, सैनानी नींद उडाओ।
कर कर के याद नानेश के उपकार ध्यान में लाओ ॥टेर॥

संघर्ष मयी घडियों में, कैसी समता दिखाई।
आफत के शोले सह सह, प्रभु आज्ञा पूर्ण निभाई।
क्यों भूले कुर्बानी को, अन्तर के दीप जलाओ ॥1॥

क्या दिन थे तरुणाई के, गुरु सेवा में दे जीवन।
एक निष्ठा से बजाया, गुरु गणेश के वचन।
मत करो प्राणों की परवाह, अब आण में जीवन लगाओ ॥2॥

समीक्षण कितनी जब्बर, देवों को भी झुकाती।
पद रज से तीर गये, लाखों प्राणी गुरु नाना की जय गाती।
श्रीराम सी कृपा हो पाना, श्रद्धा की बन्शी बजाओ ॥3॥

तमन्ना एक ही दिल की, बस दृष्टि महर की रखना।
सति "इन्द्र" कहे दे दर्शन, चातक सी प्यास बुझाना।
समर्पणा सरिता सी ले, सागर की शोभा बढाओ ॥4॥



हो गुरुवर की महिमा अपार

तर्ज : मैं तो छोड़ चली...

हो गुरुवर की है महिमा अपार, शब्दो में कैसे लिखें,
ले ले स्याही समुद्र की सार.. शब्दो में ॥टेर॥

मूरत कैसी गुरु की, मोहनगारी-2
दर्श से कटती है, पापो की भारी-2
हो ऽऽ नानेश संकट मे है सुखकार ॥1॥

सागर हो समता के, समता सिखाते-2
घुम-घुम दुनियां का, ताप मिटाते-2
हो ऽऽ रखे शत्रु पे मित्र वत् नेह ॥2॥

अन्तर मे नानेश का ध्यान लगाले-2
जलेगे दीप दिल मे ज्ञान उजाले-2
हो ऽऽ मिल गये पुण्य से परमेश ॥3॥

सुनी सुनाई मेरी, बात न मानो-2
प्रत्यक्ष गुरुवर के, परिचय से जानो-2
हो ऽऽ "इन्द्र" ध्यान धरे गुरु का हमेश ॥4॥



ओ मेरे आराध्य

तर्ज–ओ रात मुसाफिर....

ओ मेरे आराध्य, निशदिन ध्यान ध्याती
कर अंकित मन मे, होठो पर नाम लाती ॥टेर॥
करी कृपा मेरी अनादि, मृग तृष्णा मिटादी
भटकी भव भवर मे, खोया स्वरूप पाती ॥1॥
कौन है किसका यहां, सब वासनाएं झूठी
मोह मिथ्या मिटाने, ज्ञान दीपक जलाती ॥2॥

सुखद सान्निध्य पाकर, खिली जीवन गागर
गा नहीं सकती गाथा, आज्ञा में सर नमाती ॥3॥
सौम्य सूरत सलौनी, दूरी ये माफ करोनी
भक्त हृदय पुकारे, "इन्द्र" है याद आती ॥4॥



अर्पित हो जायेंगे

तर्ज : एक छोटा सा बालक है...

नानेश पट्टधर राम, गुरु के गुण गाएंगे
श्रद्धा से चरणों में, अर्पित हो जाएगे ॥टेर॥
क्या घडियें आई थी, एक दिन वे संकट की
फिर भी थी अन्तर ललक, गुरु चरण सेवा की
महक ले संयम की, जीवन को सजायेंगे ॥1॥
आगम का सिंचन ले, उपवन को सजाया है।
सुन्दरतम फल पाकर, संघ आनंद पाया है
मुरझा जो समता सुमन, रामेश से खिलाऐंगे ॥2॥
ओ श्रीवाल प्रतिबोधक, तिमिर को दूर करो।
निर्व्यसनी बने सृष्टि, ऐसा आलोक भरो।
संदेशा गुरुवर का, दुनियां को सुनाएगे ॥3॥
दृष्टि कृपा की सदा नानेश सी ही रखना
जावे तव चरणे, जन्मो का शुभ सपना
"इन्द्र" शिवपर की डगर, गुरुवर से पायेंगे ॥4॥

राम गुरु भगवान–2

तर्ज : नाना तेरा राम....

राम गुरु भगवान-2, मेरे रग रग तेरा नाम है,
बस तू ही तीरथ धाम है,
मत्राक्षर है नाम-2 तुझको जपते आठो याम है,
बस तू ही तीरथ धाम है ॥टेर ॥

संयम पथ पाया, जीवन को चमकाया,
आयरियाणं पद पाया,
हो ऽऽ गुरु सेवा निष्काम-2,
कर दिया तन मन सब कुर्बान है ॥1 ॥

भ्रमणाएं भागी, तुमसे ही लौ लागी,
गुरु चरणो के अनुरागी,
हो ऽऽ दिव्य गुणो के धाम-2,
प्रगटे पग पग पुण्य निधान है ॥2॥

मन मंदिर मे छाये, तुम ही मन भाये,
तेरी आण पे मिट जाये,
हो ऽऽऽ नाना का ये राम-2,
हुक्म सघ की पहिचान है ॥3॥

दीर्घायु हो विचरो, भक्तो की पीर हरो,
मेरी नैया पार करो,
हो ऽऽऽ श्रद्धायुक्त प्रणाम-2,
सति "इन्द्र" गाये यशगान है ॥4॥

मेरे गुरुवर तेरे दरस की

तर्ज : मेरा जीवन कोरा कागज

मेरे गुरुवर तेरे दरस की, बढ रही है प्यास-2
हे दयामय ऽऽऽ-2 पूरी कर दो, इस हृदय की आस।
जीवन की दुर्गम राहों पे-2, जब चले थे मेरे पांव-2,
तेरी शरण में आके पाई, मैने सुख की छांव ऽऽ-2,
तेरी भक्ति ऽऽऽ-2 से है चलती, मेरी हर एक सांऽऽस ॥1॥

तेरी शिक्षा से है पाया-2, मैंने सच्चा ज्ञाऽऽन-2,
सबसे पहले मुझको आये, तेरा पावन ध्याऽऽन-2,
तूने प्रभु से ऽऽऽ-2, मुझे मिलाया तेरी कृपा है महाऽऽन ॥2॥
तेरी करुणा जहाँ बरसती-2, बहती अमृत धाऽऽर-2
कर्म दल चकचूर होते, खुलते मुक्ति द्वाऽऽर-2,
वीर का ऽऽऽ-2 अवतार माने, तुझको ये संसाऽऽर ॥3॥



आचार्य श्री नानेश-आचार्य श्री रामेश

तर्ज : कागलियो....

जय गुरु नाना, जय श्री राम सुं, गूंज रही है गली-गली,
अंतर सुं सुमिरण करता ही, खिल जाये म्हारी कली-कली ॥टेर॥
चांद-सूरज सी देखो संघ ने, कांई मिली है या जोडी,
लाखों मस्तक झुक्या चरणे, माया मद बंधन तोडी,
एक निष्ठा सुं, भक्ति भाव सुं, झुक रही दुनियां अलबेली ॥1॥

पाट विराजे दोनो सग मे, छटा ही वर्णी न जावे,
अमृत धारा मुख सुं बरसे, झडिया सावण सी पावे,
बशी बजावे, वीर प्रभु री, पिलावे समता री प्याली ॥2॥

जठे पधारे जय गुरु नाना, जय श्री राम सुनलो भाई,
तीरथ बण जावे वा नगरी, चरण रज ज्यारी पाई,
जवाहर अरू गणेश शासन मे, छाई कैसी उजियाली ॥3॥

घणी-घणी महिमा बढावे शासन री, जुग जुग जीओ गुरु नाना,
उलझोडी ग्रथियां ''इन्द्र'', राम चरणे सुलझाना,
अचरज पावे हुक्म शासन री, कीर्ति कांई फैलाई ॥4॥



कर्मो से मजबूर

तर्ज : मैया मेरी है...

कर्मो से मजबूर, रह गये बडे दूर हमे शरण देना,
हो शृगारा नंदन, कोटी कोटी नमन, हमे शरण देना ॥टेर॥

घडिये विरह की कैसे बिताई, यादे जब आई, सही जुदाई,
ऑखे भर आई, कृपा हो गई किरतार, आ गये दरबार ॥1॥

अध बीच झूलते राम गुरु मिले, कलियो से खिले,
डूबते को झेले, कैसे भूले,
गुरु राम करलो स्वीकार, लाये अतर उपहार ॥2॥

समता क्या शिखर पे पहुँची तुम्हारी, समीक्षणा भारी
हो ज्ञान भडारी, भव-भव के आभारी,

हो दाता के दातार सफल हो गया अवतार ॥3॥

आस्था क्या बालक बूढे में भरी है देखी डगरी-2
नही कोई नगरी, अर्पणा जबरी
सति ''इन्द्र'' के पतवार, लेना महर से निहार ॥4॥



आत्म ज्योति को जगाने

तर्ज : देख तेरे दरवाजे..

आत्म ज्योति को जगाने जग बीच आये है जयवीर,
हो गए मेवाडी नरधीर,पावन पुरुषोत्तम बन भक्तों की,
पल में हरते पीर ॥टेर॥

वनस्थली बीच भये वैरागी, असवारी पर आत्मा जागी,
आर्त्ति आत्मिक अद्‌भुत निवारी, गणपति गुरु से संयम
धारी, धन्य ''कपासन'' कल्पतरु सा, आम्र सम प्रभु गंभीर ॥1॥

''इच्छामि भंते !'' मंत्र सुहाना, अटल रहे कैसे गुरु नाना,
अविचल आप्त पथिक पहिचाना, तीर्थपति तीर्थ ने माना,
गूंज रहा है गगन मण्डल में, महिमामय महावीर ॥2॥

भारत तेरी जय जय गावे, धर्म धुरन्धर तुझसे पाये,
हुक्म नंदन कैसा खिलाए, सुरभि शासन मे महकाये,
अज्ञ तिमिर मेटो जगदीश्वर, ''इन्द्र'' कहे गणवीर ॥3॥



जय-जय सति सरदार

तर्ज : आराम है हराम....

जय-जय सती सरदार-2
चमकी हो जिनशासन मे, रगुजी के गुलशन मे,
मेरे मुख पर पल-पल रहता, तेरा नाम उजाल ।।टेर ।।

अद्भुत रूप सौन्दर्य को धारी, धन्य धरा पर आई,
मंगल मनाया मात-तात ने, लक्ष्मी कैसी पाई,
सुकुमार जीवन है, उजियारा ऑगन है
बीच स्नेही जनो मे शोभित, जिनका तेज अपार ।। 1।।

हाय ! विधाता वैभव देखो, तेरा सह न पाई
साया सुख का छीना कैसी नश्वरता दिखलाई
भोगो का किया शमन है, नही किचित जग मे मन है
निकल पडी दुनिया को छोडा, एकत्व भावना धार ।।2।।

कृपा-सिन्धु करतार जवाहर, जैन जगत् का प्यारा,
उखड पडी पाखण्डी झडियॉ, अज्ञ तिमिर निवारा,
भूले भटके पथिको को, अज्ञानी मानवो को
शेर बब्बर सी गर्जना करते, राष्ट्र का उद्धार ।।3।।

पानकुमारी सतिवर, शरणार्थी को देती शान्ति
क्या होगा जीवन का, ऐसी मेटी मन की भ्रान्ति
सयम की साधना मे, अरिहन्त की आज्ञा मे
अप्रमत्त भावो से चलती, पाले शुद्धाचार ।।4।।

नहीं प्रभुत्व पाया परिजन ने, कैसी थी सरलता,
क्या मतलब है इस दुनिया से अद्भुत थी निर्मलता,
सुमति गुप्ति को पाले, काटे कर्मों के जाले,
शिक्षा देती संयम की, तेरी वाणी थी हितकार ॥5॥

शुद्ध समाचारी का पालन करती नभ में विचरे,
जर-जर थी काया, तरुण सी भावना देख सब हरषे,
चाहे कल्प न तोड़ूँ, नश्वर जीवन को छोड़ूँ,
देखी अवस्था वृद्ध कनकपुरी, संघ करे मनुहार ॥6॥

कर्मठ सेवाभावी पेपकुँवर जी उन्हें समझाते,
आज्ञाकारी सती संघ में महासती जी आते,
आषाढ़ी चवदस आई, स्वप्नातीत शक्ति पाई,
पूर्ण परहित करने धार लिया, सुखद संथार ॥7॥

जय-जय गावे देव मिलकर, करते केशर बरसा,
जो भी आया दर्शन पाया, पलटी है निराशा,
आशा ले दर पे आते, भर झोली अपनी जाते,
''इन्द्र'' कहे तेरी आशीष से ही, खिला जीवन गुलजार ॥8॥



मैया मेरी है रखवाल

तर्ज– तेरी दुनिया से दूर

मैया मेरी है रखवाल, महासती सरदार
मेरा ध्यान रखना तुमने लेके चरणन,
किया ताप का शमन, मेरा ध्यान रखना ॥टेर॥

पाया है जो कुछ भी तेरे ही सहारे
तारा है जग से, उबारा जग से उद्धारा जग से
दिया कैसा विश्वास, पूरो अतर की आश।1।

आई थी दुनियॉ को सबक सिखाने,
पथ दिखलाने, ज्योति जलाने, सयमी बनाने
पंडित मरण को धार, बासठ दिन का संथार।2।

देवो ने महिमा थी कैसी बढाई
युग-युग गाये, भक्ति मे आये, मस्तक झुकाये
जो भी करे प्रणाम, पूरे सबके अरमान।3।

भूल न सकते मैया तेरी कहानी
दिखाना हमें, तिराना हमे, बुलाना हमे,
'इन्द्र' माने अहसान, तुमने दिया जीवनदान।4।



मैं तो गाती हूँ भक्ति में गीत तन्मय

तर्ज–दिल में बैचेन इतना..

मै तो गाती हूँ भक्ति मे गीत तन्मय,
जय-जय बोलो सरदार कुंवर की इकलय।।टेर।।

याद करते जीवन, सफल कर लिया जनम,
तप जप का कनकपुरी में सगम।
सावधान थी संयम मे हर समय।।
जय जय बोलो सरदार कुवर की इकलय।। 1।।

हिला देव का आसन, भीड रहती हरदम,
मानो केसर का बरसा हो सावन।
मैं ना समझी मैया थी ममतामय,
जय जय बोलो सरदार कुंवर की इकलय ॥2॥

परचा देती सदा, याद जब भी किया,
मेरा दर्द का जमाना बदल दिया।
गम दूर करे उसकी जो बोले जय,
जय जय बोलो सरदार कुंवर की इकलय ॥3॥

अब तो एक ही अरज, मैया तेरा फरज,
संथारा मय जीवन हो सरसब्ज।
''इन्द्र'' आवे तुमसा ही मेरा समय,
जय जय बोलो सरदार कुंवर की इकलय ॥4॥



म्हारी आस्था रा आधार

तर्ज–नीले घोडे का.....

म्हारी आस्था रा आधार, महासती सरदार।
बल आत्मा मे भरज्यो जी, ज्योति जीवन री जलाज्यो जी ॥टेर॥

सति रंगुरी सप्रदाय है, जग में जाज्वल्यमान,
संयम समर्पित संथारा री, शक्ति देखी महान,
थारी दृढता रो विचार, याद आवे हर बार ॥1॥

घडी-घडी पल पल री सजगता, देवा ने लुभावे,
अभिनन्दन करा भक्ति भाव सू, प्रभाव काई फैलावे,
कनकपुरी रे मझार, बरसे केसर रिमझिम धार ।।2।।

प्रभावना काई हुई शासन री, मुरझाया मुख खिल जावे,
झुकता ही मैया रे चरणे, वेदना पलटो खावे,
''इन्द्र'' कहे करयो उपकार, मानू भव-भव मे आभार ।।3।।



पल पल याद जो आय

पल पल याद जो आये, ऋद्ध सिद्ध पाये
कि कर्मो को दूर हटाये, ओ सति सरदार ।।टेर ।।

जन्म पाया कनकपुरी, परणाई उदियापुरी
यौवनवय मे सब छोड चली
जवाहर शरण मे आये, सयम अंगीकारे
कि पान गुराणी मन भाये ।। 1।।

विनय-विवेक का दीप जले, सयम पथ पर अनूठे चले
स्वारथी जग से मुख मोड चले
कैसे सरल स्वभावी, चरण बलिहारी
कि सुमिरण से कष्ट टले ।।2।।

वृद्धावस्था मे भी सजग, देखा अतिम समय निकट
सथारे की लग गई लगन
'पेप' आश पुराये, समाधि दिलाये
कि पडित मरण चाहे ।।3।।

संथारे का तृतीय दिवस, इन्द्र गुराणी के मन मे हरस।
मेटी बीमारी कर फरस,
62 दिन गुजारे बिना अन्न सहारे
कि शिशु गण की नैया तिराए ॥4॥

❋❋❋

जिनशासन के उजियारे

तर्ज : मेरा श्याम....

जिनशासन के उजियारे हो महासती सरदार।
रोम-रोम हर्षित हो जाते-2 क्या गावे आभार ॥टेर॥

इस युग की हो अमर कहानी, हो मेरे जीवन की दानी
देह से देहातीत हो रहना-2, पाठ पढाया सार ॥1॥

नश्वर जग से नाता तोड़ा, आत्म रमण में जीवन जोड़ा,
महासती रंगु के संघ की, हो गई दिव्य मिशाल ॥2॥

जब-जब नजर में छवि है आती, इक-इक यादें दिल में आ जाती।
कोमल थी तन से पर मन से-2, सावधान अपार ॥3॥

दिन बासठ का देखा संथारा, बरसे नभ से केशरधारा,
आरोग्य लाभ पाया चरणों में-2, "इन्द्र" माने उपकार ॥4॥

❋❋❋

सति सरदार का नाम जपलो

तर्ज : चांदी की दीवार....

सति सरदार का नाम जपलो, दु ख दारिद्र मिट जाता है,
कैसा था संथारा सति का, सतयुग याद दिलाता है ॥टेर॥

घोर तपस्वी हुक्म पूज्य के शासन की महिमा भारी है,
छ छ. मास की तपस्या कीनी, सति रगूजी भारी है,
इन्द्रिय-विजेता, आटा पीना, जग नही भूलाता है ।।1।।

राजकवर जी ने उदियापुरी मे, कैसा सथारा ठाया,
देखा तप-तेज नृप ने, वध सिंहनी का ठुकराया,
मेघमाली देव-निशा मे, चमत्कार दिखलाता है ।।2।।

और अनेको सत-सति ने, साधुमार्गी सघ चमकाया,
इसी बीच मे कनकपुरी मे, सथारा सौरभ महकाया,
62 दिन मे केशर वर्षा, देख अचरज आता है ।।3।।

भूल न सकती अपनी घडिये, कैसी जीवन मे आई,
आरोग्य पाया इस तन ने, मुरझी कलिया विकसायी,
सति ''इन्द्र'' कहे सुमिरण से, आत्म-बल जग जाता है ।।4।।



दिल से पुकारे, भक्ति से पुकारे

तर्ज : गोरी है कलाइयां

दिल से पुकारे, भक्ति से पुकारे,
जीवन तेरे ही सहारे, दिल से पुकारे,
सूरत सुहानी, थारी अमृतवाणी,
म्हाने पल-पल याद दिलावे,
हम भूल न पाये, तुझे याद दिलाये,
एक झलक दर्श की चावे, दिल से ..।।टेर।।

आसोज कृष्णा एकम कभी न भुलाये,
नजरों में घडियां जब-जब आये,
क्या मुखडे की माया, बल कैसा पाया-2,
हो गयी जग से किनारे, दिल से. . ॥1॥

तन चेतन का भेद बताया, 62 दिन का प्रण है ठाया,
संथारा ठाये, संयम में रमाये, दुःखियो को दु:ख से उबारे ॥2॥

गगन मंड्ल से केसर बरसे, भक्तो का मन मैया मयूर सा हरसे,
दशो दिश से आये, मन मोद मनाये-2, सुर नर बोले जय सारे ॥3॥

इंद्र कहे कृपा कितनी क्या गाऊ, मैया के ऋण से कैसे उऋण हो पाऊं,
तुम महर न करती, तकदीर ना बदलती-2, दु:खों से न होते किनारे ॥4॥



याद आती पल पल पुरानी

तर्ज : दीदी तेरा....

याद आती पल पल पुरानी, मैया मिली मुझको सुहानी,
दे दी कैसी नूतन जिंदगानी, मैया मिली मुझको सुहानी ॥टेर॥
जब जब नजरो में घडिए घूमती, केसर भी देखी थी कैसी बरसती
सथारे की महक महकानी ॥1॥

तन भी था निर्मल मन भी क्या विमल,
बासठ दिन पर दिल है अविचल,
कनकपुरी तो हो गई दीवानी ।। 2॥

दु:खियो ने चरणे शीष झुकाया,
अम्बार आशा के ऐसे लगाया
कल्पतरु सी हो गई कहानी ॥3॥
सासो की झकार जब तक चलेगी,
''इन्द्र'' कहे यादे तेरी तब तक रहेगी,
होगी मैया प्रीत निभानी ॥4॥

***

कनकपुरी की हुई महासती

तर्ज : मेरे अंगने में....

कनकपुरी की हुई महासती सरदार रे,
आश पुरी आये, जो तेरे दरबार रे ॥टेर॥
कितनी दृढता से सथारा ठाया,
देवों का भी आसन तुमने हिलाया,
बरसा केशर गाते, सति की जय-जयकार रे ॥1॥
भोली मुरतियां सबको सुहाती,
ज्ञान की बातें बडे प्रेम से बताती,
ध्यान पूर्ण संयम मे, किसकी दरकार रे ॥2॥
गुरु तेरा जवाहर था, जग का सितारा,
डका बजाया, दया-दान का प्यारा,
ज्ञानालोक से किया पाखंड संहार रे ॥3॥
दिन 62 पर मन मे न भ्रान्ति,
चेहरे पे झलकती थी अभिनव काती,
उमडी सारी दुनियां, हुए है चमत्कार रे ॥4॥

निराश हुए जीवन को तुमने निभाया,
आशीष दे अंतिम चरणे बिठाया,
''इन्द्र'' कहे कैसे होता तुम बिन उद्धार रे ॥5॥



दर्द हर मेरा मुझे जीवन दिया

तर्ज : दिल के अरमां

दर्द हर मेरा मुझे जीवन दिया,
जगति का सति सरदार ने उद्धार किया ॥टेर॥

अजब थी घडियां संथारे के वक्त की,
सफल हुई आशा लिये आये भक्त की,
जो भी आया दर पे नवजीवन दिया ॥1॥

दिन 62 पर मुख पे तेज था,
देख अनूठी शक्ति देव भी हर्षाया,
बरसा कर केशर की, अभिनंदन किया ॥2॥

क्या गजब की हुक्म संघ की शान है,
एक से एक हो रहे महान् है,
स्वर्णाक्षरों में सति रंगू का तप लिख लिया ॥3॥

संथारे की शक्ति वंदे विशाल है,
जो भी करे दर्श होता निहाल है,
''इन्द्र'' कहे गुरु नाना ने सुना दिया ॥4॥



सतिवर हो गई जग में भारी

तर्ज : मेरा जूता है जापानी

सतिवर हो गई जग मे भारी, कैसी आत्मा सुधारी,
देखो इचरज वाली बात, संथारो चमक्यो जग मे भारी ।।टेर ।।
हो गई सतिये, इस कलियुग मे, हुक्म संघ की शानी-2,
रगूजी आदि सतियो ने, शासन शान बढ़ाई,
पर सरदारकंवर जी न्यारी, करली परहित करने तैयारी ।।1।।
अपूर्व अवसर जाण सति जी, कनकपुरी के मांई-2,
सफल साधना करने आई, संग सतिये सुखदाई-2,
पूर्ण संथारे की ठानी, 62 दिन पर समता आणी ।।2।।
सुर-नर सब मिल हर्ष मनावे, देखो एक सति बडभागी-2
अमूल्य सेवा कर-कर सति से, शुभाशीष वह पाई-2,
पेपकवर कर्मठ-सेवाभावी, खिल रही जिनकी शिष्या क्यारी ।।3।।
संथारी को करे वदना, मिटे कर्म बिमारी-2,
यह कथा चरितार्थ कर दीनी, मेवाड देश के माही-2,
''इन्द्र'' की मेटी तन की बिमारी, मेरी तू ही है रखवाली ।।4।।



कनकपुरी श्री संघ ने

तर्ज : एक प्यार का नगमा है...

कनकपुरी श्री सघ ने, अवसर क्या पाया था
सति सरदार कंवर जी ने, जब संथारा ठाया था ।।टेर ।।

पुलकित हो जाते है, रोम-रोम गुण गाते
चारित्र क्या निर्मल था, मुख से न कह पाते
महोत्सव क्या मृत्यु का, सतिजी ने सजाया था ॥1॥

जो छूटेगा एक दिन, उससे क्यों है प्रीति
अद्भूत था यह चिन्तन, संतन की यह रीति
वह छटा निराली थी, संथारा दिपाया था ॥2॥

62 दिन के प्रण ने, केशर बरसाया था
आसन देवों का हिला, तन शांति पाया था
''इन्द्र'' कहे अंतिम दर्शन, तेज अनूठा लाया था ॥3॥



जय-जय तेरी मैया-मेरी जीवन खैवेया

तर्ज : रमैय्या वत्ता....

जय-जय तेरी मैया-मेरी जीवन खैवेया,
सरदार कंवर जी मैया ॥टेर॥

हो गई कितनी महान्, आता आनंद ले नाम,
सुख शांति का धाम, सुमरे आठो ही याम,
हर्षित होवे जिया, वरते शीतल छैया ॥1॥

जाना जग है विनाश, पाई संयम सुवास,
बगिया जवाहर की खास, करती हो विलास,
लेती दु खों से उबारी, जिसने भक्ति सारी ॥2॥

सथारे की घडियां, आनंद की लडिया,
लगी कनक पुरी मे, भक्तो की झडिया,
भक्ति मे हो दीवाने, गुण लगे तेरे गाने ।।3।।

हिला दिया आसन, देव आते आगन,
दर पे कैसी केशर, मानो बरसा सावन,
कोई न खाली जाता, जो भी तेरा ध्यान लगाता ।।4।।

करते ही नमन, दिया कैसा जीवन,
पलटी तकदीर ''इन्द्र'' कहे खिले चमन,
भूले ना कभी जमाना, भले हो समय पुराना ।।5।।



अभिनंदन सरदार कंवर जी ने

तर्ज–झीणी झीणी उडी रे गुलाल....

हो मीठी–मीठी केशर सौरभ कानोड नगरी मे,
हो देव करे अभिनन्दन सरदारकवरजी ने।टेर।।

देखो मैया ने संथारा ठाया,
आतम बल है कैसा जगाया,
छोड दिया जग जजाल।।1।।

. क्या लाया,
62 दिन से दु खिया आया,
दुखी का किया है उद्धार।।2।।

भर-भर केशर घर ले जाते,
डेरा दर पे आय लगाते,
श्रद्धा री उड़ी रे गुलाल ॥3॥

मैया की नजर थी बडी लुभानी,
म्हारी तो जागी सोई पुण्यवानी,
खिल गयो जीवन गुलजार ॥4॥

पावन भूमि रो प्रताप पायो,
पेपकंवर जी जीवन सजायो,
पंडित मरण लियो धार ॥5॥

प्रीति पुरानी मांजी निभाजो,
भाव दया रा ''इन्द्र'' पे राखीजो,
कोड म्हारा पुरीजो सरदार ॥6॥

❋❋❋

सति सरदार की याद है आये

तर्ज : परदेशियों से न प्रीत लगाना

गु[illegible]रदा[illegible] याद है आये, आसोज एकम कभी न भुलाए ॥टेर॥
[illegible]पाया, संग संसार का यूं ठुकराया,
चिंते एक दिन निश्चय [illegible]स शासन मे सौरभ फैलाए ॥1॥
आत्मब[illegible]र केशरियां बाना पहनना,
नसीब सिकन्दर कनकपुरी का, संथा[illegible]महिमा क्या गाए ॥2॥
[illegible]आ 62 दिन का,
सुरगण केशर की झ[illegible] लगाए ॥3॥

''इन्द्र'' की एक ही रिक्वेस्ट सुनना, लास्ट टाईम का ख्याल रखना,
पडित मरण से शिवपुरी पाये ।।4।।



श्री साधुमार्गी संघ का गौरव

तर्ज : जहॉ डाल-डाल पर...

श्री साधुमार्गी संघ का गौरव, महासतियो ने बढाया,
जो स्वर्णाक्षरो मे छाया ।।टेर ।।

गणिवरो के गण बगिया को, कितनी शालीनता से सजाया।
सति रगु की सम्प्रदाय फली फूली है भारी
राजकुंवर का आत्मबल तो इतिहासो मे जारी
अभयदान दिया निरीह पशुओ नृप भी चरणे आया ।। 1।।
कनकपुरी का संथारा तो नयनो मे ही झलकता,
62 दिन के प्रण से देव भी चरणे सती के झुकता,
महक उठा कण-कण धरती का केसर क्या बरसाया ।।2।।
पूज्य श्री की वाणी गजब की अष्टम पाट पे बरसी।
72 अरु 83 दिन के सुण कली-2 हे हरसी।
वल्लभ कंवर गुलाब ने नानेश गुलशन खिलाया ।।3।।
चमक उठेगा राम देखना, जाते जाते कहती
सति ''इन्द्र'' कहे क्या कुर्बानी, वर्णन करना ना सकती
मगल ही मगल वरते सघ मे ऐसा नांद गुजाया ।।4।।



सेवा-सौरभ

तर्ज-धरती धोरा री....

सति रंगुरी आ फुलवारी, सिचन करता पेप कुमारी।
अद्भुत कर्मठ सेवा सारी, शासन आभारी हो ऽऽ ॥टेर॥
नियति नभ मण्डल में न्यारी, हार्‌या जिणसु सब संसारी
गुरणी पान चरण पुजारी, शासन ॥1॥
लीनों संयम शुभ सुखदाई, विनय वैयावच्च की अधिकाई
चमक्या कोठारी कुल मांही, शासन ॥2॥
गुरु गणेशी मुख सुं पाई, धायमातृ कह बतलाई
सेवा में तन दियो तपाई शासन ॥3॥
जुग जुग जीओ अर्ज हमारी, सति संघ री उपकारी
''इन्द्र'' चरण शरण बलिहारी ॥4॥



जाज्वल्य मान सती शिरोमणी रंगु

तर्ज-इन्साफ की डगर पे....

जिन धर्म के पुजारी, मत भूलना कहानी,
जिनके शीयल की महिमा, देवों ने भी है मानी ॥टेर॥
मन मोहनी ये मूरती, नीमच शहर मे आई
धन धान्य के विषय मे, वृद्धि अपार छाई
थी अप्सरा सी सुन्दर, सबको लगी सुहानी ॥1॥
सह न सकी नियति ने, अद्भुत है जंग जमाया
सौभाग्य शांत सुख को, एक सांस मे हटाया

अब देख लो सभी जन, सर पे पडी तूफानी ।।2।।
जुल्मी वो अजनबी है, ठाकर पुरी का वासी,
दुर्दान्त है अभागा, अबला का है वह रागी
पद की नही है परवाह, जग मे बना बेभानी ।।3।।
वैधव्य देख सति का, सोचे ना कोई इसका
मधुरम मिला है, मौका, हमको ना भय किसी का
प्रहरी बिठाये घर के, चहु ओर थी सेनानी ।।4।।
जाना सति ने सर पे, उमडे है दु ख के बादल
खोता है क्यो ये नर तन, विषयो मे बनकर पागल
बे बौत मरना होगा, तजदे निपट नादानी ।।5।।
रैयत का बनके राजा, रावण सा क्यो तमाशा
गाफिल तू क्या करेगा, उलटा पडेगा पाशा
मदिरा से सुख न होगा, वामा नरक की खानी ।।6।।
तेरी यह किश्ती सुनले, इक पल न चल सकेगी,
हे देत्य ? याद रखना, कुदरत न सह सकेगी
नरको की यातना से, कैसे छुटेगा फानी ।।7।।
हे दीन बन्धु भगवन् ! अबला का ध्यान रखना
प्राणो की है न परवाह, प्रण पे प्रभु है चलना,
मंत्रो मे श्रेष्ठत्तम है, नवकार की निशानी ।।8।।
सुदर्शन की शूली को, सिहासन से सजाया
अनल मिटाया पल में, पद्म सरोवर बहाया
दुखियारी द्रौपदी सम, मेरी अकथ कहानी ।।9।।

भक्ति के वश सति ने, खोली पीछे की बारी
इक नर वहाँ पे आया, कर ऊंट की सवारी
आजा हे भगिनी तुझको, पहुंचाऊ ठौर ठानी ॥10॥
उस देव शक्ति ने आ, सारा तिमिर मिटाया
हुक्मी महा महिमवर, संयम गुरु से पाया
नरनारी ही क्या जिनकी, देवों ने महिमा मानी ॥11॥
छ. मास की तपस्या, आटे का घोल पीना
कर्मों की तोड बेड़ी, सुख स्वर्ग का है लीना
फूली फली है बाडी, सति रंगु की सुहानी ॥12॥
जा बैठी हो जहाँ पे, शाश्वत सुखो की ज्योति
हमकों न भूल जाना, बरसाना मंजू मोती
''इन्द्र'' गूंजेगी नभ में, तेरी अमर कहानी ॥13॥



शासन सेवा में-2 समर्पणा

तर्ज : धरती धोरा री....

शासन सेवा में-2 समर्पणा है संघ में न्यारी,
कीरत फैली जग में भारी
महाश्रमणी रत्ना पद दियो उजारी ॥टेर॥
पान गुराणी से संयम पाई, नाहटा कुल ने दियो चमकाई
कुल कोठारी मे प्रगटाई ॥1॥
शिरोमणी हो सति संघ में, गहरी निष्पक्षता जीवन में
गहन सागर सी हो जग मे ॥2॥

नानेश मुख सुं बरसे वाणी, रामेश कहते धन्य जिन्दगानी
सम्प्रदाय की सफल सुखानी ।।3।।
गौरव आज मै मनावा, प्रभु चरणे अर्ज सुनावा
जुग जुग जीओ ''इन्द्र'' आशीष पावा ।।4।।



उभय गुरणी

तर्ज : मैं तो छोड़ चली...

मूर्ति सेवा की सच्ची साकार, पेप कुंवर प्यारी लगे,
झलके मुख पे गांभीर्य अपार, पेप कुंवर प्यारी लगे।
क्रान्तिकारी हे सतीवर महान्, नानुकुवर प्यारी लगे ।।टेर ।।
पानकुवर जी की शिष्या सुखदानी,
जवाहर शरण मे सयम की ठानी,
हो ऽऽ नाहटा कुल को दिया है उजाल ।।1।।
सयम ले सेवा मे जीवन लगाया,
धायमात् पद गुरु गणेश से पाया,
हो ऽऽ भूल न सकता, सती सघ उपकार ।।2।।
जोडी अनूठी है पेप नानु की,
दर्श बिन अंखियॉ प्यासी भक्तो की,
हो ऽऽ कितना उज्ज्वल है भव्य दिदार ।।3।।
युग-युग जिओ गुरुणी शोभा बढावो,
सती रगु का शासन खूब ही दीपावो।
हो ऽऽ ''इन्द्र'' गुरुणी है जीवन दातार ।।4।।

हुक्म शासन री शान

तर्ज : बाबासा री लाडली....

म्हारा हुक्म शासन री शान कई सतिया जी बढाई रे
नाम लेता एक एक रो गौरव रह्यो छाई रे ॥टेर॥
सति रगु राजकंवर जी महिमा फैलाई रे
धीर वीर सति सुगन कंवर जी सेठिया कुल दीपाई रे
जीवन निर्मल नीर सो सरदारकंवर जी रो पाई रे ॥1॥
यश फैलायो धापूकवर जी लक्ष्मी कुल मे आई रे
जवाहर शरण में संयम लेकर शासन सेवा बढाई रे
नानेश आण में अर्पित हो निर्भिकता दर्शाई रे ॥2॥
कर्मठ सेवाभावी पेपकंवर रो साहस भारी रे
बंधन तोडी ममता मद री समर्पणा सोंपी सारी रे
कर-कर सेवा तन ने देखो रह्या तपाई रे ॥3॥
गुलाब कंवर जी रो आत्मबल तो आज भी याद आवे रे
दिन 83 पर संथारे रो तेज बढतो जावे,
'इन्द्र' कहे गौरव गाता, मनडो रह्यो हर्षाई रे ॥4॥



सतिजी संथारो ठायो

तर्ज-झीणी झीणी उडी रे गुलाल

घणी-घणी समता सुं आज,सतिजी सथारो ठायो,
पेपकंवरजी महाराज शासन चमकायो ॥टेर॥

कोठारी नाहटा कुल ने दिपायो, पानकंवरजी सु संयम पायो,
सेवा मे हो प्रख्यात ॥1॥

अनुशासनमय जीवन प्यारो, सति सघ रो थे ही आधारो,
मुख सु वर्ण्यो न जाय ॥2॥

कर्मठ सेवाभावी पद पायो, नानेश रामेश रो मान बढायो,
गांभीर्यता विख्यात ॥3॥

देश प्रदेश मे खूब विचर्‌या, लाखा रा थे पाप छुडाया,
गुण 27 रा धार ॥4॥

कनकपुरी तो हो गई पावन, पडित मरण रो बरसायो सावन,
सरदार भूराजी आवे याद ॥5॥

गुरुणी जी थे माफ करीजो, कृपादृष्टि ''इन्द्र'' भव-भव राखीजो,
विरह री वेदना अपार ॥6॥



देवता रे दर्शन दुर्लभ

तर्ज : बाजरे री...

हो देवता रे दर्शन दुर्लभ ऐसा म्हारा सतिया जी
चमक रही है सूरत काई-2 ज्यारा चरणा मे
आनंद छाया जी ॥टेर॥

सुगन कुवर जी री शिष्या धापू कंवर जी ज्यांरा संगी जी
सेवा भावी पेपकवर जी, सेवा करवा आया जी ॥1॥

आत्मबल देखी गुलाबकंवर जी रो, म्हाने अचरज आवे जी
महर करी मनड़ारी केवों-2, किया भाव जाग्याजी ॥2॥
नानेश रामेश री आशीष थे, सपनां मे कांई पाया जी
गूंज रही है धरती अम्बर-2, समता रा फूल सवाया जी ॥3॥
मोद घणो खेमली धर्मावत कुल मे देखो भाई जी
आबाल वृद्ध कांई उदियापुरी सा, अवर कही न पाया जी ॥4॥
सति "इन्द्र" कहे सोयोडा जागो, जाग्योडा कदम बढ़ाओ जी
आच्छो अवसर आज आयो,वो काले कोई न पाया जी ॥5॥



मीठी-मीठी यादें गंगा

तर्ज : सारी-सारी रातें...

मीठी-मीठी यादें गंगा मैया की रहेगी।
गंगापुरी की धरती कभी न भूलेगी।
मांगलिक समय में शिक्षाएं देती ॥टेर॥

हंसमुख चेहरे बातें करती,
ज्योति जलाई वह कभी न बुझेगी ॥1॥
स्वाध्याय मे तो निरन्तर रहना,
आत्मरमण मे जीवन रखना,
विनयवन्त गुरु क्या गुरणी कहेगी,
साथिन सतियों का ध्यान ऐसा रखते ॥2॥

सेवा मे स्वार्थ की परवाह न करते।
उभय कुल की गौरव गाथा बढेगी ॥3॥
एक बार आके झलक जरा तो दिखादे,
गगा मैया भूलो को राह पर चढा दे,
तुमसी साहसिक सति न मिलेगी ॥4॥



देवे गुरुणी चरण में बधाई–2

तर्ज–उड़े जब–जब जुल्फे तेरी...

देवे गुरुणी चरण में बधाई–2 कि दीक्षा जयन्ति आई गुरुवर्या
जुग–जुग जीवो मैया, हमारी जुग–जुग जीओ मैया–2 ॥टेर॥
जन्म बीकानेर मे पाया, हो जी हो ऽऽऽ कि गौरव दुनिया मे,
खुशी–2 मन गा–3... , खुशी–2 मन गा .. ॥1॥
गुलशन संयम का खिलाया कि कलियां चरणन मे गुरुवर्या।
महक–महक महके, सुरभि महक महक महके ॥2॥
निष्ठा शासन में बढाई, प्रतिष्ठा जग छाई गुरुवर्या।
लहर–लहर लहरे, पताका लहर–लहर लहरे . ॥3॥
नाना राम का साया तुझपे, सरदार की छाया में,
आरोग्यता को वरे, निश दिन आरोग्यता को वरे ॥4॥
दीर्घायु की सुखद समीहा शिशुगण यही चाहे गुरुवर्या।
कृपाशीष बरसे, हर पल कृपाशीष बरसे ॥5॥

आज बधाई गीत गा हर्षायेंगे

तर्ज : तिक्खुत्तो....

आज बधाई गीत गा हर्षायेगे ऽऽऽ,
भक्ति पुष्प हम चरणो मे चढायेगे,
उपकारो से उऋण नहीं हो पायेगे ऽऽऽ,
चर्म पादुका चमडे की पहनायेंगे ॥टेर॥

उत्तराध्यन सूत्र का 29वां देखो अध्याय,
उपासना समकित की शुद्ध हो, जन्म-जन्म सुख पाय,
श्रद्धा धर्म शिशु वय की ही संयम शिखर चढाय,
सतत् समीक्षण आत्मा का हो ऐसा किया उपाय,
ज्योतिर्धर जवाहर की याद दिलायेगे ॥1॥
धन्य धरा है बीकानेर की चैत्र कृष्णा जान,
पंचमी को सूरज मुनिसा से पाये प्रत्याख्यान,
कर्मठ सेवाभावी पेपकुंवर जी का अहसान,
बने सहायक कर्मो का करने का अवसान,
बैगानी ऽऽऽ बच्छावत कुल ना भूलायेगे ऽऽऽ ॥2॥

युगो-युगो तक दीक्षा जयंति मैया की मनाये,
आशीर्वाद दो राम गुरुवर शासन को दीपाये,
जिह्वा से तो गा ना सकते, मैया का आभार,
इन्दिरा गुरणी पार करेगे, नैया पडी मझधार,
सिद्धो सा ऽऽऽ हो स्वरूप आशीष पायेगे ॥3॥



चैत्र वदि पांचम तो, मनाना है मनाना है

तर्ज : तुम दिल की धडकन में

चैत्र वदि पाचम तो, मनाना है मनाना है,
अतरयामी प्रभुवर को, सुनाना है, सुनाना है ।।टेर ।।
दिन की घडिये हजारों हो, वर्ष शतायु पा जाओ ।

(1)

भवसागर से निकाला है, बाल शिशुवत पाला है,
मुरझी कली से फुल खिला, करुणा का पानी मिला,
झुकाना क्या झुकना है, सब कुछ चरणे खोना है ।।

(2)

मॉ गगा ने सवारा क्या, जवाहर ने पुकारा क्या,
समकित का शुभामृत दे, संयम शिखर चढाया क्या,
महाश्रमणी पद पाया है, उभय कुल दिपाया है ।।

(3)

आओ हम सब प्रण ठाये, अर्पित चरणे हो जाये,
लक्ष्य ऊॅचा हमारा है, भव से करना किनारा है,
रामेश आण निभाना है, परिमल चरण का पाना है ।।



किस भव की प्रीत

तर्ज : एक प्यार का नगमा है....

किस भव की प्रीत रही, इस भव मे पाये है,
मैया तेरे चरणो मे, इक आश ले आये है ।।टेर ।।

इस भटकते पंछी ने, राह सुन्दर पाई है
दुनियाँ से हट पलकें सेवा में लगाई है
समर्पणा के फूल चरणो मे चढाये हैं॥1॥

हम सब पे बरस रही, क्या करुणामय धारा
इसीलिए अर्पित होता, आस्था से मन सारा
अकिंचन कहो कैसे, उपहार क्या लाये॥2॥

इंगित पे चलना ही, बस हमने धारा है।
नत मस्तक होके रहे, जो मिले ईशारा है।
''इन्द्र'' गुरुणी के चरणों में सुख शांति पाये है॥3॥



हो मिले पुण्य से गुरणी महान्

तर्ज : मैं तो छोड़ चली...

हो मिले पुण्य से गुरुणी महान्, भाग्य मेरे कैसे खिले
मैं तो मानुं मेरा हो गया कल्याण, भाग्य.. ॥टेर॥

मानूंगी मै तो मुझे मिली है मैया-2
हो गई हो कैसी, जीवन खेवैया-2
हो ऽऽ मेरा छुडा दिया पापों का भार॥1॥

शास्त्रों की शिक्षा कैसी सुनावे,
रहे ध्यान संयम का ऐसा समझावे,
हो ऽऽ तुम्हें गुरुवर पे आस्था अपार, भाग्य. . ॥2॥

माता गगा ने तुम्हे कैसा सजाया,
इतना गाभीर्य जीवन कही न पाया,
हो ऽऽ कुल बैगानी को दीपावनहार ॥3॥

चरण पादुका मेरे तन की बनाऊ,
पहनादूं फिर भी न उऋण हो पाऊ,
हो ऽऽ मेरी पुरो शिवरमणी की आश ॥4॥



हो हो हो दीक्षा जंयति

तर्ज : हो हो हो हम सब करे शुभकामना...

हो हो हो दीक्षा जयति पे भावना,
शतायु होवे मैया अर्द्ध शताब्दी पे कामना ॥टेर॥

झुक झुक चरणो में गुरुणी देवे बधाई,
मातृवत वात्सल्यता रखना सदाई,
नतमस्तक हो पालेगे, आज्ञा मन भावना ॥1॥

अन्तर कहता मानो गगन मे फूल खिलाया,
नही ख्याल था स्वप्न मे, ऐसा जीवन बनाया,
बढती रहे बस श्री चरणो की सयम साधना ॥2॥

नानेश मुख से महाश्रमणी रत्ना पद पाया,
अनुशासनमय सति सग है रामेश ने फरमाया,
अहर्निश करते रहेगे चरण उपासना ॥3॥

देख देख सन्मान बच्छावत बैगानी हर्षाते,
अहो भाव मैया पे बढते ही जाते,
सति मंडल का एक ही नारा,
अखंड हो आराधना ॥4॥



मुक्तिपुरी के वासी

तर्ज : मेरा जीवन कोरा....

मुक्ति पुरी के वासी जिनंदा, सुनो एक अरदास
ले लो प्रभुजी ऽऽऽ, हमें शरण में, हो गये जग से उदास ॥टेर॥
ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, पद्म, सुपार्श्व, सुमति-2
चन्दा, सुविधि, शीतल, श्रेयांस, वासु विमल दो सुवास,
वासु-2 अनन्त, धर्म ऽऽऽ शांति, कुंथु, अरह, मल्लि मुनि की आश ॥1॥

नमि नेम अरिष्ट सिद्धि पाये, गढ गिरनार, पाये. .2
चिंतामणि पारस प्रभु जी, करुणा के अवतार, करुणा...2
जलते नाग-नागिन को बचाया, काटी भव की पाश ॥2॥

तीरथ-त्राता प्रभु महावीर से, अरज गुजारे आज, अरज..2
विहरमान गणधर सतियां जी, रखना हमारी लाज, रखना..2
कोटि भव की, ऽऽऽ, प्यास बुझाओ, 'इन्द्र' करे अरदास ॥3॥



तजके पराई चिन्ता

तर्ज : छुप गया कोई

तजके पराई चिन्ता, जिनवर को ध्याले,
जीवन बनाले बदे, जीवन बनाले-2 ॥टेर॥

ऋषभ अजित, संभव का शरणा,
अभिनदन सुमति पद्म सुमरना,
दर्पण सम सुपार्श्व मनाले ॥1॥

चन्द्र सुविधि शीतल, श्रेयास स्वामी,
वासु विमल अनत धर्म है ज्ञानी,
शाति कुंथु अरह, मल्ली को पहिचान ले ॥2॥

नमि अरिष्टनेमी है त्यागी,
पारस महावीर का चरण अनुरागी,
बनजा विषय से चंचल, चित्त को हटाले ॥3॥

अपने ही भाग्य को, सदा तू सराहना,
मिल गये कैसे, तुझको गुरुवर नाना,
''इन्द्र'' कहे रग-रग मे ''राम'' रमाले ॥4॥



चौबीसी

तर्ज : कांची रे कांची...

प्यासी रे प्यासी अन्तरात्मा प्यासी, दर्शन दो जिनराज रे होऽऽ-2
ऋषभ अजित सभव अर्न्तयामी, अभिनन्दन सुमति के कामी।
पद्म सुपार्श्व चन्दा सुविधि, मेटो प्रभु कर्म पाश रे ॥1॥

शीतल श्रेयांस वासुपूज्य विख्यात,
विमल अनन्त धर्म सुणो इक बात।
शांति कुंथु ध्याऊं, अरह मनाऊं, सुधरेगे सारे काज रे ॥2॥
मल्ली मुनि सुव्रत नेम अरिष्ठ सुखकार, पारस महावीर शासन शृंगार,
गणधर विहरमान, सोलह सतियांजी, पाये है मुक्ति जहाज रे ॥3॥
पूज्य प्रवर्तक दीनदयाल, धन्य गुरु मेरे नाना लाल,
चरणों में आवे, "इन्द्र" मुक्ति सुख पावे, सर्व संतों के सिरताज रे ॥4॥



चौबीस जिनवर को

तर्ज : बहुत प्यार करते हैं..

चौबीस जिनवर को, सदा तूं सुमर,
जीवन बनेगा तेरा, सलिल सा सरल ॥टेर॥
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन,
सुमति पद्म सुपार्श्व की शरण,
चन्द्र सुविधि मुक्ति दे दो शीतल ॥1॥
श्रेयांस वासु विमल अनंत धर्म जी,
शांति कुंथु अरह मल्ली प्रभु जी,
मुनि सुव्रत नमि अरिष्ट सी नजर ॥2॥
प्राण प्यारे सबको पार्श्व ने बताया,
पाखंड को रोका जो कर्मठ ने बढ़ाया,

गा न सकूगी महिमा महावीर महर ॥3॥
''इन्द्र'' विहरमान, गणिधर सति जी,
शासनेश ''रामेश'' की गादी रहे दीपती,
पीर हरे भक्तो की, लेते खबर ॥4॥



दुनियां में आये हो प्राणी

तर्ज : ओ क्षत्रिय कुंड.....

दुनिया मे आये हो प्राणी, प्रभु भक्ति मे कुछ रमण करो,
तिमिर अज्ञ को हटा ज्योति ज्ञान की अपने घट मे भरो ॥टेर ॥
ऋषभ अजित सभव अभिनदन सुमति सुमति के दाता है,
पद्म सुपार्श्व चन्द्र सुविधि शीतल चरण जो ध्याता है,
श्रेयास वासु पूज्य विमल अनत से जन्म जरा के दु.खडे हरो ॥ 1॥
धर्म शाति अरू कुंथु अरह ने, केवल ज्योति जगाई है,
मल्ली मुनिसुव्रत नमि अरिष्ट ने, करुणा बरसाई है,
वामानदन की शरण ले धरती के पाखण्ड दूर करो ॥3॥
जैन धर्म का शरणा पाकर जीवन मे वर्द्धमान बने ॥
विहरमान गणधर ग्यारहाजी, सद्बुद्धि अब देना हमे,
सति 'इन्द्र' कहे सोलह सतिया जी संताप मन के सारे हरो ॥4 ॥



मधुकर बन जा प्रभु चरणों में

तर्ज : वृन्दावन का..

मधुकर बन जा प्रभु चरणो मे सुखमय जीवन जीना है,
छोड दो सारे एब दोष को निज स्वरूप गर पाना है ॥टेर॥

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति मेरे घट मे भरो,
पद्म सुपारस चन्द्र सुविधि शीतल सारे कष्ट हरो,
भटक चुका हूँ अपने पथ से पंथ मेरा पुराना है ॥1॥

हम कितने अज्ञानी श्रेयांस वासू विमल से कहॉ छिपा ?
अनंत धर्म शाति कुंथु अरह मल्लि मेरा मोह खपा,
शत्रु को मीत मान के बैठा, कितना मोह मे लुभाना है ॥2॥

मुनिसुव्रत नमि अरिष्ट पारस हरलो मेरी अंतर व्यथा,
शासनपति महावीर से छिपी है नहीं जीवन की कथा,
विहरमान गणधर सतियों को गीत मेरा सुनाना है ॥3॥

गुरु नाना की शरण पा आज खिल गयी अंतर कली-2
सयम सिचन पा माली से जीवन बगिया फूली फली,
''इन्द्र'' कहे बस एक तमन्ना ज्योतिर्मय बन जाना है ॥4॥



ज्ञान ज्ञान ज्ञान जिनवर का ज्ञान

तर्ज : नाम नाम...

ज्ञान ज्ञान ज्ञान जिनवर का ज्ञान
सुन प्राणी तेरा होवे कल्याण ॥टेर॥

ऋषभ अजित सभव प्रभु का, अभिनन्दन सुमति पद्म का
सुपार्श्व चन्द्र का ध्यान, सुविधि शीतल का नाम॥1॥
श्रेयास वासुपूज्य विमल ज्ञानी, अनत धर्म शाति सुध्यानी
कुथु अरह अहसान, मल्ली मुनि सुव्रत मान॥2॥
नेमि अरिष्ट पारस प्यारा, महावीर है शासन शृगारा,
कलियुग मे नाना का नाम, ''इन्द्र शिवपुरी का यान॥3॥



तीर्थंकर स्तुति

अरिहन्तो को नमस्कार, श्री सिद्धो को नमस्कार।
आचार्यो को नमस्कार, उपाध्यायो को नमस्कार।
जग मे जितने साधुगण है, मै उनको वन्दू बार-बार॥
ऋषभ, अजित, सभव, अभिनन्दन,
सुमति, पद्म, सुपार्श्व, जिनराय।
चन्द्र, सुविधि, शीतल, श्रेयास,
वासुपूज्य पुजित जिनराय।
विमल, अनन्त, धर्म, यश उज्ज्वल,
शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व जिन,
वर्धमान पद शीष नमाय।
इन चौबीसो के चरणो मे, मै वंदू बार-बार ॥
जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया,

मधुकर बन जा प्रभु चरणों में

तर्ज : वृन्दावन का..

मधुकर बन जा प्रभु चरणों मे सुखमय जीवन जीना है,
छोड दो सारे एब दोष को निज स्वरूप गर पाना है ॥टेर॥
ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति मेरे घट मे भरो,
पद्म सुपारस चन्द्र सुविधि शीतल सारे कष्ट हरो,
भटक चुका हूँ अपने पथ से पथ मेरा पुराना है॥1॥
हम कितने अज्ञानी श्रेयांस वासू विमल से कहाँ छिपा ?
अनंत धर्म शांति कुंथु अरह मल्लि मेरा मोह खपा,
शत्रु को मीत मान के बैठा, कितना मोह मे लुभाना है॥2॥
मुनिसुव्रत नमि अरिष्ट पारस हरलो मेरी अंतर व्यथा,
शासनपति महावीर से छिपी है नही जीवन की कथा,
विहरमान गणधर सतियों को गीत मेरा सुनाना है॥3॥
गुरु नाना की शरण पा आज खिल गयी अंतर कली-2
संयम सिंचन पा माली से जीवन बगिया फूली फली,
''इन्द्र'' कहे बस एक तमन्ना ज्योतिर्मय बन जाना है॥4॥



ज्ञान ज्ञान ज्ञान जिनवर का ज्ञान

तर्ज : नाम नाम...

ज्ञान ज्ञान ज्ञान जिनवर का ज्ञान
सुन प्राणी तेरा होवे कल्याण॥टेर॥

ऋषभ अजित सभव प्रभु का, अभिनन्दन सुमति पद्म का
सुपार्श्व चन्द्र का ध्यान, सुविधि शीतल का नाम ॥1॥
श्रेयास वासुपूज्य विमल ज्ञानी, अनत धर्म शाति सुध्यानी
कुथु अरह अहसान, मल्ली मुनि सुव्रत मान ॥2॥
नेमि अरिष्ट पारस प्यारा, महावीर है शासन शृगारा,
कलियुग मे नाना का नाम, ''इन्द्र शिवपुरी का यान ॥3॥



तीर्थंकर स्तुति

अरिहन्तो को नमस्कार, श्री सिद्धों को नमस्कार।
आचार्यो को नमस्कार, उपाध्यायो को नमस्कार।
जग मे जितने साधुगण है, मै उनको वन्दू बार-बार॥
ऋषभ, अजित, सभव, अभिनन्दन,
सुमति, पद्म, सुपार्श्व, जिनराय।
चन्द्र, सुविधि, शीतल, श्रेयास,
वासुपूज्य पुजित जिनराय।
विमल, अनन्त, धर्म, यश उज्ज्वल,
शान्ति, कुन्थु, अर, मल्लि मनाय।
मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्व जिन,
वर्धमान पद शीष नमाय।
इन चौबीसो के चरणो मे, मै वंदू बार-बार . ॥
जिसने राग द्वेष कामादिक, जीते सब जग जान लिया,

सब जीवों को मोक्षमार्ग का, निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि हर ब्रह्मा या पैगबर हो अवतार,
उनके चरण कमलों मे, मेरा वंदन होवे बार-बार .... ॥



श्री मंदिर प्रभु को करते नमन

तर्ज : बहुत प्यार...

श्री मंदिर प्रभु को करते नमन,
बिन दर्श के दु:खित मेरा मन,
कैसे फेरे प्रभु नाम की माला,
जला रही है, दिल को, कषायों की ज्वाला,
नीर सम अनल को करदो शमन ॥1॥

सुना है गुरुवर से सुवर्ण सी काया,
भव्य हुए हैं जो भी शरण है पाया,
अवर न चाह, मिले मोहनी शरण ॥2॥

घबरा गये प्रभुजी, मायावी जग से,
इसीलिए अर्ज ''इन्द्र'' करे प्रभु से,
पावन करदो पतित-पावन ॥3 ॥



मान मान मान श्री मंदिर को मान

तर्ज : नाम नाम...

मान मान मान श्री मंदिर को मान
पूरेगे प्रभु तेरा अरमान ॥टेर॥

झेलो-झेलो प्रभुजी वदना, सद्भावो से करते है स्पंदना,
संसार है असार, कैसे निकलेगा सार ॥1॥
भूली दुनिया है भक्ति तुम्हारी, दुर्मति दुर्भवी दुराचारी
पाप 18 के भार, हो जावे बेभान ॥2॥
इन कर्मो ने खेल रचाया, मिथ्यामति ने हमे भटकाया,
निंदा विकथा का ध्यान, नहीं जीवन का भान ॥3॥
पुण्यवानी प्रबल मेरी आई, निर्ग्रन्थ नाना गुरु शरण पाई
''इन्द्र'' गावे गुरु ज्ञान, मिले जीवन वरदान ॥4॥



श्री मंदिर जी को वन्दन

तर्ज : दो दिवाने......

श्री मन्दिर जी को वन्दन, ले लेना प्रभु शरण,
करते है-2 अर्जी आशाए धार ॥टेर॥

चौतीस अतिशय धारी प्रभुजी, मोहनी मूरती प्यारी विभूजी,
आरा चौथा वर्ते, दर्शन को जीया तरसे ॥1॥

जनम-जनम का हूँ प्रभु दु खिया,
मिल जाय चरण बन जाऊँ सुखियॉ,
दुर्गम है घाटी घाती, आत्मा है अकुलाती ॥2॥
संबल जैन धर्म का पाया, गुरुवर नाना की शरण मे आया,
''इन्द्र'' भव जल से तारे, कर देना किनारे ॥3॥



श्री मंदिर के शरण

तर्ज : नित उठके......

श्री मंदिर के शरण, रखते अंतर मन,
आनंद आता मेरा हर्ष न हिवडे समाता ॥टेर॥
प्रभुजी आप हो अंतरयामी, नही दूजी है तुमसी कहानी
घबराता है मन, कब होंगे दर्शन, मन अकुलाता ॥1॥
धनुष पांच सौ की सुंदर काया, जिसका दर्शन जो भी पाया,
धन्य हो गया जीवन, करते हैं नमन, भाग्य सराता ॥2॥
घाती कर्मो से अब मैं हारा, भूल गया जो बल मेरा सारा,
''इन्द्र'' कहे भगवन, जीवन हो जाए दर्पण, ध्यान लगाता ॥3॥



पंख होते तो उड़ आती रे

तर्ज : पंख होते तो...

पंख होते तो उड आती रे,
श्री मंदिर भगवान आके दर्श तुम्हारा पाती रे ॥टेर॥
महाविदेह में आप विचरते, 64 इन्द्र सेवा में रहते,
एक करोड है देव शरण में, सुर नर किन्नर सब गुण गाते॥ 1॥
राहों में पर्वत, नदियां है बहती, कोस हजारों दूर आप रहते,
लोकालोक के ज्ञाता तुम्हीं हो, दुःखी जनों के दु.ख आप हरते ॥2॥
जल बिन जैसे मछली है तड़फे, बिन बादल के मोर है तरसे,
चंदा यह संदेश तू कहना, तुम दर्शन बिन मन मेरा तरसे ॥3॥

तुम मेरे मन मे बसे हो तन मे, ध्यान धरू हर घडी पल छिन मे,
गुण सौभाग्य सदा ही गाये, होके दीवाना, तेरी लगन मे ।।4।।

❋❋❋

गान गान गान गणधर गुण गान

तर्ज : नाम नाम...

गान गान गान गणधर गुण गान
गावे पावे रिद्ध सिद्ध का धाम ।।टेर ।।

इन्द्र अग्नि वायू विगत जी, सुधर्मा मडी मौर्य पुत्र जी
ध्याया प्रभु का ध्यान, पाये सम्यक् सुज्ञान ।।1।
अकपिता अचल मैतार्य, प्रभास है परमाराध्य
निर्मल जिनका है ज्ञान, मेरा हरो अज्ञान ।।2।।
पूर्ण करो मेरी अभिलाषा, भव-भव की पूरो पिपासा
नाना गुरु का नाम ''इन्द्र'' पूरे अरमान ।।3।।

❋❋❋

मैं तो धरूं सदा शुभ ध्यान

तर्ज : सब बोलो......

मै तो धरू सदा शुभ ध्यान, प्यारा गणधर जी,
ग्यारह गणधर गुणवान, प्यारा गणधर जी,
प्रथम शिष्य हुए इन्द्रभूति जी, लब्धि भारी शुद्धमति जी,
चार ज्ञान निधान ।।1।।
शिष्य पॉच सौ सग मे लाया, तत्त्व बोध पा तिमिर भगाया
हो गए शिष्य प्रधान ।।2।।

राग प्रभु से ऐसा लगाया अंगूठे है अमृत समाया,
संकट में सुमरो सुजान ॥3॥
सति ''इन्द्र'' कहे गौतम ध्यावे सुख सपत्ति आनंद वह पावे,
पाये केवलज्ञान ॥4॥



दमयन्ती सुता एकला नल छोड़ी

तर्ज : सीताजी

दमयन्ती सुता एकला नल छोड़ी चाल्या वन रे माय।
राजेश्वर क्यों न मर्म बतायो रे प्राणेश्वर क्यों न मर्म बतायो रे ॥टेर॥
क्षत्रिय वीर होय ने, क्यों कायरता दर्शाई नाथ ॥1॥
महल मंदिर मालिया, कई तज आई सखियन रो साथ ॥2॥
सुख रा जग में साथिया, दुखियारी कुण पूछे मन री बात ॥3॥
हे वनचर प्राणियां, कई थे ही छिपाया म्हारा श्याम ॥4॥
हे वन देवी बेनडी, क्यों भरमाया म्हारा भरतार ॥5॥
भव-भव जीव सताविया, कई सेव्या पाप अठार ॥6॥
पर निंदा कीनी पातकी, किणरा खोस्या नानड्या सा बाल ॥7॥
हूं अपराधी आपरी स्वामिन, खमजो म्हारो अपराध ॥8॥
वन मे चाल्या एकला, ज्यांरी नही पूछी कोई सार ॥9॥
अखंड शीयल निभावणा, सतीजी पायो पीयरिया रो साथ ॥10॥
स्वामी-स्वामी पुकारता सती जी, ढल गया धरती मंझार ॥11॥
रात दिवस धर्म ध्यान मे चिंते, कद मिले मुझ प्राणाधारा ॥12॥

बिछुड़्या दम्पती देखने, जन गण गावे जय-जयकार ॥13॥
टूटी कर्मा री बेडिया, सती रे वर्त्या मगलाचार ॥14॥
पीपलिया कला मे गुण गावियॉ, 'इन्द्र' कहे जागो नारी नर खान ॥15॥



शंकाएं सासुजी चित्त से हटाएं

तर्ज : छुप गया कोई रे...

शकाए सासुजी चित्त से हटाए,
अजना महासती समझाएं ॥टेर॥

बालम ने बारह वर्ष से छोडा,
एक पल मे मुझसे मुखडा मोडा,
तडफती अबला पे करुणा न लाये ॥1॥

अर्द्ध-निशा मे कैसे आये न जानू,
टूटी अन्तराय मेरी एक ही मानू,
देखी सहलानी सासू समझ न आये ॥2॥

वन-वन डोले सति शुभ भाव लाती,
सौ भ्राता की भगिनी संकट पाती,
स्वार्थी जग मे किसे अपना बनाये ॥3॥

हनुमत कुवर कैसा आया,
अनुचर बन राम धर्म निभाया,
''इन्द्र'' कहे शील से जीवन सजाएं ॥4॥



सुभद्रा-सति

तर्ज : नाम नाम नाम...

आज्ञा दो मात-2, करे सासु से सुभद्रा अरदास॥ टेर॥

चारो चंपा के न खुले द्वार रे,
त्राहि त्राहि की होती पुकार रे,
नचले है महाराज, कैसे रखूं में लाज, नगरी की... ॥1॥

एक क्या अनेकों है आये,
शक्ति सारे मिल अपनी लगाये,
लाये शस्त्र हजार, खुले कील ना लिगार, सांकल की ॥2॥

करता देव गगन से वाणी,
छींटे छलनी में पाणी आणी,
कच्चे सूत की हो गांठ, पावनता का हो ठाठ, शीलवती की.... ॥3॥

उमडी है हजारों नारी, सुभद्रा का शीयल है भारी,
खोल दिया है द्वार, ''इन्द्र'' गावे जयकार, शीयल की.... ॥4॥



डस गयो कालो नाग

तर्ज : सारी सारी....

डस गयो कालो नाग कवर तेरी गात ने,
छाती भर आवे बेटा देखूं तेरी लाश ने ॥टेर॥

फूल तोडने को बेटा, गयो तू बाग मे,
डस गयो कालो नाग, कंवर तेरी गात ने,
जुल्म कियो रे बैरी, अंधियारी रात में॥1॥

नयना तो खोलो बेटा, मुख से तो बोलो रे,
माता तेरी रोवे बेटा, एक बार बोलो रे,
छुप गयो चाद बैरी, अधियारी रात मे ॥2॥

लाश को लेकर रानी, श्मशान आई रे,
अपने कुवर की, रानी चित्ता तो बनाई रे,
अखियॉ मे आंसू जैसे, बहे जलधारा रे ॥3॥

इतने मे राजा हरिश्चद्र बोला,
पहले चुका दे रानी कर जो है मेरा,
पीछे जलाना रानी चित्ता और लाश को ॥4 ॥

प्राणनाथ मेरे, पति परमेश्वर,
इस दु.खियो के पास, नही कोई वस्त्र
महर करोनी राजन्, पुत्र की लाश पे ॥5 ॥

मै तो हूॅ नौकर, मालिक मेरो भगी रे,
इस दुनियॉ मे रानी, नही कोई सगी रे,
कर तो चुका दे रानी, साडी तेरी फाड के ॥6 ॥

सत् के बल से रानी, चिता तो जलाई रे
आप 'गरूड' चढ आये बनवारी रे
सत् के फलो रानी भगवान पाये रे ॥7॥



याम याम याम आठों ही याम

तर्ज : नाम नाम...

याम याम याम आठो ही याम,
सुमिरण करो तुम सतियो का नाम ॥टेर॥

ब्राह्मी सुन्दरी, कौशल्या सीता, राजमति कुन्ती पुनीता
द्रौपदी चन्दना का नाम, मेटो कर्म तमाम ॥1॥
मृगावती पुष्पचूला प्यारी, प्रभावती शीयल अवतारी
सुभद्रा दमयंति गान, हो गई जग मे गुणवान् ॥2॥
सुलसा शिवा पद्मा सुखकारी, सारी दुनियां यशधारी
गावे तेरा जो गान, हो जाये कल्याण ॥3॥
निर्ग्रन्थों में निर्ग्रन्थ श्रेयकारी, नानावादों में नाना जयकारी
''इन्द्र'' मानें अहसान, देना शिवपुर सुस्थान ॥4॥



तेरे द्वार खड़ा भगवान्

तर्ज: हो श्रमण संघ सरदार...

तेरे द्वार खडा भगवान् सती भर दो रे झोली,
तेरा होगा बड़ा रे कल्याण, कि इक दिन पा जाये निर्वाण ॥टेर॥
छ: मास निराहार रहे प्रभु, फिर गये घर-घर द्वारे,
हुआ अभिग्रह कही न पूरा, आ हो ऽऽ-2 द्वारे रे-2, होऽऽ
तू ले इनको पहचान छोडकर सारे आर्त्तध्यान ॥1॥
आज तेरी पुण्यवानी प्रगटी, चमका भाग्य सितारा,
देख खडा है तेरे दर पर, जगत का तारण हारा रे,होऽऽ-2
तू कर पूरे अरमान इन्हें दे शुद्ध भावों से दान ॥2॥
चन्दनबाला हर्षित होकर, उडद बाकुला देवे,
नयनो में आंसू नहीं देखे, प्रभु भिक्षा नही लेवे रे होऽऽ-2,

गये फिर लौट के द्वार, सती के आंसु आये नयन दरम्यान ॥3॥
हुवा अभिग्रह पूरा प्रभु का, बोल मिल गये तेरा,
देव दुन्दुभी बाजी गगन मे, मिट गया भव-भव फेरा रे हो-2
कहे जीत नित गुणगान, तेरा हो जाये कल्याण ॥4॥



मेरी प्यारी बहनों सुनो सच्ची कहानी

तर्ज : सुन्दरी पवन

मेरी प्यारी बहनो सुनो, सच्ची कहानी, अब मेरी जबानी
किया कैसे पारणा ओ ऽऽ कैसे ऽऽ पारणा ॥ टेर ॥

सयम लिया था श्री वीर ने, प्रण यह किया था महावीर ने
तीन दिनो से भूख की मारी, हो कोई ऐसी राजदुलारी,
तो मै करू पारणा ॥1॥

उडद बाकुला हो हाथ मे, शुद्ध भावना हो साथ मे,
सिर हो मुडन हर्षित हो मन, आंखो मे हो आंसुओ का वन,
तो मै करूं पारणा ॥2 ॥

हाथो मे हो जिसके हथकडी, पांवो मे बेडिया जडी,
एग पग भीतर एक पग बाहर, सारी बाते मिले तब कहीं जाकर,
तो मै करूं पारणा ॥3 ॥

सब कुछ मिला या उस जगह, आसु नहीं थे बस वहा
देखे नही आसु नयन, मुडने लगे प्रभू तारण तिरण
लगी रोने चन्दना ॥4 ॥

पूरा मनोरथ जब हुआ, एक अचम्भा तब हुआ
हथकड़ी बेडी टूटी, तभी मंगल गाये देव सभी
बोले जय हो चंदना, तेरी जय हो चंदना ॥5॥
बालिका मंडल गुण गाता है, चरणों में शीष झुकाता है,
सबका प्रभु उद्धार करो, दुनियॉ से बेडा पार करो
करे हम भी वंदना ॥6॥



बड़ी प्यारी राजदुलारी

तर्ज–हो मैंने तेरे.....

बडी प्यारी राजदुलारी थी, वो दो बहिना
सुर सुन्दरी और मैना
कर्मो की गति है न्यारी, सुनो तुमको सुनाती हूँ, उनकी कहानी,
सुनो जरा-सुनो जरा, ओ बडी.....।
पुरी हुई शिक्षा तब बुलाया उन्हें,
भरी सभा में राजा ने एक दिन पूछा उन्हें
कौन बडा है इस दुनियां में, ये तो बताओ, दोनों जरा
दोनो जरा। हो बडी ॥1॥
बोली सुर-सुन्दरी सुनो पिता, कोई नहीं है इस दुनियां में
आपसे बडा, आपका ही ठाठ-बाट है, आपका ही राज यहॉ,
राज यहॉ ॥2॥
मैना बोली कर जोड, सुनो पिता,
कोई नही है इस दुनियां में कर्म से बडा,

कर्मो का ही फल है जानके, पैदा हुई हूँ आपके यहॉ-2 ॥3॥
राजा बोला तुम कुछ समझती नही,
क्या तूँ मेरी ताकत को पहचानती नही,
कोढी के सग ब्याह दूगा, देखूं तेरे करम है कैसे, करम-2 ॥4॥
ब्याही सुर-सुन्दरी राजा के साथ, मैना को दे दी कर्म भरोसे कोढी के लार
कर्मो का ही फल ये जानके, मैना तो हो गई पति के लार,-2 ॥5॥
देखो सुर-सुन्दरी का क्या हुआ,
रास्ते में डाकुओ ने उन्हे लुटा,
डाकू उठाकर ले गये उनको,
कर्म बिना तो सुख है कहॉ-2 ॥6॥
मैना ने तो नव पद का ध्यान दिया,
प्रभु भजन मे उसने अपने को लीन किया,
कोढी के श्रीपाल बन गये, जय-जय बोले सारे जहॉ-2 ॥7॥



सुमिरण करने से गुरु नाम

तर्ज : तेरे पूजन को भगवान

सुमिरण करने से गुरु नाम, तेरे सफल बनेगे काम,
जप ले भाई सुबह अरु श्याम, जय गुरु नाना जय श्री राम ॥टेर॥
बीच नदी से नाव तिराई, पायी ऑखिये अधी माई,
चिपके पाव लुटेरो के जान ॥1॥

उलझन भक्तों पे जब आई, रटना संकट में लगाई,
मंत्र से मार्ग पाये अनजान ॥2॥
आज प्रत्यक्ष श्री गुरु की वाणी, विरला ही कोई समझे ज्ञानी,
समझे उसके सुधरे काम ॥3॥
''इन्द्र'' का तो एक ही कहना, लब पे नाम गुरु का रखना,
पूरे मेरे गुरु अरमान ॥4॥



गुरुवर तेरे चरणों की

तर्ज : गुरुवर तेरे चरणों......

गुरुवर तेरे चरणों की, गर धूल जो मिल जाए,
सच कहता हूँ मेरी, तकदीर संवर जाएं,
सुनते हैं दया तेरी, दिन रात बरसती है,
एक बूंद जो मिल जाए, मन की कली खिल जाए ॥1॥
ये मन बडा चंचल है, कैसे तेरा भजन करूं,
जितना इसे समझाऊं, उतना ही मचल जाए ॥2॥
नजरो से गिराना नही, चाहे जितनी सजा दे दो,
नजरों से जो गिर जाए, मुश्किल है संभल पाए ॥3॥
मेरे इस जीवन की बस एक तमन्ना है,
तुम सामने हो मेरे, मेरे प्राण निकल जाए ॥4॥



हु शि उ चौ श्री जग की ही

तर्ज: होनी को अनहोनी कर दे.....

हु शि उ चौ श्री जग की ही, गुरुवर एक निशानी-2,
श्री जवाहर पूज्य गणेशी, नाना गुरुवर ज्ञानी ॥टेर॥

नाथ, करते तेरा साथ, साथ छोडे कैसे-2,
सयम पथ विकसाना है, बाधा मे मुस्कराना है,
सयम पुष्प खिलाना है-2, तेरे ही लक्ष्यो पर कदम बढाना है,
ज्ञान साधना करी कठिन, फिर बने हो आतमज्ञानी ॥1॥

छूत जग का बना भूत, भूत पतितो को किये पूत,
गुमराही पथिक जन को धर्मपाल बनाये है,
नानेश ने अपनाये है-2,
भेदभाव की भ्राति को समता से हटानी है,
संस्कार दिये है जैन धर्म के ''वीर'' की कही कहानी ॥2॥



नई उमंगें, नई तरंगे

तर्ज- दिल दीवाना

नई उमगे, नई तरंगे, शासन मे, उठ रही है देखो, कैसी अन्तर मे।
आस्था रहेगी अखड हमारी गुरुवर, मे उठ रही ॥टेर॥

समकित का तो अर्थ यही है, आत्मस्वरूप समझना,
मस्तक रखकर गुरु चरणो मे, अपना सब-कुछ तजना,
खिलते रहे बस कमल-से संघ सरवर मे ॥1॥

गण गणी के आदेशों पे, कदम हमारे बढ़ेंगे,
स्वच्छंदता को तज के, इंगित इशारों पे चलेंगे,
संकेतों से चलते सैनिक सेना में ॥2॥
गुरु दक्षिणा का अर्थ है केवल, अपना सब-कुछ छोडो,
सती 'इन्द्र' कहे नानेश-राम की, भक्ति में मन जोडो,
जा बैठोगे एक दिन मुक्ति महल में ॥3॥

❋❋❋

गुरु गुणगान

खम्मा खम्मा ओ मोड़ीलाल जी रा कंवरां,
थांने तो ध्यावे सारी मारवाड ओ,
सारो मेवाड ओ, सारो थली प्रान्त ओ, मो. ॥1॥
शासन सितारे गुरुवर बालब्रह्मचारी ओ,
धर्म की ज्योति जगाने जग मे योगी बने तुम भारी ओ,
प्रगटे कलयुग अवतारी ओ समता धारी ओ, मो. ॥2॥
मेवाड देश रा चमकाया हीरा, चहुॅ-दिशा ज्योति सवाई ओ,
भक्तों के प्रतिपाल गुरुवर पावन इनकी वाणी ओ,
पावन गौरवधारी ओ जग जारी ओ, मो ॥3॥

❋❋❋

आलोकित कर जीवन

तर्ज : बाबासा री लाडली

आलोकित कर जीवन दादा, कठे पंधारया रे,
कठे पधार्‌या नाम सुमरता नयना भर आया रे ॥टेर॥

दिव्य तपोधनी श्री गुरु सु युवाचार्य पद पाया रे,
जद सु ही शासन सेवा मे, अनुपम ध्यान लगाया रे,
निर्भयता सु अन्तर शत्रु दूर भगाया रे ।।1।।

सुणता दु खिया री बात्या जद, माखन जिस्या पाया रे,
पिग वज्रसम कठोर बण थे, महाव्रता ने पाल्यो रे,
आवती शिथिलाई कचवर, दूर निवार्‍या रे ।।2।।

महावीर का शुभ सदेशा, प्रान्तथली मे सुणाया रे,
भूल्योडा पथिका ने गुरुवर, अहिसा रे पथलगाया रे,
आवण वाला परिषहां सु कदियन घबराया रे ।।3।।

अमृत् सम मीठी वाणी सुं भव्या ने प्रतिबोध्या रे,
साधु श्रावक रा नियमा ने, खोल-खोल कर समझाया रे,
विमल कमल सम रह दुनियां सु, स्वर्ग सिधाया रे ।।4।।

आठ सम्पदा धारी जवाहर, गुण मै थारा गाया रे,
शक्ति नही भक्ति मे रमिया, भ्रमरा बण-बण आया रे,
'इन्द्र' कहे नाना सुं समता रा फुलडा पाया रे ।।5।।



नाना गुरु का जन्म दिवस

तर्ज : चौदहवी का चांद.....

नाना गुरु का जन्म दिवस आज है-2,
आज मनाए आओ सदियां मनाएं ।।टेर ।।
जब तक गगन मे, चन्द्र सूर्य का वास है,
तब तक गुरु का मेरे दिल मे अवास है,

समता की सरगम सुख में भी गाये दुःख मे भी गाये,
गाये गाये गाये, गाते ही जाये ॥1॥
गुरु कैसे थे ज्ञानी, ध्यानी न समझ पाए,
इसीलिए देखो ठोकरें दर-दर की खाये,
समीक्षण ध्यान गुरु का शांति का सागर-2,
आज भी है और सदा ही रहेगा ॥2॥
नजरों में गुरु की जो एक बार बस जाता,
रिद्धि सिद्धि का पुंज इक दिन पा जाता,
साक्षात् गुरु राम जग में प्रख्यात है-2,
आज भी है और हर दम रहेगा ॥3॥
शासन तो शासन है शरण इसकी आ जाओ,
नकली तो नकली है, नकली में न फंस जाओ,
'इन्द्र' कहे नकली में गोते न खाओ-2,
खाओगे तब तो खाते ही जाओगे ॥4॥



नानेश दीक्षा जयंति

तर्ज : उड़े जब-जब जुल्फें तेरी

जयं जयं जय गा, गा गा जयं जयं जयगा,
जन मन में बजे शहनाई कि दीक्षा जयंति आई-2, गुरुवर की।
अमर रहे गुरु नाम, नाना अमर रहे गुरु नाम ॥टेर॥
हो ऽऽ गुरु कपासन शहर में आये,
ओ जी हो ऽऽ कि करेमि भंते पचक्खाए गुरुवर जी,
वीर शासन चमका-2, हुक्म-शासन चमका ॥1॥

हो ऽऽ श्रुत चारित्र मे रम जाये,
ओ जी हो ऽऽऽ कि गुरु सेवा मन भाए गुरुवर जी,
विनय विवेक उरला ऽऽ-2 ॥2॥
हो ऽऽ गुरु देश विदेश मे छाए,
ओ जी हो ऽऽ कि समता सिखलाए गुरुवर जी,
गुरु-चरण को ध्या-2 ध्या-2 ॥3॥
हो ऽऽ गुरु श्रद्धा जग मे फैलाये,
ओ जी हो ऽऽ कि राम राज्य चमकाए गुरुवर जी,
''इन्द्र'' कहे आ जा, आजा गुरु शरण में आ-2 आ-2 ॥4॥



पंखीडा ओ पंखीड़ा

तर्ज– पंखीड़ा ओ पंखीड़ा

पंखीडा ओ पंखीडा, पखीडा ओ पखीडा
पखीडा तू उड ने जाईजे, देवी घर रे (2)
देवीजी ने जाइने म्हारा, मन री कइजे रे
पखीडा ओ पखीडा . . . ॥घृ॥
ओ शासन माता थे वेगा आइजो रे (2)
चेली ठायी है तपस्या, जल्दी आइजो रे
हो सत दिजो, बल दिजो, साथ दिजो रे (2) .
ओ तपसन ग्यारह करया ने आगे बढ गया रे (2)
आगे बढता (2) ही भाव चढ गया रे
हो भाव देखो, तप देखो तेज देखो रे (2)

हो तपसन बाईने ठायी, तपस्या मोटी (2)
धन्यवाद देवे हैं थाने, संघ सभी (2)
हो रसना त्यागी, बन गया तपसी, तपसी बहना रे (2) ..
ओ समता मंडल पूछे साता आपरी (2)
थांनी तपस्या हुवे, सुख शांति भाव री (2)
हो गुरुवर सा, पच्चक्खाण देवे आशीर्वाद सुँ (2) .....



तप रा गीत

तर्ज– एक बार आवोजी जवाईजी

एक बार आओ, तप रा गीत आपां गावां।
कर्मा रो मैल सारो धो पावां, तप रा गीत ... ॥
तप री नौका स्यूं भव जल तर ज्यावां ॥स्थायी॥
जनम-जनम रा कष्ट काटै, तप संयम री साधना,
काया कंचन - सी हो ज्यावै, मिटज्या मन री वासना।
आओ तप की गंगा मे हो .. न्हाकर सुख पावा ॥1॥

खाणै में विवेक राख्यां, रोग सारा मिट ज्यावै,
जीभडी रो स्वाद छोड्यां, शेष संयम सध पावै।
तपसी सन्तां रा आपा हो...गुण गावां ॥2॥

नानेश-गण में हुया तपस्वी, एक एक स्यूं जबरा हो,
हो ज्यावो तैयार सारा, कसकर काठी कमरां हो।
बरसै है रिमझिम सावण हो... .आपां हरसावां.. ॥3॥

एक वास करणे वालो भी, कर्म खपावै है भारी,
मास खमण कर कर लाखा ही, अपणी आत्मा नै तारी।
राम रै शासन मे हो   सब मौज मनावा ॥4॥



तप स्यूं आत्मा में भारी बल आवै

तर्ज– स्वामी भीखण जी रो

तप स्यू आत्मा मे, भारी बल आवै,
कचरो करमा रो पल मे, जल ज्यावै,
कचन वरणी होवे काया,
रोग-दोष खनै आता ही, घबरावै ॥स्थायी॥
कोरी बातां करणी सोरी,
मन री तृष्णा तजनी दोरी,
उर मे ऊदरा कूदै, जद धीरज ढह ज्यावै।
तप स्यूं ॥1॥
इन्द्रिया चचल नाच नचावै,
बडा-बडा रोब जमावै,
विरला हिम्मती, मिनख ही संभल पावै॥
तप स्यू ॥2॥
मुश्किल है वश करणो मन ने,
चाहीजै दिनभर ई तन ने,
भाणो देखतां ही, लार टपक ज्यावै॥
तप स्यू ॥3॥

हो तपसन बाईने ठायी, तपस्या मोटी (2)
धन्यवाद देवे है थाने, संघ सभी (2)
हो रसना त्यागी, बन गया तपसी, तपसी बहना रे (2)
ओ समता मंडल पूछे साता आपरी (2)
थांनी तपस्या हुवे, सुख शांति भाव री (2)
हो गुरुवर सा, पच्चक्खाण देवे आशीर्वाद सुँ (2) .....



तप रा गीत

तर्ज– एक बार आवोजी जवाईजी

एक बार आओ, तप रा गीत आपां गावां।
कर्मां रो मैल सारो धो पावां, तप रा गीत ... ॥
तप री नौका स्यूं भव जल तर ज्यावां ॥स्थायी॥
जनम-जनम रा कष्ट काटै, तप संयम री साधना,
काया कंचन - सी हो ज्यावै, मिटज्या मन री वासना।
आओ तप की गंगा में हो .. न्हाकर सुख पावां ॥1॥

खाणै में विवेक राख्यां, रोग सारा मिट ज्यावै,
जीभडी रो स्वाद छोड्यां, शेष संयम सध पावैं।
तपसी सन्तां रा आपा हो ..गुण गावां ॥2॥

नानेश-गण में हुया तपस्वी, एक एक स्यूं जबरा हो,
हो ज्यावो तैयार सारा, कसकर काठी कमरां हो।
बरसै है रिमझिम सावण हो.....आपां हररावां... ॥3॥

एक वास करणे वालो भी, कर्म खपावै है भारी,
मास खमण कर कर लाखा ही, अपणी आत्मा नै तारी।
राम रै शासन मे हो. . .सब मौज मनावा ॥4 ॥



तप स्यूं आत्मा में भारी बल आवै

तर्ज– स्वामी भीखण जी रो

तप स्यू आत्मा मे, भारी बल आवै,
कचरो करमा रो पल मे, जल ज्यावै,
कंचन वरणी होवे काया,
रोग-दोष खनै आता ही, घबरावै ॥स्थायी ॥
कोरी बातां करणी सोरी,
मन री तृष्णा तजनी दोरी,
उर में ऊंदरा कूदै, जद धीरज ढह ज्यावै।
तप स्यू . ॥1 ॥
इन्द्रिया चचल नाच नचावै,
बडा-बडा रोब जमावै,
विरला हिम्मती, मिनख ही सभल पावै ॥
तप स्यूं ॥2 ॥
मुश्किल है वश करणो मन ने,
चाहीजै दिनभर ई तन ने,
भाणो देखता ही, लार टपक ज्यावै ॥
तप स्यू ॥3 ॥

प्रकट हुवै केई लब्ध्यां मोटी,
पण पेला हुवै कडी कसौटी,
खरो उतरै, वो सोनो कहलावै। तप स्यूं... ॥4॥
मोक्ष महल रो चोथो पथ है,
भव-भव पार उतारण रथ है,
'मधुकर' तप रा आगम भी गुण गावै। तप स्यूं... ॥5॥



तपस्या रो रंग

तर्ज– ओ म्हारां गुरुदेव

ओ तपस्या रो रंग,
तप रो त्यौहार मनावोजी ! नस-नस में जोश जगावोजी।
ओ तपस्या रो रंग॥1॥
जो तप री ज्योत जलावै, वो अजर-अमर बण ज्यावे,
थे समता स्रोत बहावो जी।
ओ तपस्या रो रंग॥2॥
जो लेवै तप रो शरणो, बह ज्यावै अमृत झरणो,
निज घर मे मौज उडावोजी।
ओ तपस्या रो रंग॥3॥
सुरपति आ शीश झुकावै, नरपति निज भाग सरावै,
माटी रो मोल चुकावो जी।
ओ तपस्या रो रंग॥4॥

तपस्या री आ जोडी, करमा री कारा तोडी,
गण गौरव खूब बढावो जी।
ओ तपस्या रो रंग॥

तप आत्म शांति रो पथ है, शिवपुर जावण रो रथ है,
तपसी बण नाम कमावो जी।
ओ तपस्या रो रंग॥



तपो-गीत

(तर्ज : स्वामी भीखणजी रो नाम..)

महावीर रे शासण री, महिमा महकावा।
राम गुरु रे संघ री, गुण गाथा गावा॥
आओ तपस्या री गंगा मे,
सयम साबुन स्यूं आ आतमा री, चादर धोवा॥
तप की गरमी तेज बढावै,
तन मन की सब रोग मिटावै।
जैन शासन रा सब आओ, मिलजुल गीत गावा॥ 1॥

बिना तपस्या त्याग अधूरो,
तप स्यूं टलज्या सकट दूरो।
देव, दानव, राक्षस तप स्यू, सारा साध पावा॥2॥
मत्र सिद्धि मे तपस्या जरूरी,
तत्र साधना हो ज्यावै पुरी।
तप है साचो मंगल आवो, मगल बण-ज्यावा॥3॥

तप है अमृत रस रो प्यालो,
शिवनगरी रो खोलै तालो।
फळज्या आशा वांछा मन री सारी, कामनायें ॥4॥

मन नै वश में करणो तपस्या,
नमणो खमणो दमणो तपस्या।
जीणो अल्पाहारी जीवन आपां, सीख जावां ॥5॥



भव जल तरणी निर्मल करणी

(लय- दिल दिवाना)

करो तपस्या, मिटे समस्या, सुनलो रे
भवजल तरणी, निर्मल करणी, करलो रे
ऐसा अवसर, मिले न फिर फिर, संभलो रे॥ स्थायी॥

तन धन यौवन चंचल माया, ज्यो बादल की छाया,
दुनियांदारी झूठी यारी, क्यों मन को भरमाया।
मन समझाना, धर्म खजाना, भर लो रे॥1॥

तप जप करते यौवन बीते, तो हम धन्य बनेंगे,
तन की मन की ममता छूटे, आवागमन मिटेंगे।
ज्ञान ध्यान कर, ये भवसागर, तरलो रे॥2॥

सुख दु ख अपना अपना ही है, मूल बात को समझो,
और सभी जो निमित्त मात्र है, भ्रान्ति में ना उलझो।
'संजय', ज्योति, सद्गुण मोती, चुनलो रे॥3॥

तपस्या की धूम

लय - फिरकीवाली

कोको कोला, तपसण का दिल डोला
गुरु के उपदेश से, तपस्या हो रही धुमधाम से
तपसण कहे मेरे गुरुणीसा बुलाओ
गुरुणी सा आये, पच्चखाण कराये
स्थानक मे हो गया मेला ॥1॥

तपसण कहे मेरे माताजी बुलाओ
तपसण कहे मेरे पिताजी बुलाओ
माताजी आये, पिताजी आये
चुन्दड ओढाये, गीत गवाये
स्थानक मे हो गया मेला ॥2॥



तपस्या की बहार है

तर्ज : बागों में बहार है

तपस्या की बहार है, चेहरे पे निखार है
इनको धन्यवाद है, धन्य है धन्य है धन्य है।
तपस्या मे चेहरा, चम चम चमकता
पापो को अधेरा पल मे है भगता, तपस्या 2
हम तप के गुण गायै, जो कि मुक्ति का द्वार है
जीवन की शृगार है, कर्मो का हार है॥1॥

तप आत्म शक्ति को, अनुपम निशानी
जग मे तिराने की, नैया पुरानी तपस्या 2
तप से पायेंगे, मंजिल मन में ये विश्वास है
पूरा एतबार है, तप से इन्हें प्यार है ॥2॥

वीर प्रभु ने तप को, पावन बताया।
अहिंसा का संदेश जग को, सुनाया वीर 2
तप जो करते है उनका, जीवन महान है।
वन्दन हजार है, कर ले बार-बार है ॥3॥

तपसण ने तप से, जीवन सजाया।
राम गुरु की बगिया को, महकाया, तपसण-2
हम करते है वन्दन उनको, आत्मा से प्यार है
मुक्ति का इन्तजार है, भव से बेडा पार है ॥4॥

तप कर्माग्नि का शीतल, मलहार है।
आत्मा की विजय और कर्मो की हार है तप 2
रेन भी चाहे तप से, जीवन का उद्धार हो।
नैय्या की पतवार हो, यही वरदान हो ॥5॥



ओ रे तपस्वी राज

तर्ज : मेरे अंगने में......

ओ रे तपस्वी राज, तुमको मेरा प्रणाम
करलो कर्म पतले हॉ-2 यही तो बडा काम है ॥ टेर ॥

मेरे प्रभु आदिनाथ हॉ-2 उनको तो बडा नाम है।
वर्ष भर तप किया हॉ-2 पाये मुक्ति धाम है ।। 1 ।।

घर घर प्रभुवर हॉ-2 गोचरी पधारे।
नही मिली भिक्षा हॉ-2 फिर भी वे निष्काम है ।।2।।

तप को बलिहारी हॉ-2 तपसण जी का बडा नाम है।
करलो तप बहनों हॉ-2 नष्ट होगे कर्म तमाम है ।।3।।

बीकानेर शहर का हॉ-2 बहुत बडा नाम है।
पारणा करवाया हॉ-2 पुण्य का जो काम है ।।4।।

बडे भाग्योदय से हॉ-2 यह शुभ दिन आया।
रात्रि भोजन छोडो हॉ-2 यह भी बडा काम है ।।5 ।।



तप ही महान था

तर्ज : सौ साल पहले मुझे

अनादि से दुनिया में, तप ही महान था
आज भी है और, कल भी रहेगा ।।टेर ।।

तप ऐसी शक्ति है, प्रभा ही प्रभा मुख से निखर जाती है।
यह काम है शूरो का, हिम्मत कायर की हार जाती है ।।
श्रमणो का जीवन तो, तप पे कुरबान था ।। 1।।
मन वश मे हो तप से, सदा ही सदा विषय हार जाता है।
लब्धि हजार तप से, अगर संग क्षमा भाव आता है ।।
मुक्ति को जाने का, तप एक यान था ।।2।।

सब धर्मो में महिमा, कदापि कोई तप बिन धर्म न दूजा।
अज्ञानी भी तप से, दिव्य सुख पावे जग दु ख भूला॥
प्रभू के तो भक्तों का, तपस्या में ध्यान था॥3॥



तपस्या करस्यो के नहीं

तर्ज : बोल राधा बोल संगम.....

बाहर बरसे पानी, स्थानक में बरसे जिनवाणी
बोलो भाया बोलो तपस्या कर स्यो के नही
अरे बोलो बायां बोलो तपस्या.....॥टेर॥

जिनवाणी की बहती गंगा नगर तुम्हारे आई है
गुरुणी सा बीकानेर पधारे, धर्म की गंगा बहाई है
अरे गंगा में स्यूं हीरा मोती, चुगसो के नहीं।
बोलो.......॥1॥

पन्द्रह इक्कीस और पच्चीस, मासखमण का पार नही।
वरसी तप की बडी तपस्या, सबके मन में होड लगी।
धन्य हुवे है तपसण जी वरषी तप पूरा हुआ तो सही।
बोलो.......॥2॥

समकित सावन लहरा के आया, चारों तीरथ का मेला है।
दस मेले के दर्शन करके, जीवन सफल बनाना है।
ा-त्याग से गुरुवर की, झोली भरसो के नहीं।
बोलो.......॥3॥

भक्तजनो के तुम ही सहारे, शरण तुम्हारे आये है।
आशीर्वाद तुम्हारा पाये यही बीकानेर सघ भाये है।
श्री समता महिला मडल का वन्दन स्वीकारो तो सही।
बोलो . . ॥4॥



तपस्या गीत

तर्ज : फूलों सा चेहरा तेरा..

तपस्या से जीवन सजे, तप से ही कल्याण है
तप करने वाले, कर्म खपाले, बन जाते भगवान है।
तप की तलैया, जाऊं वलैया
त्याग के पावन, फूल खिलै
खुशबू है फैली, जिनकी जगत मे,
पाने से मुक्ति का, कूल मिले
करते तप को वन्दन, और अभिनन्दन
दुःखों का सारा, राज टले
मिलती है ज्योति वहॉ, मिलता परम ज्ञान है॥
तप करने वाले .. ॥1॥

तपस्या से जीवन, निर्मल बनता
भावो की शुद्धि, निराबाध है
तपस्या का सावन, जिस कुल मे पलता
वो कुल तो सुखो से, आबाद है

गाये गुण तप के, प्रभु नाम जपके
जीवन में तप का, विकास करेंगे
राम की सौरभ मिले, केशर सी मुस्कान है।।

तप करने वाले. .....॥2॥



छोटी सी उमिरयॉ

(तर्ज : गोरी है कलाइया..)

छोटी सी उमरियॉ, हो लगी त्याग की झडियॉ
अभिनंदन तपसी बहना (2).........
त्याग की महिमा गाते, सभी ज्ञानी जन
त्याग बिना ये, पशु सम जीवन
त्याग हमारा, हमें उज्ज्वल बनाना (2)
मिल जाये मोक्ष नगरियॉ.....

छोटी सी....

तपस्या से आत्मा, निर्मल बनाना
कषायों को भी, साथ में हराना
बने पावन जीवन, आत्म समर्पण (2)
गुरु चरणो में, शत् शत् वंदना.. ..

छोटी सी.. .

त्याग और तप से, आत्म बल बढाना
कायरता को हैं, दूर हमे भगाना

करूँ पाप आलोचन, दोषो का शोधन
एक यही है मनोकामना.

छोटी सी ...



तपस्या नी साची छे रीत

तर्ज: बम्बई से आया मेरा दोस्त

तपस्यानी साची छे रीत,
भावथी धन्यवाद दो .. तपस्यानी ॥टेर॥

तपस्यानो पथ मजानो, मुक्तिना सुखने माणो।
सुखनो छे आ खजानो, आत्मानी शक्तिने पिछाणो।
मानवनु एमा छे हित, तपस्वीने प्रणाम करो ॥1॥

तपस्यानी...

तपस्यामां राखो न खामी, आपशे शिवसुख खानी।
खावानो संयम साधी, तपस्यानी भावना भावी॥
मधुबेनना गाओ तमे गीत, भावथी तपस्या करो ॥2॥

तपस्यानी ..

नवकारनी धून मचाओ, प्रभुना गीतडा गाओ।
समकितनी शहनाई वगाडो, तपस्यानो उत्सव कराओ।
दाननी भावना भाओ, भावथी तपस्या करो ॥3॥

तपस्यानी.





जोबनीयु जोता वही जोश, घडपण आवी जाशे।
मननी मनमां रही जाशे, पाछलथी पस्तावो थाशे।
पाणी पेला पाल बांधील्यो, भावथी तपस्या करो ॥4॥
तपस्यानी...

अवसर नही मले आवो, मानव जन्श्रम मजानो।
तपस्यानो महिमा मोटो, नहीं मले क्यांये जोटो।
तपना गीतो गावो भवजल पार करो ॥5॥ तपस्यानी...



तपस्या करने वाले

तर्जः धन (2) सीता माता तुमको लाखों प्रणाम

तपस्या करने वाले तुमको, लाखों, (क्रोडो) धन्यवाद (2) ॥टेर॥
किस्तम से नफरत को पाया। जग की माया झुठी काया॥
अवसर अनोखा आया-तुमको .... ॥1॥
तप है मंगल साताकारी। तप की महिमा जग में भारी॥
तप है महासुखकारी-तुमको.... ॥2॥
प्रतिभा पुष्प ने मन को मनाया। तप करने का भाव जगाया॥
तप-जप रंग लगाया-तुमको ॥3॥
मन उपवन में फूल खिलता है। तप करने से सुख मिलता है।
'समता मंडल' गुण गावे-तुमको . .. ॥4॥
महिला मंडल महिमा गावे। समता संघ तपस्वी का सत्कार करावे॥
'खुशियॉं' भाव-भाव भर जावे-तुमको ... ॥5॥

तपस्वी बहन ने

(तर्ज : अपने पिया की मैं तो.......)

खम्मा खम्मा खम्मां, म्हारा तपस्वी बहन ने
होवे तपस्या थांने सुखदायी हो,
हो-हो आनन्ददायी हो..... ॥1॥

तप है आतम शक्ति, इणने कायर नर नही आदरे
रसना इन्द्री वश में करनी, दुर्लभ है संसार मे
रसना है जीत सब जीत लिया है
हो-हो आनन्ददायी हो..... ॥2॥

तपसू तेज बढे आतम रो, दृढता जीवन में आवे
शुभ सकल्प करे जो मानव, वो भी पूरण हो जावे
तन मन रो रोग सब मिट जावे जी,
हॉ-हॉ आनंद पावेजी..... ॥3॥

जिन मारग पर बढते जो ये, तप का गहना पहना है।
कर्मो पर भी 'विजय' करो बस, यही हमारा कहना है।
मुक्ति रो मारग सांचो पाय लीजोजी,
हॉ-हॉ आनंद पावेजी.. . ॥4॥

❋❋❋

तपस्या री छाई रे बहार

तर्ज : होली में उडे रे गुलाल....

तपस्या री छाई रे बहार, बीकानेर नगरी मे,
लाग्यो लाग्यो रे तप रो ठाठ बीकानेर नगरी मे,

: अन्तरा :

1. देवी देवता, सब मिल आवे,
तपसी रे चरणा में, शीश झुकावे,
तपस्या री महिमा अपार बीकानेर नगरी .... .

2 तपसी ने सब, देवा बधाई,
अठाई तप री, अलख जगाई,
खुशियों रो नहीं पार, बीकानेर नगरी......

3. घरवाला देखो, लाड लडावे,
अनुमोदन कर, पुण्य कमावे,
हर्षित सारा परिवार, बीकानेर नगरी......

4. तप कर्मो रो, मेल उडावे,
तप तो गजब, इतिहास रचावे,
कर्मा ने देवे ललकार, बीकानेर नगरी. ..

5. समता मण्डल गाय सुनावे,
तपसी की सब, साता पुछावे,
तपसी की बोलो जय जयकार, बीकानेर नगरी......

❖❖❖

तप त्याग की सौरभ

तर्ज : ना स्वर है ना सरगम....

स्थाई :

खुशियों की वीणा से, झकृत यह नजारा है,
तप त्याग की सौरभ से, सुरभित जग सारा है।

अन्तरा :

1. तप का है काम कडा, विरले ही कर पाये,
हिम्मत की कीमत है, अन्तर मन जाग जाये,
जन-जन के तन मन में, बहती तप धारा है।
खुशियो की...

2. बिन साबुन आत्मा का, सब दाग मिटाता है,
मुक्ति पथ पर आगे, कदमो को बढाता है,
तप तपता है तपसी, तप तारण हारा है।
खुशियो की ...

3 विषयो के भोगो मे, तप का यह दीप जला,
जीवन के मधुवन मे, तप का यह फूल खिला,
समता मण्डल कहता, तप भव जल किनारा है।
खुशियो की



तप है मंगलकारी जी

लय : कल्तपरु न बीज फल्या

स्थाई :

तपसी रे घर बाग खिल्यो, अन्तर मनरो सपन फल्यो
तपसी ने अब दर्शन देवण आवो म्हारा वीरजी
थे हो अन्तरयामी जी, तप है मंगलकारी जी

: अन्तरा :

पाप-ताप सब नाश करे, जीवन मे उल्लास भरे
तपसी रो विश्वास जमावण, आवो म्हारा वीरजी ॥1॥

तन री ममता त्यागे तपसी, मन में समता राखे तपसी
तपसी जी रा भाव बढावण, आवो म्हारा वीरजी ॥2॥

होले-होले चाले तपसी, मीठो-मीठो बोले तपसी
तपरी उजली ज्योत जलावण, आवो म्हारा वीरजी ॥3॥

घर-घर मे लागी रंग रलिया, गूंज उठी गीता स्यूं गलियां
तपसी ने अमृत रस पावण, आवो म्हारा वीरजी ॥4॥

तपस्या री फूलवारी लागी, तपसी री पुनवानी जागी
अरज करत है समता मण्डल, आवो म्हारा वीरजी ॥5॥



तपस्या हिम्मत रे आधार

म्हारे आंगणीये में तुलसी
तपस्या हिम्मत रे आधार सारी दुनिया कैवे
तप मे भारी चमत्कार सारी दुनिया कैवे
हिम्मत री है किम्मत भारी, हिम्मत री है महिमा न्यारी
तपस्या हिम्मत रे आधार, सारी दुनिया कैवे,
वीर पुरुष जो, तपस्या करसी,
जनम-जनम रा पातक झरसी,
थारी तपस्या रो व्यापार, सारी. . .

तप करने से कुल चमकेला,
तप रे आगे देव झुकेला,
तप मे शाति है अपार, सारी.
तप दीपक री ज्योति निराली,
अतर तम ने हरने वाली,
तपस्या इच्छित फल दातार, सारी. ..
तप गगा मे सिगला नहावे,
तपस्वीजी रा कोड कराओ,
अब थे म्हाने दो वरदान, सारी. .



मेलो तपस्या रो

तर्ज : धरती धोरां री...

मेलो तपस्या रो हो-हो मेलो तपस्या रो
ओ तो तपसण रे मन भावे, देखण लोग सिगला आवे
साथे साथियो ने भी लावे, मेलो . ॥टेर॥

भूख प्यास ने बिलकुल ने भूले हो .
ऐ तो समता रस मे झूले, तपस्या देख-देख कर फूले, मेलो.
इण सू मिले प्रेरणा भारी-हो
फैली तप री महिमा सारी, कैसी तप री खिली फुलवारी
तपस्वी थारी कोमल काया हो
धन्य-धन्य है बायॉ भायॉ, तुमने मनने जबर तपायो, मेलो

म्हे तो बार-बार गुण गांवा हो..
गाकर कर्मो ने खपावॉ, म्हारा मन रो कोड पुरावॉ मेलो..॥



तपस्या में घड़ियॉ

(इन्हीं लोगों ने ले लीना)

तपस्या में घडियॉ (3), बिताना, जीवन है थोडा (2) ॥टेर॥

तपस्या से पाये, महावीर प्रभु केवल (2),
हमको भी कर्म खपाना ॥1॥ जीवन है......

छमास बैला तप कर अर्जुनमाली (2)
क्षमा से मोक्ष पधारे ॥2॥ जीवन है......

आंयबिल तप किया धन्ना मुनि ने (2)
वीर प्रभु ने बखाण्या ॥3॥ जीवन है......

तपस्या से श्रीपाल मैनासुंदर ने (2)
सातसो कोढी ठीक कीना ॥4॥ जीवन है . . .

तपस्या से कई रोग नसावे (2)
देवता भी आई पाय लागे ॥5॥ जीवन है......

तपस्या के बारा भेद बताये (2)
छे आभ्यंतर छह बाह्य ॥6॥ जीवन है....

अणसण 1 उणोदरी 2 भिक्षाचर्या 3 (2)
रस परित्याग 4 कायक्लेश 5 ॥7॥ जीवन है. ....

प्रति सलीनता 6, विनय 7 वैयावच्च 8 (2)
प्रायश्चित 9 से शुद्ध होना ॥8॥ जीवन है....
स्वाध्याय 10 करना, ध्यान 11 लगाना (2)
कायोत्सर्ग 12 मे लीन होना ॥9॥ जीवन है... .
पुष्पाबाई ने तप है कीना (2)
पन्द्ररा ग्यारा का दीप जलाया ॥10॥ जीवन है......
'रोशन' कृपा से जप तप करना (2)
'चन्दा' मुक्ति पाना ॥11॥ जीवन है......



आनंद मंगल कर दी ना

(इन्हीं लोगों ने ले लीना)

आनद मंगल (3) कर दी ना, तपस्वी के तपने (2) ॥टेर॥
जो नही मानो महावीर से पूछो (2)
साढे बारा वर्ष तप कीना ॥1॥ तपस्वी के तपनें
जो नही मानो, धन्ना मुनि से पूछो (2),
आयंबिल से मुक्ति पा लीना ॥2॥ तपस्वी के तपने
जो नही मानो, अर्जुनमाली से पूछो (2),
छह महीने मे मोक्ष पा लीना ॥3॥ तपस्वी के तपने
मैनासुन्दर श्रीपाल से पूछो (2)
आयबिल से कोढ दूर कीना ॥4॥ तपस्वी के तपने

जो नहीं मानो, चक्रवर्तियों से पूछो,
तेले कर छह खण्ड जीते ॥5॥ तपस्वी के तपनें

जो नही मानो, सती चंदना से पूछो,
महावीर प्रभु पारणे पधारे ॥6॥ तपस्वी के तपने

जो नहीं मानो, शासन देवो से पूछो,
तपस्वी को साज है दीना ॥7॥ तपस्वी के तपनें

जो नही मानो, बीकानेर संघ से पूछो,
भाई-बहिनों ने तप कीना ॥8॥ तपस्वी के तपनें

जो नही मानो, तपस्वी बेन को पूछो,
समता संघ ने बहुमान कीना ॥9॥ तपस्वी के तपनें



छाई छाई तपस्या री बहार

तर्ज : होलीड़ा में उडे रे गुलाल...

छाई छाई तपस्या री बहार, ज्योत जगी घर घर में
तप स्यूं हो जावे बेडो पार, ज्योत जगी घर घर में
ज्योति जगी देखो ज्योति जगी है ॥

1. चौमासे रो, शुभ घडी आई,
बाजी है तपस्या री शहनाई
दिल मे है खुशियां अपार ज्योत जगी घर घर मे